यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 50, सं. 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2025
VOL. 50, No.1, Mumbai, January-March, 2025

यूनियन धारा

50

स्वर्णिम वर्ष

गृह पत्रिका • House Magazine of

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

गृह पत्रिका • House Magazine of
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक
Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन धारा Union Dhara

प्रकाशन तिथि- 14.05.2025

जिल्द. 50, सं. 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2025
VOL. 50, No.1, Mumbai, January-March, 2025

मुख्य संरक्षक / Chief Patron

ए. मणिमेखलै,
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

A. Manimekhalai
Managing Director & CEO

संरक्षक / Patrons

नितेश रंजन
कार्यपालक निदेशक
Nitesh Ranjan
Executive Director

रामसुब्रमणियन एस.
कार्यपालक निदेशक
Ramsubramanian S.
Executive Director

संजय रुद्र
कार्यपालक निदेशक
Sanjay Rudra
Executive Director

पंकज द्विवेदी
कार्यपालक निदेशक
Pankaj Dwivedi
Executive Director

मुख्य संपादक / Chief Editor

चन्द्र मोहन मिनोचा
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं)
Chander Mohan Minocha
Chief General Manager (HR)

संपादकीय सलाहकार / Editorial Advisors

ए. के. विनोद
मुख्य महाप्रबंधक
A.K. Vinod
Chief General Manager

अरुण कुमार
मुख्य महाप्रबंधक
Arun Kumar
Chief General Manager

विट्ठल बनशंकरी
महाप्रबंधक
Vithal Banashankari
General Manager

संपादकीय सलाहकार / Editorial Advisors

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक
Ambarish Kumar Singh
Dy. General Manager

विवेकानंद
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)
Vivekanand
Asst. General Manager (OL)

संपादक / Editor

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)
Gayathri Ravi Kiran
Chief Manager (OL)

संपादकीय सहयोग / Editorial Support

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
Jagriti Upadhyay
Asst. Manager (OL)

मोहित सिंह ठाकुर
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
Mohit Singh Thakur
Asst. Manager (OL)

परिदृश्य
PERSPECTIVE

प्रिय यूनियनाइट्स,

"यूनियन धारा" के इस अंक के माध्यम से आपसे जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है. पिछली तिमाही की उपलब्धियों पर विचार करते हुए, मुझे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की सुदृढ़ता, समर्पण और साझे उद्देश्य पर गर्व और अभिमान हो रहा है.

परिवर्तनशील और अनिश्चित समष्टि आर्थिक परिवेश के बावजूद, बैंक ने सामर्थ्य, स्थिरता और संवहनीय विकास जारी रखा है. वित्तीय वर्ष 2025 के लिए ₹17,987 करोड़ का निवल लाभ, जो अब तक का सर्वाधिक है, और आस्ति गुणवत्ता, पूंजी पर्याप्तता और प्रतिफल अनुपात जैसे प्रमुख मापदंडों में बढ़ोत्तरी के साथ, हमारा कार्य-निष्पादन कार्यनीतिक अनुशासन और परिचालन उत्कृष्टता को दर्शाता है.

संवहनीय और समावेशी विकास के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, वित्तीय वर्ष 2026 के लिए हमने "राइज़" को अपनी कार्यनीतिक थीम के रूप में अपनाया है. "राइज़" पहल हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता को समाहित करती है:

- खुदरा जमा आधार – खुदरा, स्थिर जमा के माध्यम से हमारी नींव को मजबूत करना
- आय का प्रवाह- ब्याज और गैर-ब्याज आय में लगातार वृद्धि को बढ़ावा देना
- दबावग्रस्त आस्तियां - पोर्टफोलियो में दबाव को सक्रिय रूप से प्रबंधित और कम करना
- सहभागिता - ग्राहकों और कर्मचारियों के संबंधों को गहरा करना

कार्यनीतिक फ़ोकस, वर्ष भर हमारे मार्गदर्शक ढांचे के रूप में काम करेगा, और हमारे परिचालन प्रयासों को दीर्घकालिक उद्देश्यों और संस्थागत मूल्यों के साथ संरेखित करने में सहायक होगा.

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि 1 मई, 2025 से यूनियन बैंक को, नए समामेलित आंध्र प्रदेश ग्रामीण बैंक को प्रायोजित करने का दायित्व सौंपा गया है - एक ऐसा दायित्व जो ग्रामीण सशक्तिकरण और वित्तीय समावेशन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती है.

आगे बढ़ने के क्रम में हम बदलते परिवेश को तेज़ी से अपना रहे हैं. केंद्रीकरण, वर्टिकलाइज़ेशन और डिजिटल परिवर्तन पर केंद्रित हमारी कार्यनीति सभी हितधारकों को मूल्य प्रदान करने में हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी.

मैं आपके अटूट विश्वास और योगदान के लिए आप सभी का धन्यवाद करती हूँ. आइए हम नई ऊर्जा, आत्मविश्वास और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ें.

शुभकामनाओं सहित

ए. मणिमेखलै
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

Dear Unionites,

It gives me immense pleasure to connect with you through this edition of "Union Dhara". As we reflect on the journey of the past quarter, I am filled with a deep sense of pride and appreciation for the resilience, dedication and shared purpose that define Union Bank of India.

Despite a dynamic and often uncertain macroeconomic environment, Bank has continued to demonstrate strength, stability, and sustainable growth. With a net profit of ₹17,987 crore for FY25, the highest ever in our history and improvements across key parameters such as asset quality, capital adequacy, and return ratios, our performance reflects the power of strategic discipline and operational excellence.

In keeping with our vision to drive sustainable and inclusive growth, we have introduced our strategic theme for the year FY26 – "RISE". The "RISE" initiative encapsulates our collective commitment to:

- Retail Deposit Base – Strengthening our foundation through granular, stable deposits
- Income Streams – Driving consistent growth across interest and non-interest income
- Stress Assets – Proactively managing and reducing stress in the portfolio
- Engagement – Deepening relationships with both customers and employees

This strategic focus will serve as our guiding framework throughout the year, helping us align our operational efforts with long-term objectives and institutional values.

I am also pleased to share that Union Bank has been entrusted with sponsoring the newly amalgamated Andhra Pradesh Grameena Bank, effective May 1, 2025—a responsibility that reinforces our commitment to rural empowerment and financial inclusion.

As we move ahead, we remain agile in adapting to the evolving landscape. Our strategy—centered on Centralisation, Verticalization, and Digital Transformation—will continue to guide us in delivering value across stakeholders.

I thank each one of you for your unwavering trust and contribution. Let us move forward with renewed energy, confidence, and commitment to excellence.

with best wishes,

A. Manimekhalai
Managing Director & CEO

अवलोकन
OVERVIEW

प्रिय यूनियनाइट्स,

"यूनियन धारा" के स्वर्ण जयंती वर्ष के प्रथम अंक के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए मुझे खुशी हो रही है. इस अवसर पर बैंक की द्विभाषी गृह पत्रिका के प्रकाशन के 50 वर्षों की सुदीर्घ यात्रा के दौरान अपना योगदान देनेवाले लेखकों और संपादकीय मंडल के सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूँ.

इस वित्तीय वर्ष की शुरुआत करते हुए, बैंक ने ₹25 ट्रिलियन कारोबार और ₹35,000 करोड़ परिचालन लाभ के महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं .

इस वर्ष की थीम, "राइज़" हमारे उद्देश्यों के सार को सटीक रूप से दर्शाती है - खुदरा कारोबार वृद्धि, आय सृजन, स्ट्रेस प्रबंधन और सहभागिता. इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, हमें एक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए. हमें अपने जमा आधार को बढ़ाने, अपने विवेकाधिकार के तहत ऋण संवितरण और आस्ति गुणवत्ता में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए. इसके अतिरिक्त, हमें शुल्क-आधारित सेवाओं और उत्पादों के माध्यम से नए राजस्व स्रोत विकसित करने की आवश्यकता है.

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) भारत में उद्यमशीलता और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में सहायक रही है. मैं हमारी शाखाओं से आग्रह करता हूँ कि इस योजना के तहत मुद्रा ऋण संवितरण में बैंक की पिछली सफलता को आगे बढ़ाते हुए व्यापक ऋण सहायता प्रदान करें.

ग्राहक सेवा उत्कृष्टता हमारे बैंक का प्रमुख ध्येय है. मैं फ्रंटलाइन स्टाफ को सलाह देता हूँ कि ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरूप स्मार्ट समाधान प्रदान करने के महत्व को समझें और बैंक के उत्पादों का बेहतर विपणन करें. साथ ही ग्राहकों से संवाद बढ़ाने हेतु प्रयास करें तथा उनकी शिकायतों का तुरंत समाधान करें. ऐसा करके, हम अपनी विश्वसनीयता बढ़ा सकते हैं और अपने ग्राहकों के साथ स्थायी संबंध बना सकते हैं.

वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में, जब विनियामक अनुपालन, सांविधिक लेखा-परीक्षा और कर्मचारियों के स्थानांतरण आदि कारणों से व्यस्तता बढ़ जाती है, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ये गतिविधियाँ हमारे कारोबार के लिए गतिरोध न बनें. अत:, हमें शुरू से ही अपने कारोबारी लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रगतिशील विकास के लिए प्रयास करना चाहिए.

मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से, हम इस वर्ष को अपने बैंक के लिए उल्लेखनीय बना सकते हैं. एक सफल और लाभप्रद वित्तीय वर्ष-2026 हेतु शुभकामनाएं.

शुभकामनाओं सहित

(नितेश रंजन)
कार्यपालक निदेशक

Dear Unionites,

I am delighted to address you through the first issue of the Golden Jubilee year of "Union Dhara". I congratulate the writers and members of the editorial board, who have contributed to the publication of bank's bilingual house magazine during the past 50 years.

As we embark on this financial year, bank has set ambitious targets of ₹25 trillion in business and ₹35,000 crore in operating profit.

This year's theme, "RISE" aptly captures the essence of our objectives - Retail business growth, Income generation, Stress Management, and Engagement. To achieve these targets, we must adopt a proactive approach. We should focus on growing our deposit base, disbursing loans under our discretionary powers, and improving asset quality. Additionally, we need to develop new revenue streams through fee-based services and products.

Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) has been instrumental in promoting entrepreneurship and financial inclusion in India. I urge our branches to offer extensive credit support under this scheme, building on our bank's past successes in disbursing Mudra loans.

Customer service excellence is a core objective of our bank. I advise our frontline staff to understand the significance of delivering smart solutions that meet our customers' needs and ensure better marketing of bank's products. Simultaneously make efforts for better interaction with them, resolve their complaints promptly. By doing so, we can enhance our reliability and build enduring relationships with our customers.

As we navigate the first quarter of the financial year, which is often riddled with regulatory compliance, statutory audit, and staff transfers, we must ensure that these activities do not hinder our business growth. Hence, we should strive for progressive growth from the outset by focusing on achieving our business targets every day.

I am confident that with our collective efforts, we can make this year remarkable for our bank. Best wishes for a successful and profitable FY-26.

with best wishes,

(Nitesh Ranjan)
Executive Director

अवलोकन
OVERVIEW

प्रिय यूनियनाइट्स,

"यूनियन धारा" के अद्यतन अंक के माध्यम से आपके साथ मेरे विचार साझा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है. मैं उच्चतर ग्रेड में पदोन्नत स्टाफ सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ.

वित्तीय वर्ष 25 में बैंक का कार्यनिष्पादन अच्छा रहा. हमने अंतिम तिमाही में परिश्रम किया और अग्रिम में बढ़ोत्तरी हासिल की. कासा में भी ₹ 30,000 करोड़ तक की वृद्धि देखी गई, जो उद्योग स्तर पर अल्प लागत जमाओं में कमी को देखते हुए प्रशंसनीय है. हमें वर्तमान वित्तीय वर्ष में भी इस गति को बनाए रखना होगा.

हमने इस वर्ष का प्रारंभ एक शुभ पहल के साथ किया है यथा शुभ आरंभ अभियान जिसका लक्ष्य आरडी खातों में प्रथम माह में ₹ 1500 करोड़ और वर्ष के अंत तक ₹ 18000 करोड़ की वृद्धि है. इस अभियान का उद्देश्य जमा संग्रहण, ग्राहक आधार में वृद्धि और बाजार में उपस्थिति बढ़ाना है. यह जमाराशियों में निरंतर और संवहनीय वृद्धि में योगदान करेगा.

कॉर्पोरेट और एमएसएमई क्षेत्रों में भी अच्छी वृद्धि देखी गई है. मैं शाखाओं को सलाह दूंगा कि इन क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दें. बैंक द्वारा कारोबार में वृद्धि दर्ज करने हेतु प्रत्यायोजित शक्तियों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है. मैं शाखा प्रमुखों से आग्रह करता हूँ कि नियमित आधार पर प्रत्यायोजित शक्तियों के तहत ऋण मंजूर कर बैंक की कारोबार वृद्धि में भागीदार बनें.

बैंक ने हमारे शाखा नेटवर्क के संवर्धन हेतु 4 नए अंचल कार्यालय, 6 नए क्षेत्रीय कार्यालय, 2 क्षेत्रों के पुनर्सरेखन तथा क्षेत्रीय कार्यालयों और शाखाओं के पुनर्गठन कर संरचनात्मक पुनर्संरचना की है. इस बदलाव से प्रशासनिक पर्यवेक्षण और परिचालन सुगमता के साथ-साथ बेहतर निगरानी, अनुपालन और बैंक के समग्र लक्ष्यों के अनुरूप कार्य में सुधार संभव हो पाएगा.

चुनौतीपूर्ण वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों, अनुकूल मुद्रास्फीति परिदृश्य और सामान्य वृद्धि के रहते भारतीय रिज़र्व बैंक की नीति वृद्धि हेतु आलंबन प्रदान करता है. मुझे विश्वास है कि यूनियनाइट्स वर्तमान वित्तीय वर्ष हेतु बैंक के विज़न और लक्ष्य के अनुरूप कार्य करेंगे और हम ₹ 25 ट्रिलियन कारोबार और ₹ 35,000 करोड़ परिचालनिक लाभ के दोहरे लक्ष्य को पार करेंगे.

शुभकामनाओं सहित

(रामसुब्रमणियन एस.)
कार्यपालक निदेशक

Dear Unionites,

I am delighted to share my thoughts with you through this latest issue of "Union Dhara". I extend heartfelt congratulations to the staff members who have achieved elevation to higher grade.

The Banks performance for the FY-25 was good. We have worked hard in the last quarter and seen good growth in advances. CASA has also increased to the tune of ₹ 30,000 crores, which is commendable given the overall industry scenario of reduction in low cost deposits. We must continue this momentum in the current financial year also.

We have started this year on an auspicious note with शुभ आरंभ a campaign for growth in RD accounts aimed at ₹ 1500 Crs in the first month and total ₹ 18000 crs by the year end. This campaign aims to mobilize deposits, increase customer base and enhance our market presence. This will contribute to consistent and sustainable deposit growth.

Corporate and MSME sector have also shown good growth. I would advise the branches to focus more on these sectors. Usage of delegated powers is imperative for bank to show growth in advances. I urge branch heads to show more participation in the business growth of the bank by exercising their delegated powers on a regular basis.

Bank has undertaken an organizational restructuring exercise by opening 4 new Zonal Offices, 6 new Regional offices, remapping of 2 regions and reorganization of ROs and branches for optimizing our branch network. These changes will enable better monitoring, compliance and improved alignment with Bank's overall goals while strengthening administrative oversight and streamlining operations.

In challenging global economic conditions, benign inflation outlook and moderate growth RBI policy focus remains on supporting growth. I am sure that unionites shall work in tandem with the Bank's vision and goals for the current year, we shall surpass the twin aspirations of ₹ 25 trillion business and ₹ 35000 crores operational profit.

with best wishes,

(Ramsubramanian S.)
Executive Director

अवलोकन
OVERVIEW

प्रिय यूनियनाइट्स,

सर्वप्रथम, "यूनियन धारा" पत्रिका के 50वें वर्ष में प्रवेश करने पर सभी सुधी पाठकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं संपादक मंडल को ढेरों शुभकामनाएं. आशा है आगे भी यह पत्रिका सभी पाठकों का ज्ञानवर्धन करती रहेगी और स्टाफ सदस्यों की रचनाशीलता को निखारने में सदैव योगदान करती रहेगी.

वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु हाल ही में संपन्न पदोन्नति प्रक्रिया में सफल सभी यूनियनाइट्स को हार्दिक बधाई एवं उनके नए असाइनमेंट हेतु शुभकामनाएं. स्थानांतरण भी बैंकर के जीवन का एक अभिन्न अंग है. आप जिस नई जगह पर जा रहे हैं वहाँ पर बैंक के कारोबार विकास में लक्ष्य के अनुरूप बढ़ोत्तरी के साथ-साथ बैंक की छवि निर्माण में भी अपना सर्वोत्तम योगदान करें.

यूनियनाइट्स अपना वार्षिक अप्रेज़ल समय से अवश्य पूरा कर लें. ज्ञान में वृद्धि करना तथा इसे निरंतर अद्यतन करना आज के समय में आवश्यक है. अतः आप सभी पहली तिमाही से ही यूनियन विद्या ऐप में अपना निर्धारित पाठ्यक्रम एवं परीक्षा को समय पर पूरा करें. शाखा में सर्वोत्तम प्रथा को अपनाए जाने एवं अनुभवों को सभी के साथ साझा करने हेतु बैंक द्वारा साप्ताहिक आधार पर प्रकरण अध्ययन परिचालित किए जाते हैं ताकि बैंक में इसकी पुनरावृत्ति न हो. आप सभी इसका अध्ययन अवश्य करें और बैंक के परिपत्रों का भी अध्ययन करते रहें.

बैंक ने लीक से हटकर कई कर्मचारी हितैषी पहल किए हैं. सशक्तिपूर्ण समावेश के इस क्रम में दिव्यांग कर्मचारी सुश्री छोंजिन अंगमो को, जो अपने दृढ़ संकल्प और अदम्य साहस के बल पर एवरेस्ट की चोटी पर विजय प्राप्त करने हेतु चल पड़ी है, बैंक ने सहयोग स्वरूप ₹ 56 लाख प्रदान किए हैं.

बैंक ने हाल ही में एलबीओ की भर्ती के परिणाम जारी किए हैं. इस भर्ती से जहाँ एक ओर हमारे जनबल में वृद्धि होगी वहीं दूसरी ओर स्थानीय भाषा में ग्राहकों को सेवा प्रदान करने से उनके साथ बैंक के आत्मीय संबंध भी विकसित होंगे जो हमारे ग्राहक आधार और हमारे कारोबार को नई ऊँचाईयों पर ले जाने में सहायक होंगे.

मैं आप सभी को एक सफल वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु शुभकामनाएं देता हूँ.

शुभकामनाओं सहित

(संजय रुद्र)
कार्यपालक निदेशक

Dear Unionites,

At the outset, as "Union Dhara" embarks on its 50th year, I congratulate our readers and writers and extend best wishes to the editorial board. I hope this magazine shall continue to enrich the readers and contribute to hone the creativity of the staff members.

I congratulate all unionites, who have achieved success in the recently completed promotion process for the FY 2025-26 and extend best wishes for their new assignment. Transfer is also an integral part of a banker's life. Strive to improve bank's business as per the business targets and contribute in improving bank's brand image in your new place of posting.

Unionites should invariably complete the annual appraisal process in time. It is imperative that we improve our knowledge and make efforts to remain updated. Hence, all of you should try to complete the specified courses and exams in Union Vidya App from the first quarter itself. Case studies are circulated on weekly basis with a view to foster adoption of best practices by branches and sharing experiences, thereby avoiding recurrence of these instances in the bank. I urge all of you to go through the same and the bank's circulars.

Bank has implemented many innovative staff welfare programmes. Embodying the spirit of empowerment and inclusivity, bank has extended aid of ₹ 56 lakhs to our divyang staff Ms. Chhonzin Angmo, who is all set to scale Mt. Everest with courage, resilience and determination.

Bank has recently released the results of LBO recruitment. This recruitment will not only strengthen our workforce but also fortify our customer relations by providing service in local language, thereby increasing our clientele and facilitate in augmenting our business.

I extend best wishes to all of you for a successful financial year 2025-26.

with best wishes,

(Sanjay Rudra)
Executive Director

अवलोकन
OVERVIEW

प्रिय यूनियनाइट्स,

आप सभी को मेरा नमस्कार. आशा है कि आप स्वस्थ्य एवं उत्साहपूर्ण होंगे.

हमारे बैंक की प्रतिष्ठित कॉर्पोरेट गृह-पत्रिका "यूनियन धारा" इस वर्ष अपनी 50वीं वर्षगांठ मना रही है, जो हम सभी के लिए अत्यंत गर्व और खुशी का विषय है. "यूनियन धारा"- हमारे बैंक की संस्कृति, मूल्यों और उपलब्धियों की जीवन्त अभिव्यक्ति रही है. पिछले पाँच दशकों में इस पत्रिका ने कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता को एक साझा मंच प्रदान किया है. इसकी पृष्ठभूमि में निहित समर्पण, संवाद और प्रेरणा की भावना ने इसे एक मजबूत संगठनात्मक सेतु के रूप में स्थापित किया है. इस स्वर्णिम अवसर पर, हम सभी को इस परंपरा को और अधिक समृद्ध बनाने का संकल्प लेना चाहिए, ताकि "यूनियन धारा" आने वाले वर्षों में भी हमारी सामूहिक यात्रा का सशक्त साक्षी बनी रहे.

बैंक ने "यूनियन जागृति" नामक एक विस्तृत कार्ययोजना की परिकल्पना की है. "यूनियन जागृति" का उद्देश्य संवृद्धि, सुदृढ़ता, सत्यनिष्ठा, विश्वास और समावेशन प्राप्त करना है. इस अभियान के माध्यम से बैंक ग्राहकों को केवल बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं के बारे में शिक्षित करने तथा उन्हें वित्तीय रूप से सशक्त और जागरूक बनाना चाहता है. बैंक का मानना है कि एक जागरूक ग्राहक ही एक सशक्त अर्थव्यवस्था का निर्माण कर सकता है, और इसी विचारधारा के साथ "यूनियन जागृति" की नींव रखी गई है.

बैंक संवहनीय वृद्धि के मार्ग पर अग्रसर है. इसके लिए, आस्ति गुणवत्ता को बनाए रखने हेतु नए-खातों की नियमित निगरानी अत्यंत आवश्यक है, जो हम सभी का सामूहिक उत्तरदायित्व है. मजबूत आस्ति गुणवत्ता बैंक की प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करती है और दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को भी सुनिश्चित करती है. अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अनुपालन से संबंधित समस्त दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें.

मौजूदा कारोबार में वृद्धि, विशेषकर कासा जमाराशियों में सुधार, हमारे बैंक की आय, ग्राहक संतुष्टि और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने का सशक्त माध्यम है. हमें उच्च निवल मूल्य वाले ग्राहकों (एचएनआई) की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि व्यक्तिगत सेवाओं द्वारा दीर्घकालिक संबंध स्थापित कर सकें.

मैं आप सभी से यह भी आग्रह करता हूँ कि केवल नियमों का पालन ही नहीं, बल्कि उसके पीछे की भावना को भी आत्मसात करें. सत्यनिष्ठा, समर्पण और सहयोग की भावना से किया गया कार्य ही संगठन की सफलता की असली कुंजी है.

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सभी के लिए प्रेरणा और जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होगा और हम सब मिलकर अपने बैंक को नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर करेंगे.

शुभकामनाओं सहित

(पंकज द्विवेदी)
कार्यपालक निदेशक

Dear Unionites,

Greetings to all of you. I hope you are in great health and good spirits.

It is a matter of immense pride and joy for all of us that our Bank's prestigious in-house corporate magazine "Union Dhara" is celebrating 50th anniversary this year. "Union Dhara"- has been a living expression of our Bank's culture, values, and achievements. Over the past five decades, the magazine has provided a common platform to showcase employees' thoughts, experiences, and creativity. The spirit of dedication, communication, and inspiration behind it has made it a strong organizational bridge. On this golden occasion, let us all resolve to enrich this tradition further so that "Union Dhara" continues to reflect our collective journey in the years to come.

The Bank has envisioned a comprehensive initiative called "Union Jagriti." This initiative stands for 'Journey to Achieve-Growth, Resilience, Integrity, Trust, and Inclusion. Through this campaign, the Bank aims not only to educate customers about banking products and services but also to empower and make them financially aware. The Bank believes that an informed customer is key to building a strong economy, and it is this belief that laid the foundation of "Union Jagriti."

Bank is on a sustained growth path. In this regard, the new accounts should be monitored regularly to maintain asset quality which is our collective responsibility. Strong asset quality reinforces the Bank's reputation and ensures long term financial stability. Moreover, it is essential that we strictly adhere to all compliance related guidelines.

Expanding our existing business, especially improving CASA deposits, is a powerful way to boost income, customer satisfaction, and competitiveness. We must also focus on high-net-worth individuals (HNIs) to build long-term relationships through personalized services.

I urge all of you to not only follow the rules but also embrace the spirit behind them. Work done with integrity, dedication, and a sense of collaboration is the true key to the success of any organization.

I am confident that this issue will serve as an important source of inspiration and knowledge for all of you, and together we will continue to take our bank to new heights.

with best wishes,

(Pankaj Dwivedi)
Executive Director

संपादकीय
EDITORIAL

प्रिय पाठकगण,

"यूनियन धारा" के स्वर्ण जयंती वर्ष का पहला अंक प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है.

"यूनियन धारा" आंतरिक संवाद के सशक्त माध्यम के रूप में, अर्ध-शताब्दी की सुदीर्घ अवधि से बैंक के विकास की साक्षी बनी हुई है. उच्च प्रबंधन की विचारधारा को शाखाओं की कर्मभूमि में फलीभूत करने में "यूनियन धारा" की भूमिका है. इसी प्रकार यूनियनाइट्स के विचार, अनुभव, सृजनात्मकता की ओजस्वी वाणी को यूनियन धारा के अंतर्गत एक कारगर मंच मिला है. उच्च प्रबंधन की अपेक्षाओं और दृष्टिकोण का समाहार और यूनियनाइट्स की वाणी का संप्रेषण करते हुए यूनियन धारा ने संवाद सेतु स्थापित किया है.

स्टाफ के लेखन कौशल को बढ़ावा देने तथा गुणवत्तापूर्ण लेख आदि प्राप्त करने हेतु प्रत्येक कार्यालय में संवाददाता का नामांकन, प्रत्येक अंक में उत्कृष्ट लेख तथा उत्कृष्ट कविता का चयन, वार्षिक आधार पर उत्कृष्ट लेख / कविता / फोटो प्रविष्टि / सेंटर स्प्रेड का चयन, 'स्टार संवाददाता' सम्मान जैसी अनेक सकारात्मक पहल के साथ यूनियन धारा की सृजनात्मक यात्रा आगे बढ़ रही है. यूनियन धारा के अंतर्गत नियमित रूप से बैंकिंग के विभिन्न आयाम, भारतीय संस्कृति के विविध पहलु, भौगोलिक विशेषताओं पर आधारित विशेषांक प्रकाशित किए जा रहे हैं.

गृह पत्रिकाओं के अविरल प्रकाशन में संपादकीय सलाहकार समिति के कार्यपालकों की अहम भूमिका है. संपादकीय सलाहकारों के कुशल नेतृत्व में गृह पत्रिका की विषय-वस्तु में नवीनता, कलेवर में निखार और समग्र रूप से रुचिकर अंकों का प्रकाशन संभव हुआ है.

"यूनियन धारा" का यह अंक एक सामान्य अंक है, जिसमें हम वैविध्यपूर्ण लेखों का संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं. इस अंक से गृह पत्रिका की स्वर्णिम विरासत के निर्माण में योगदान देने वाले हमारे वरिष्ठों के प्रति सम्मान स्वरूप 'अतीत के झरोखों से' स्थायी स्तंभ हेतु 4 पन्ने आबंटित किए गए हैं.

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके सहयोग से "यूनियन धारा" में नवाचार और समावेशिता के योग के साथ उत्कृष्टता बनाए रखने की मुहिम जारी रहेगी. हमें आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी.

भवदीया

(गायत्री रवि किरण)

Dear Readers,

We take immense pride in presenting the first issue of the golden jubilee year of "Union Dhara".

As a powerful medium of internal dialogue, "Union Dhara" has been a witness to the bank's growth story over the past half a century. "Union Dhara" plays a role in bringing the ideology of top management to fruition at field level. Similarly, Union Dhara provides an effective platform to unionites for expressing their ideas, experiences and creativity. It encompasses the expectations and views of the top management and communicates the voice of the unionites, thereby establishing an effective communication channel.

Union Dhara's creative journey is progressing with many positive initiatives such as nomination of correspondent in each office to promote the writing skills of the staff and obtain quality articles, selection of best article and best poem in each issue, selection of best article/poem/photo entry/center spread on annual basis, 'Star Correspondent' award etc. Special issues focussed on various aspects of banking, diverse facets of the Indian culture, geographical specials etc., are being published at regularly.

Executives of the Editorial Advisory Committee play an important role in the continued publication of the house magazine. Novelty of contents, refinement of the format and curation of interesting issues is made possible under the guidance of the editorial advisors.

The present issue of "Union Dhara" is a general issue, wherein we are presenting a compilation of curated articles. Commencing with this issue 4 pages are allotted for a new feature titled 'अतीत के झरोखों से' as a tribute to our seniors who have contributed to the Golden legacy of this house magazine.

We are confident that with your support, "Union Dhara" shall continue the endeavour to maintain excellence with innovation and inclusiveness. We look forward for your valuable suggestions.

Yours sincerely,

(Gayathri Ravi Kiran)

गृह पत्रिका • House Magazine of

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन धारा Union Dhara

प्रकाशन तिथि- 14.05.2025

जिल्द. 50, सं. 1, मुंबई, जनवरी-मार्च, 2025
VOL. 50, No.1, Mumbai, January-March, 2025

अनुक्रमणिका

- बधाई, विदाई 01
- वैश्विक कर अनुपालन और पारदर्शिता 02
- Poem - My Mother 04
- एनआरआई बैंकिंग 05
- कविता - अंत: रण – महारण 06
- स्विफ्ट – विश्वव्यापी वित्तीय दूरसंचार सोसाइटी 07
- चक्षु पोर्टल 08
- सीएसआर गतिविधियां 09
- Agility quotient in customer service 11
- कविता - फूल गुलमोहर 12
- Agile Methodology 13
- Power of Financial Health Segmentation 15
- Poem - Blooming Flowers 17
- Climate Risk: From Obscurity to the Open 18
- कविता - बैंक - एक अनमोल धरोहर 20
- उद्घाटन गतिविधियां 21
- Learning and Development Ecosystem in Banks 23
- कविता - सत्य मीमांसा 25
- The Art of Delegation 26
- हमें गर्व है 28
- Growth Mindset and Continuous Learning 29
- शुभमस्तु 30
- From Ambiguity to Achievement 31
- सेंटर स्प्रेड 33
- Emotional Intelligence 35
- Her Finance, Her Future 37
- पुरस्कार एवं सम्मान 39
- 5Rs - Habits Worth Embracing 40
- मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप 41
- जीवनदायिनी नर्मदा नदी 43
- फेस इन यूबीआई क्राउड 45
- यात्राएं क्यों महत्वपूर्ण हैं? 47
- Let Food Be Thy Medicine 48
- Heritage Industries of Phulia 49
- A Fateful Discovery 51
- अखिल भारतीय अंतर बैंक हिंदी प्रतियोगिता के विजेता 52
- महिला दिवस समारोह 53
- The Hidden Messages in Water 55
- कविता - मेरा मोबाइल 56
- सेवानिवृत्त जीवन से 57
- बाल प्रतिभा 58
- अतीत के झरोखों से 59
- प्रतियोगिता 173 63
- समाचार / खेल गतिविधियां 64
- आपकी पाती 73

ई-मेल E-mail: uniondhara@unionbankofindia.bank | gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank
Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

यूनियन धारा में प्रकाशित लेख आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं और प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.
The views expressed in the articles published in Union Dhara are solely that of the author and do not necessarily reflect the views of the management.
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित.
Published by Union Bank of India for internal circulation

हार्दिक बधाई

दिनांक 28.03.2025 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै को आईबीए के उपाध्यक्ष के रूप में नामित किया गया.

विदाई

श्री लक्ष्मण एस उप्पर दिनांक 22.03.2022 से 20.03.2025 तक बैंक के अंशकालिक गैर-सरकारी निदेशक के पद पर कार्यरत रहे. आप इंजीनियरिंग में स्नातक हैं. आप एक शिक्षाविद हैं. आप कर्नाटक एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, धारवाड़ के संस्थापक हैं तथा वर्ष 2012 में आपने स्पर्धा स्फूर्ति पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, धारवाड़ की शुरुआत की. आप क्लासिक इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, क्लासिक लिटिल बड्स तथा क्लासिक पीयू एवं डिग्री कॉलेज के अध्यक्ष हैं. आपको शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्र में दी गई सेवाओं के लिए कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है. दिनांक 20.03.2025 को कार्यावधि की समाप्ति पर श्री लक्ष्मण एस. उप्पर को सम्मानित करते हुए श्री श्रीनिवासन वरदराजन, अध्यक्ष तथा सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ.

दिनांक 17.03.2025 को आईबीए द्वारा आयोजित ईज़ 6.0 पुरस्कार समारोह में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को उच्च कार्यनिष्पादन बैंक श्रेणी में तीसरा स्थान तथा 04 थीम यथा ग्राहक सेवा, कर्मचारी & एचआर अनुपालन, एनालिटिक्स-चालित प्रगति तथा प्रौद्योगिकी एवं डेटा क्षमता के अंतर्गत दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है. पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री ए. मणिमेखलै प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री नितेश रंजन, श्री रामसुब्रमाणियन एस, श्री संजय रुद्र तथा श्री पंकज द्विवेदी, कार्यपालक निदेशकगण तथा अन्य कार्यपालक.

वैश्विक कर अनुपालन और पारदर्शिता

लंबे समय से कर चोरी, आय और संपत्तियों की गैर-रिपोर्टिंग या कम रिपोर्टिंग जैसे मुद्दों ने सरकारों और कर अधिकारियों को परेशान किया है. सरकारों से अपनी आय छिपाने के लिए व्यक्ति और समूह अलग-अलग हथकंडे अपनाते हैं, जिनमें से एक दूसरे देशों में बैंक खाते खोलना भी शामिल है. उदाहरण के लिए, एक अमेरिकी नागरिक सिंगापुर में एक बैंक खाता खोलेगा और अपनी आय का कुछ हिस्सा सिंगापुर खाते में जमा करेगा ताकि अमेरिकी सरकार द्वारा कर से बचा जा सके, जहाँ वह कर निवासी है.

वर्तमान वैश्विक वित्तीय परिदृश्य में, कर पारदर्शिता सुनिश्चित करने और कर चोरी रोकने के लिए कई उपाय अपनाए गए हैं. इनमें से दो प्रमुख वैश्विक मानक हैं – फटका - विदेशी खाता कर अनुपालन अधिनियम (FATCA-Foreign Account Tax Compliance Act) और सीआरएस (CRS-Common Reporting Standard). फटका अमेरिका द्वारा लागू किया गया एक कर अनुपालन अधिनियम है, जबकि सीआरएस एक अंतरराष्ट्रीय मानक है जिसे कर संबंधी सूचना के स्वतः आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए विकसित किया गया है.

फटका क्या है?

विदेशी खाता कर अनुपालन अधिनियम (फटका) (Foreign Account Tax Compliance Act (FATCA) अमेरिका का एक संघीय कानून है, जिसका उद्देश्य अमेरिकी करदाताओं द्वारा विदेशी वित्तीय संस्थानों (एफएफआई) के माध्यम से कर चोरी को रोकना है. यह कानून विदेशी वित्तीय संस्थानों को बाध्य करता है कि वे अमेरिकी करदाताओं के खातों की जानकारी आंतरिक राजस्व सेवाएं (Internal Revenue Service - IRS) को रिपोर्ट करें. भारत ने अमेरिका के साथ अंतर सरकारी समझौता (Intergovernmental Agreement -IGA) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे भारतीय बैंक अमेरिकी खाताधारकों की जानकारी भारत सरकार को प्रदान करते हैं, जो बाद में इसे अमेरिकी अधिकारियों को भेजती है. सरल शब्दों में, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को उन लोगों की पहचान करनी होती है जो संयुक्त राज्य अमेरिका के कर निवासी हैं, तथा आधिकारिक रूप से स्वीकृत चैनल के माध्यम से उनके खाते की जानकारी अमेरिकी सरकार को देनी होती है.

सीआरएस क्या है?

सामान्य रिपोर्टिंग मानक-सीआरएस (Common Reporting Standard - CRS) एक वैश्विक मानक है, जिसे आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (Organisation for Economic Co-operation and Development-OECD) द्वारा विकसित किया गया है. सीआरएस का उद्देश्य कर चोरी को रोकना और वैश्विक वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ावा देना है. यह विभिन्न देशों के बीच वित्तीय जानकारी के स्वतः आदान-प्रदान की प्रक्रिया को सक्षम बनाता है.

फटका एक अमेरिकी अधिनियम है. फटका के जवाब में ओईसीडी देशों द्वारा सीआरएस की शुरुआत की गई थी. जब अमेरिकी सरकार ने निर्णय लिया और दुनिया भर में अपने कर निवासियों द्वारा रखे गए खातों की जानकारी मांगी, तो ओईसीडी देशों ने महसूस किया कि पारदर्शिता लाने और अपने कर निवासियों द्वारा कर चोरी को रोकने के लिए, इस तरह के डेटा की आवश्यकता है. इसलिए देशों के बीच ऐसी सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए कई अंतर-सरकारी समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए.

भारत सीआरएस को अपनाने वाले शुरुआती देशों में से एक है.समझौतों में प्रवेश करने के बाद, भारत सरकार ने आयकर अधिनियम में कुछ बदलाव किए और उसके बाद, केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने फटका के कार्यान्वयन के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश और अधिसूचनाएँ जारी कीं.

फटका और सीआरएस के उद्देश्य:

- **कर चोरी रोकना:** फटका और सीआरएस का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्ति अपने विदेशी वित्तीय संपत्तियों को छुपा न सकें.
- **वैश्विक कर पारदर्शिता:** दोनों मानकों के माध्यम से कर प्रशासन को वित्तीय लेन-देन की जानकारी प्राप्त होती है, जिससे कर अनुपालन को मजबूती मिलती है.
- **बैंकों की जवाबदेही:** वित्तीय संस्थानों को अपने ग्राहकों की कर निवास (Tax Residency) की जानकारी रखने और इसे संबंधित कर प्राधिकरण को रिपोर्ट करने की आवश्यकता होती है.
- **वित्तीय अनुपालन लागत में वृद्धि:** भारतीय बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को अपने सिस्टम और प्रक्रियाओं में बदलाव करने पड़े हैं, जिससे अनुपालन लागत में वृद्धि हुई है.
- **व्यक्तिगत ग्राहकों पर प्रभाव:** जिन व्यक्तियों के पास विदेशी खाते हैं, उन्हें अब अपनी कर निवास स्थिति की रिपोर्टिंग करनी होती है, जिससे उनकी कर योजना और वित्तीय प्रबंधन पर प्रभाव पड़ा है.

भारत की फटका यात्रा:

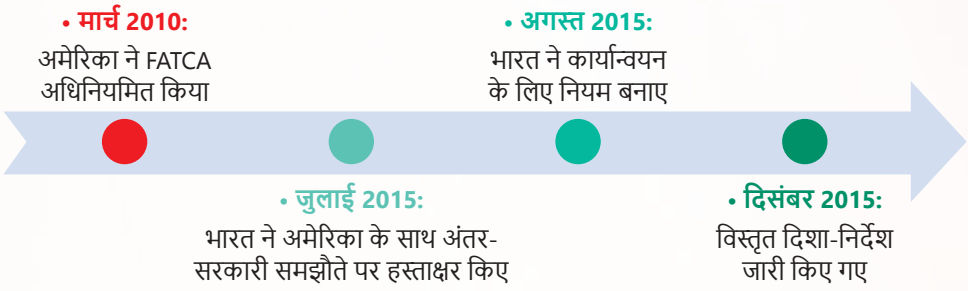

भारत सरकार ने फटका पर 9 जुलाई 2015 को हस्ताक्षर किए थे. इसके अलावा, भारत सरकार ने सीआरएस (सामान्य रिपोर्टिंग मानक) पर 3 जून 2015 को हस्ताक्षर किए थे. इन दोनों समझौतों के माध्यम से, भारत सरकार ने विदेशी बैंक खातों में रखे गए धन की जानकारी साझा करने और कर चोरी को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है.

सीबीडीटी भारत में फटका /सीआरएस के कार्यान्वयन का नेतृत्व कर रहा है. इस उद्देश्य के लिए व्यापक दिशा-निर्देश सीबीडीटी द्वारा जारी किए गए हैं. सेबी, आरबीआई, आईआरडीए जैसे अन्य नियामकों ने विनियमों के अनुपालन के लिए वित्तीय संस्थानों को सक्रिय रूप से निर्देश जारी किए हैं.

भारतीय बैंकिंग प्रणाली पर फटका और सीआरएस प्रभाव: भारतीय बैंकों को फटका और सीआरएस अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

- **फटका घोषणा अनिवार्य:** सभी नए और मौजूदा खाताधारकों से फटका/ सीआरएस घोषणा लेना अनिवार्य है.
- **कर निवास की पहचान:** प्रत्येक ग्राहक का कर निवास सत्यापित करना और उसे दर्ज़ करना बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए अनिवार्य है.
- **टीआईएन की आवश्यकता:** यदि खाताधारक किसी अन्य देश में करदाता है, तो उसका टीआईएन प्राप्त करना बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए आवश्यक है.
- **डेटा रिपोर्टिंग:** बैंकों को प्रत्येक वर्ष 31 मई तक पिछले कैलेंडर वर्ष की फटका और सीआरएस रिपोर्ट आयकर विभाग को प्रस्तुत करनी होती है. निर्धारित समय में डेटा रिपोर्टिंग बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए अनिवार्य है.

किसी व्यक्ति के कर निवास को सत्यापित करने के लिए टीआईएन नंबर महत्वपूर्ण है. तथापि, ऐसी परिस्थितियाँ होंगी जैसे:

- कर निवास का देश टीआईएन जारी नहीं करता है
- कर निवास का देश टीआईएन जारी करता है, लेकिन ग्राहक को इसे प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है
- कर निवास का देश टीआईएन जारी करता है, लेकिन ग्राहक इसे प्राप्त करने के योग्य नहीं है
- कर निवास का देश टीआईएन जारी करता है, लेकिन ग्राहक को इसे प्राप्त करना बाकी है
- ग्राहक ने टीआईएन प्राप्त कर लिया है, लेकिन मेजबान देश में व्यक्तिगत डेटा गोपनीयता कानूनों के कारण बैंक को इसे प्रदान करने में असमर्थ है

इसके अतिरिक्त, विदेश में अध्ययन करने गए छात्र, विदेशी राजनयिक, व्यापारी नाविक और अनिवासी आश्रितों को टीआईएन नंबर प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं हो सकती है. ऐसे सभी मामलों के लिए बैंक सिस्टम में चिह्नित करने के लिए आंतरिक दिशा-निर्देश निर्धारित करेगा क्योंकि उपरोक्त मामलों में टीआईएन पर जोर नहीं दिया जा सकता है. साथ ही, चूंकि फटका और सीआरएस प्रकटीकरण एक स्व-प्रमाणन है, इसलिए शाखाएँ ग्राहक की घोषणा के आधार पर विवरण दर्ज कर सकती हैं. इस आशय के दस्तावेजी साक्ष्य अनिवार्य नहीं हैं.

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में फटका और सीआरएस अनुपालन:

भारतीय बैंकों को फटका और सीआरएस अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने होते हैं:

डेटा संग्रहण:

- नए और मौजूदा खाताधारकों से फटका /सीआरएस घोषणा अनिवार्य रूप से प्राप्त करें.
- ग्राहक की कर निवास स्थिति सत्यापित करें.
- यदि खाताधारक किसी अन्य देश में करदाता है, तो उसका टीआईएन प्राप्त करें.

रिपोर्टिंग प्रक्रिया:

- भारतीय बैंकों को प्रत्येक वर्ष 31 मई तक पिछले कैलेंडर वर्ष की फटका और सीआरएस रिपोर्ट आयकर विभाग को प्रस्तुत करनी होती है.
- रिपोर्टिंग फॉर्म 61B में डेटा प्रस्तुत किया जाता है.
- डेटा की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए बैंकों को अपने सिस्टम में उचित प्रविष्टियां करनी होती हैं.

अनुपालन न करने पर दंड:

फटका के तहत गैर-अनुपालन से वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों तरह की लागतें आती हैं.

- यदि कोई विदेशी वित्तीय संस्थान फटका अनुपालन नहीं करता है, तो गैर-अनुपालन करने वाले विदेशी वित्तीय संस्थानों (एफएफआई) या गैर-भागीदारी करने वाले एफएफआई को 30% कर रोक (Withholding Tax) का सामना करना पड़ सकता है.
- गैर-अनुपालन करने वाले एफएफआई को अमेरिकी वित्तीय संस्थानों के साथ संवाददाता बैंकिंग संबंधों की समाप्ति का सामना करना पड़ सकता है.

- गैर-अनुपालन एफएफआई की प्रतिष्ठा और व्यापार में नुकसान पहुंचा सकता है.

घरेलू स्तर पर, भारतीय कर अधिकारी सूचना न देने पर प्रतिदिन 100 रुपये का जुर्माना भी लगाएंगे. यदि बैंक नोटिस दिए जाने के बाद भी सूचना देने में विफल रहते हैं, तो जुर्माना बढ़कर 500 रुपये प्रतिदिन हो जाता है.

इसके अतिरिक्त, गलत डेटा दाखिल करने पर 50000 रुपये का जुर्माना है.

भारतीय वित्तीय संस्थानों के लिए फटका /सीआरएस की चुनौतियाँ:

- **प्रणालीगत परिवर्तन:** फटका और सीआरएस अनुपालन के लिए बैंकों को अपने सिस्टम को अपडेट करना पड़ता है. इसके लिए कई तरह की मंजूरी की जरूरत होती है और इसमें कई तरह की परेशानियां भी शामिल हैं.
- **डेटा गोपनीयता:** कर सूचना साझा करने की प्रक्रिया में डेटा सुरक्षा एक प्रमुख चिंता है. बैंक अपने ग्राहकों की जानकारी गोपनीय रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन फटका और सीआरएस प्रतिबद्धताओं के तहत बैंकों को ग्राहकों का डेटा बाहरी एजेंसियों के साथ साझा करना पड़ता है, जिससे उनके बुनियादी सिद्धांतों के साथ टकराव होता है.
- **लागत में वृद्धि:** अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय संस्थानों को उच्च लागत वहन करनी पड़ती है. चूंकि सिस्टम अपग्रेडेशन की जरूरत है, इसलिए इसमें भारी निवेश की जरूरत है. साथ ही, सॉफ्टवेयर के अपग्रेडेड वर्जन को चलाने के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने की जरूरत होती है, जिससे लागत और बढ़ जाती है.

भविष्य की संभावनाएँ: फटका और सीआरएस अनुपालन न केवल कर प्रशासन को सशक्त बनाएंगे बल्कि भारत को एक अधिक पारदर्शी और जिम्मेदार वित्तीय प्रणाली की ओर अग्रसर करेंगे. आने वाले समय में:

- स्वचालित डेटा विश्लेषण और एआई आधारित अनुपालन प्रणालियों का विकास होगा.
- बैंकों में डिजिटल ट्रैकिंग और निगरानी तंत्र को मजबूत किया जाएगा.
- सीआरएस के अंतर्गत और अधिक देशों का समावेश हो सकता है, जिससे वैश्विक वित्तीय पारदर्शिता और बढ़ेगी.

फटका और सीआरएस वैश्विक कर अनुपालन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल हैं, जो कर चोरी को रोकने और वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं. भारतीय बैंकिंग प्रणाली को इन मानकों का पालन करने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे, जिससे वित्तीय प्रणाली मजबूत हो और वैश्विक स्तर पर भारत की विश्वसनीयता बढ़े. इन मानकों का प्रभावी कार्यान्वयन न केवल कर प्रशासन को सशक्त बनाएगा, बल्कि भारत को एक अधिक पारदर्शी और जिम्मेदार वित्तीय प्रणाली की ओर अग्रसर करेगा.

मनु पाण्डेय
यू.एल.ए., गुरुग्राम

My Mother

Whenever I'm in despair,
She takes me in her arms and
brightens my eyes;
Then she appears to me
As an angel in disguise.
The entire world is a shrub
Of nostalgic relations,
For me she is the deity
who gives me affection.
She is the fairy who stays
awakened till my last sight,
Till I sleep she takes me
in her lap all night.
In every walk of life
She teaches meaningful lessons,
Like- 'If you do the same
What's the difference my son'.
Always from obstacles,
She rescues me by magical tools:
Whenever I feel at sea
Or surrounded by whirlpool.
She is my friend, family
And like aromatic jasmine tree,
For me from my birth,
My first love is She.
To justify her godliness,
My dictionary has no term.
The world needs the Almighty,
But I only need- MY MUM.

Shivangi Gupta
R.O., Patna

एनआरआई बैंकिंग

भारतीय बैंकों के लिए समृद्धि का एक प्रमुख स्तंभ

आज की परस्पर जुड़ी और वैश्वीकृत दुनिया में, अनिवासी भारतीय (एनआरआई) बैंकिंग भारतीय बैंकिंग प्रणाली की आधारशिला के रूप में उभरी है. लाखों भारतीयों के विदेश में रहने के कारण, इन व्यक्तियों और भारतीय बैंकों के बीच वित्तीय संबंध काफी बढ़ गए हैं. यह खंड अब बुनियादी प्रेषण सेवाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अब इसमें बैंकिंग उत्पादों, निवेश के अवसरों और वित्तीय सलाहकार सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है. एनआरआई बैंकिंग न केवल भारतीय बैंकों को विकास हासिल करने में सहायता करती है बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

1. **स्थिर जमा का स्रोत:** भारतीय बैंकों में एनआरआई बैंकिंग का सबसे महत्वपूर्ण योगदान स्थिर और दीर्घकालिक जमाओं का प्रवाह है. एनआरआई अपनी कमाई के लिए सुरक्षा और आकर्षक प्रतिलाभ चाहते हैं और भारतीय बैंक एक विश्वसनीय विकल्प प्रदान करते हैं. एनआरआई (अनिवासी भारतीय) और एफसीएनआर (विदेशी मुद्रा अनिवासी) खाते जैसे जमा उत्पाद विशेष रूप से एनआरआई की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें अर्जित करते समय उनका धन सुरक्षित रहता है.

- **एनआरआई जमा:** ये खाते एनआरआई को अपनी विदेशी कमाई को भारतीय बैंकों में जमा करने की अनुमति देते हैं, जिसमें धन की पूर्ण वापसी और भारत में कर-मुक्त ब्याज शामिल है.
- **एफसीएनआर जमा:** एनआरआई विदेशी मुद्रा में जमा रख सकते हैं, विनिमय दर जोखिमों को खत्म कर सकते हैं और स्थिर प्रतिलाभ सुनिश्चित कर सकते हैं. ये जमा न केवल आकार में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि आम तौर पर लंबी अवधि के लिए बनाए रखे जाते हैं, जिससे बैंकों को घरेलू ऋण और निवेश के लिए आवश्यक चलनिधि और स्थिरता मिलती है.

2. **विदेशी मुद्रा का प्रवाह:** भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में एनआरआई बैंकिंग का प्रमुख योगदान है, जो भारतीय रुपये की स्थिरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है. एनआरआई हर साल अपने परिवारों को अरबों डॉलर भेजते हैं और भारत में निवेश करते हैं. ये फंड सीधे तौर पर भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ावा देते हैं, जिससे देश अपने व्यापार घाटे को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में सक्षम होता है. भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और भारतीय बैंक सक्रिय रूप से एनआरआई को विभिन्न उपकरणों, जैसे बॉण्ड और इक्विटी में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ताकि इन प्रवाहों को उत्पादक उपयोग में लाया जा सके. विदेशी मुद्रा का यह स्थिर प्रवाह वैश्विक वित्तीय प्रणाली में भारत की स्थिति को भी मजबूत करता है, आर्थिक लचीलापन सुनिश्चित करता है और निवेशकों के विश्वास को बढ़ावा देता है.

3. **शुल्क-आधारित आय का स्रोत:** भारतीय बैंकों के लिए, एनआरआई बैंकिंग से संबंधित शुल्क-आधारित सेवाएं एक आकर्षक राजस्व स्रोत बन गई हैं.

- **प्रेषण सेवाएं:** एनआरआई अक्सर भारत में अपने परिवारों को पैसा भेजते हैं, और बैंक त्वरित एवं सुरक्षित प्रेषण समाधान प्रदान करने के लिए मामूली शुल्क लेते हैं. डिजिटलीकरण के साथ, प्रक्रिया और भी अधिक निर्बाध हो गई है, जिससे अधिक ग्राहक आकर्षित हो रहे हैं.
- **निवेश और सलाहकार सेवाएँ:** बैंक एनआरआई को म्यूचुअल फंड, सरकारी बॉण्ड और शेयर बाजार सहित भारतीय वित्तीय उत्पादों में निवेश करने के अवसर प्रदान करते हैं. मध्यस्थों के रूप में कार्य करके, बैंक एनआरआई को अपने निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाने में मदद करते हुए पर्याप्त शुल्क अर्जित करते हैं.

  इसके अतिरिक्त, उच्च मालियत एनआरआई को बैंकों द्वारा दी जाने वाली कर सलाह, संपत्ति योजना और धन प्रबंधन जैसी सेवाएं राजस्व को और बढ़ाती हैं.

4. **रियल एस्टेट और ऋण सेवाएँ:** भारतीय रियल एस्टेट क्षेत्र एनआरआई के लिए सबसे आकर्षक निवेश स्थलों में से एक है. बैंक अनुकूलित ऋण उत्पाद और सहायता सेवाएँ प्रदान करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

- **गृह ऋण:** कई एनआरआई भारत में आवासीय और वाणिज्यिक संपत्तियों में निवेश करते हैं. बैंक विशेष रूप से एनआरआई के लिए डिज़ाइन की गई प्रतिस्पर्धी गृह ऋण योजनाएं प्रदान करते हैं, जो सुचारू वित्तपोषण विकल्प सुनिश्चित करते हैं.
- **सलाहकार सेवाएँ:** बैंक भारत में संपत्ति कानूनों और विनियमों की जटिलताओं को सुलझाने में एनआरआई की सहायता करते हैं, जिससे निवेश प्रक्रिया अधिक सुलभ हो जाती है.

  इस प्रकार के लेनदेन को सुविधाजनक बनाकर, बैंक न केवल अपनी ऋण बहियों को मजबूत करते हैं बल्कि रियल एस्टेट बाजार के विकास में भी योगदान देते हैं.

5. **क्रॉस-सेलिंग के अवसर:** एनआरआई, विशेष रूप से उच्च मालियत वाले व्यक्ति (एचएनआई) श्रेणी में, बैंकों को क्रॉस-सेलिंग वित्तीय उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं. बैंक एनआरआई को बीमा पॉलिसी, सेवानिवृत्ति योजना और पारस्परिक निधियां (म्यूचुअल फंड) निवेश जैसी कई मूल्यवर्धित सेवाएं प्रदान करते हैं. संरचित वित्तीय नियोजन के प्रति बढ़ती प्राथमिकता के साथ, एनआरआई पोर्टफोलियो प्रबंधन और अनुकूलित निवेश समाधानों के लिए बैंकों पर भरोसा करते हैं. सेवाओं का यह विविधीकरण बैंकों को अपने राजस्व प्रवाह को बढ़ाने के साथ-साथ एनआरआई ग्राहकों के साथ अपने संबंधों को गहरा करने की अनुमति देता है.

6. **भारत के विकास में योगदान:** एनआरआई बैंकिंग के सबसे प्रभावशाली पहलुओं में से एक राष्ट्र निर्माण में इसकी भूमिका है. एनआरआई जमा और निवेश के माध्यम से जुटाई गई पूंजी को बुनियादी ढांचे, विनिर्माण और छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में लगाया जाता है. इससे न केवल भारत की आर्थिक वृद्धि में तेजी आती है बल्कि नौकरियां भी पैदा होती हैं और औद्योगिक उत्पादकता को बढ़ावा मिलता है. इसके अतिरिक्त, एनआरआई बैंकिंग अविकसित क्षेत्रों और उद्योगों को समर्थन देने के लिए बहुत जरूरी विदेशी पूंजी लाकर वित्तीय समावेशन को सक्षम बनाता है.

एनआरआई बैंकिंग भारतीय बैंकिंग प्रणाली का एक अभिन्न अंग बन गई है, जो विकास और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा दे रही है. यह एनआरआई और उनकी मातृभूमि के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उनका योगदान भारत के विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालता है. बैंकों के लिए, एनआरआई बैंकिंग जमा, राजस्व और वैश्विक विस्तार के अवसरों का एक विश्वसनीय स्रोत प्रदान करती है.

जैसे-जैसे दुनिया तेजी से आपस में जुड़ती जा रही है, एनआरआई और भारतीय बैंकों के बीच साझेदारी मजबूत होने की ओर अग्रसर है. यह सहयोग न केवल व्यक्तिगत हितधारकों को लाभान्वित करता है बल्कि एक समृद्ध और लचीली भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव भी रखता है. एनआरआई बैंकिंग वास्तव में भारतीय बैंकों के लिए समृद्धि का एक प्रमुख स्तंभ है, और आने वाले वर्षों में इसका महत्व बढ़ता ही रहेगा.

आर. नारायणन
यू.बी.के.सी., बेंगलूरु

अंत: रण – महारण

छिड़ा एक रण है !
न धरती डोली,
न अम्बर गर्जे,
फिर भी यह महारण है.

एक ओर हर कोई है,
दूसरी तरफ भी वे ही हैं,
सब के सब है इस रण का हिस्सा,
सब का अपना अपना किस्सा.

रणांगन तेरा अंतर मन है,
लड़ने वाला तू स्वयं है,
लड़ाई - तेरी खुद की अच्छाई की
तेरी खुद की बुराई से.

एक ओर है पुण्य ज्योति, सत्य का प्रकाश,
दूज ओर है कुटिल तमस, स्वार्थ की आस.
पुण्य कहे, "प्रेम लुटाओ,
सत्य, दया की राह अपनाओ.

हर सांस में दीप जलाओ,
सदाचार से जीवन सजाओ."
पर कुटिलता मन को बहकाए,
मोह-माया के जाल बिछाए.

"यह दुनिया छल और प्रपंच है,
सिर्फ स्वार्थ से ही तेरा मंच है."
शस्त्र-शास्त्र दोनों है तेरे अंदर,
यह समर है बड़ा भयंकर.

हर क्षण, हर सोच, हर एक बात,
तय करती है किसकी होगी मात.
तेरी अच्छाई जीतेगी,
तो मानवता जीतेगी.

वरना होगा पाशवता का खेल,
किसी का किसी से न होगा मेल,
नरक के द्वार हम खुद खोलेंगे,
कर्मों की तीर शैय्या में सोएंगे.

श्रीकांत भट्टड़
धमतरी शाखा,
क्षे.का., रायपुर

स्विफ्ट – विश्वव्यापी वित्तीय दूरसंचार सोसाइटी

स्विफ्ट यानी विश्वव्यापी वित्तीय दूरसंचार सोसाइटी (SWIFT - Society for Worldwide Interbank Financial Telecommunications) एक वैश्विक वित्तीय नेटवर्क है जो दुनियाभर में बैंकों और वित्तीय संस्थानों के बीच सुरक्षित और तेज़ संदेश प्रेषण प्रणाली के रूप में कार्य करता है. स्विफ्ट का मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय वित्तीय लेन-देन को सरल, तेज़ और सुरक्षित बनाना है. यह प्रणाली वित्तीय संस्थानों के बीच संदेशों और डेटा के आदान-प्रदान को सहारा देती है, जिससे दुनिया भर में मुद्रा और वित्तीय समन्वय संभव हो पाता है. 1973 में इसकी स्थापना बेल्जियम के ब्रुसेल्स शहर में की गई थी, और तब से लेकर अब तक स्विफ्ट वित्तीय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. आज स्विफ्ट का नेटवर्क लगभग 200 देशों में फैला हुआ है, और इसमें 11,000 से भी अधिक वित्तीय संस्थान जुड़े हुए हैं. इसके जरिए हर दिन लाखों वित्तीय संदेशों का आदान-प्रदान होता है. जब विश्व में बैंकिंग और वित्तीय लेन-देन के लिए एक ऐसे प्रणाली की आवश्यकता महसूस की गई जो तेज़, सुरक्षित और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर सके. इससे पहले बैंकों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान टेलीफोन, टेलिक्स और फैक्स के माध्यम से होता था, जो बहुत ही धीमा और असुरक्षित था. स्विफ्ट के संस्थापक बैंकों ने इस समस्या का समाधान स्विफ्ट नेटवर्क के रूप में किया, जो वित्तीय संदेशों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से भेजने और प्राप्त करने के लिए एक सुरक्षित और तेज़ तरीका प्रदान करता है.

पहला स्विफ्ट संदेश 1977 में भेजा गया था, स्विफ्ट लगातार अपने नेटवर्क और तकनीकी ढांचे में सुधार कर रहा है. इसके हालिया अपडेटों में ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग, ISO 20022 मानक का पालन, और डिजिटल मुद्राओं के साथ इंटरऑपरेबिलिटी शामिल हैं.

स्विफ्ट का कार्य और संचालन: स्विफ्ट का मुख्य कार्य विभिन्न बैंकों, वित्तीय संस्थाओं और अन्य वित्तीय बाजारों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान करना है. स्विफ्ट का नेटवर्क न केवल बैंकिंग संदेशों के लिए, बल्कि विभिन्न प्रकार के वित्तीय लेन-देन जैसे भुगतान, मूल्यवृद्धि, स्वैप और अन्य वित्तीय उपकरणों के आदान-प्रदान के लिए भी उपयोग किया जाता है.

संदेश प्रेषण (Message Transmission): स्विफ्ट एक उच्च-स्तरीय संदेश प्रेषण प्रणाली है. जब कोई वित्तीय संस्था या बैंक अपने ग्राहक से भुगतान प्राप्त करता है या कोई लेन-देन करता है, तो इसके लिए एक संदेश भेजने की आवश्यकता होती है. स्विफ्ट इस संदेश को सुरक्षित रूप से एक बैंक से दूसरे बैंक तक भेजने का कार्य करता है.

सुरक्षा (Security): स्विफ्ट नेटवर्क का प्रमुख लाभ इसकी सुरक्षा है. इसके लिए एक मजबूत एन्क्रिप्शन प्रणाली का उपयोग किया जाता है, जिससे सभी डेटा और संदेश पूर्ण रूप से सुरक्षित रहते हैं. स्विफ्ट के संदेशों में डेटा की संपूर्णता और गोपनीयता सुनिश्चित होती है.

सूचना का आदान-प्रदान (Information Exchange): स्विफ्ट नेटवर्क न केवल भुगतान संदेशों को भेजने के लिए उपयोग किया जाता है, बल्कि यह अन्य प्रकार की वित्तीय जानकारी का आदान-प्रदान भी करता है, जैसे कि विदेशी मुद्रा दरें, ब्याज दरें, बाण्ड और अन्य वित्तीय उपकरणों के मूल्य, आदि.

अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग (International Banking): स्विफ्ट का नेटवर्क बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अंतरराष्ट्रीय भुगतान और अन्य वित्तीय लेन-देन को पूरा करने के लिए आवश्यक संचार प्रदान करता है. वैश्विक स्तर पर स्विफ्ट नेटवर्क का उपयोग अंतरराष्ट्रीय व्यापार, व्यापारिक भुगतान, और विदेशी मुद्रा संचालन में व्यापक रूप से किया जाता है.

स्विफ्ट नेटवर्क की संरचना और कार्यप्रणाली: स्विफ्ट एक केंद्रीकृत नेटवर्क है जिसमें विभिन्न बैंकों, वित्तीय संस्थाओं और अन्य संगठनों के मध्य संदेशों का आदान-प्रदान होता है. स्विफ्ट का नेटवर्क मुख्य रूप से दो घटकों में बाँटा जाता है:

- **स्विफ्ट संदेश:-** ये संदेश वित्तीय लेन-देन से संबंधित होते हैं, जैसे कि बैंक अंतरण, भुगतान, और अन्य वित्तीय आदेश. इन संदेशों में आमतौर पर बैंक खाता विवरण, राशि, लेन-देन की तारीख, और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी होती है.
- **स्विफ्ट गेटवे:-** गेटवे वह प्रणाली है जिसके माध्यम से बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के सिस्टम स्विफ्ट नेटवर्क से जुड़ते हैं. यह गेटवे नेटवर्क से संदेशों के आदान-प्रदान को नियंत्रित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी संदेश सही, सुरक्षित और समय पर पहुंचें.

गिरीश कुमार पाठक
डी.आई.टी.,
कें.का., मुंबई

चक्षु पोर्टल

टेलीकॉम धोखाधड़ी के खिलाफ एक सशक्त कदम

संचार साथी पोर्टल भारत सरकार के दूरसंचार विभाग की एक पहल है, जिसका उद्देश्य मोबाइल उपभोक्ताओं को सशक्त बनाना, उनकी सुरक्षा को मजबूत करना और नागरिक केंद्रित पहलों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है. इस पोर्टल के माध्यम से कई सेवाएं प्रदान की जाती हैं, जिनमें से एक है चक्षु.

चक्षु का शाब्दिक अर्थ होता है "आँखें". चक्षु एक सुविधा है जो नागरिकों को संदिग्ध धोखाधड़ी संचार की रिपोर्ट करने में मदद करती है. यह सुविधा उन संचारों को रिपोर्ट करने के लिए है जो साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, या किसी अन्य अवैध उद्देश्य के लिए किए जाते हैं. उदाहरण के लिए, बैंक खाता, भुगतान वॉलेट, सिम, गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन, केवाईसी अपडेट, सरकारी अधिकारी या रिश्तेदार के रूप में प्रतिरूपण, आदि से संबंधित संचार.

चक्षु पोर्टल नागरिकों को निम्नलिखित से संबंधित संदिग्ध धोखाधड़ी संचार को रिपोर्ट करने की सुविधा प्रदान करता है:

1. बैंक खाता
2. भुगतान वॉलेट
3. सिम
4. गैस कनेक्शन
5. बिजली कनेक्शन
6. केवाईसी अपडेट
7. सरकारी अधिकारी या रिश्तेदार के रूप में प्रतिरूपण

चक्षु पोर्टल वित्तीय धोखाधड़ी या साइबर अपराध मामलों को नहीं संभालता है. वित्तीय धोखाधड़ी के मामले में, शिकायतें 1930 पर या https://www.cybercrime.gov.in के माध्यम से दर्ज की जानी चाहिए.

चक्षु पोर्टल की मुख्य विशेषताएं:

1. संदिग्ध धोखाधड़ी संचार की रिपोर्टिंग:
- नागरिक संदिग्ध धोखाधड़ी संचार की रिपोर्ट कर सकते हैं जो कॉल, एसएमएस, या व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त होते हैं.
- उदाहरण: बैंक खाता, भुगतान वॉलेट, सिम, गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन, केवाईसी अपडेट, सरकारी अधिकारी या रिश्तेदार के रूप में प्रतिरूपण, आदि.

2. अनचाही व्यावसायिक संचार की रिपोर्टिंग:
- नागरिक अनचाही व्यावसायिक संचार (स्पैम) को रिपोर्ट कर सकते हैं जो उनकी सहमति के बिना प्राप्त होते हैं.
- यह रिपोर्टिंग टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया के नियमों के अनुसार की जाती है.

3. वायरलाइन इंटरनेट सेवा प्रदाता की जानकारी:
- नागरिक अपने क्षेत्र में वायरलाइन इंटरनेट सेवा प्रदाताओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

4. अंतरराष्ट्रीय कॉल की रिपोर्टिंग:
- नागरिक उन अंतरराष्ट्रीय कॉल को रिपोर्ट कर सकते हैं जो भारतीय नंबर (+91) से प्राप्त होती हैं.

चक्षु पोर्टल का उद्देश्य नागरिकों को सुरक्षित और जागरूक बनाना है, जिससे वे अपने मोबाइल और संचार से संबंधित सुरक्षा को बढ़ा सकें.

चक्षु पोर्टल के कुछ प्रमुख लाभ:

1. **धोखाधड़ी रिपोर्टिंग:** नागरिक संदिग्ध कॉल, एसएमएस, या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त संदेशों को रिपोर्ट कर सकते हैं. इससे धोखाधड़ी गतिविधियों की पहचान और उन्हें जल्दी रोकने में मदद मिलती है.
2. **डिजिटल इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म के साथ एकीकरण:** यह पोर्टल डिजिटल इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म के साथ मिलकर काम करता है, जो टेलीकॉम सेवा प्रदाताओं, कानून प्रवर्तन एजेंसियों, बैंकों और वित्तीय संस्थानों के बीच वास्तविक समय में इंटेलिजेंस साझा करने की सुविधा प्रदान करता है.
3. **साइबर धोखाधड़ी में कमी:** सक्रिय रिपोर्टिंग और पुन: सत्यापन प्रक्रियाओं को सक्षम करके, यह पोर्टल साइबर धोखाधड़ी की घटनाओं को काफी हद तक कम करने में मदद करता है. इसने पहले ही लगभग ₹1,000 करोड़ बचाने और धोखाधड़ी लेनदेन से जुड़े ₹1,008 करोड़ को फ्रीज करने में मदद की है.
4. **सहयोगात्मक दृष्टिकोण:** यह पोर्टल टेलीकॉम कंपनियों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों और वित्तीय संस्थानों सहित कई हितधारकों को एक साथ लाता है, जिससे टेलीकॉम धोखाधड़ी के खिलाफ एकीकृत रक्षा प्रणाली बनाई जाती है.
5. **उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस:** यह पोर्टल उपयोगकर्ता के अनुकूल डिज़ाइन किया गया है, जिससे नागरिकों के लिए संदिग्ध गतिविधियों को रिपोर्ट करना और साइबर अपराध के खिलाफ लड़ाई में योगदान देना आसान हो जाता है.

चक्षु पोर्टल टेलीकॉम धोखाधड़ी और स्पैम के खिलाफ लड़ाई में एक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में खड़ा है. नागरिकों को संदिग्ध गतिविधियों को रिपोर्ट करने और विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोगात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए, यह एक सुरक्षित डिजिटल वातावरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतीक है. इस नवाचारी प्लेटफॉर्म को अपनाकर, हम सामूहिक रूप से एक अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय संचार परिदृश्य में योगदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि डिजिटल सीमाएं सभी के लिए अवसर और सुरक्षा का स्थान बनी रहें.

अरूण कुमार गुप्ता
जेड.एल.सी., मंगलूरु

सीएसआर गतिविधियां

दिनांक 04.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा महाकुंभ 2025 के अवसर पर संगम स्थल पर 1000 नाविकों, सफाई कर्मियों और जरूरतमंदों को कंबल वितरित किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी चिदानंद स्वामी, श्री धीरेन्द्र जैन, अंचल प्रमुख, वाराणसी, श्री संतोष कुमार, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 05.02.2025 को कैंटोनमेंट बोर्ड के छावनी चिकित्सालय, प्रयागराज के कैंसर विभाग भवन का उद्घाटन सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया तथा क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज द्वारा सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत चिकित्सालय को एक एडवांस लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस प्रदान किया गया. इस अवसर पर ब्रिगेडियर रोबी कपूर, अध्यक्ष, छावनी बोर्ड एवं स्टेशन कमांडर, मो. समीर इस्लाम, मुख्य अधिशासी अधिकारी, डॉ. सिद्धार्थ पाण्डेय, निदेशक, छावनी चिकित्सालय, श्री धीरेन्द्र जैन, अंचल प्रमुख, वाराणसी, श्री संतोष कुमार, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 15.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा यूनीक होम बालिक अनाथाश्रम, जालंधर में बालिकाओं को स्कूल ड्रेस तथा टीवी प्रदान किया गया. इस अवसर पर श्री मनोज कुमार, अंचल प्रमुख तथा श्री गुरदीप सिंह, क्षेत्र प्रमुख,जालंधर सहित बैंक के स्टाफ तथा अनाथाश्रम के सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 20.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, बोरीवली की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ बोरीवली स्थित मुंबई पब्लिक स्कूल, चिकुवडी में मिनी साइंस केंद्र की स्थापना राशि हेतु चेक प्रदान किया गया. इस अवसर पर श्री अभिजीत बसाक, अंचल प्रमुख, श्री बी. पट्टनायक, यूबीएसएफ़ सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 01.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत चिल्ड्रेन नेशनल इंस्टीट्यूट, अनाथालय, प्रयागराज को श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक द्वारा सोलर पैनल प्रदान किया गया और रविन्द्रनाथ गौर आनंद वृद्धाश्रम, प्रयागराज में कंबल वितरण किया गया. इस अवसर पर श्री धीरेन्द्र जैन, अंचल प्रमुख, वाराणसी, श्री संतोष कुमार, क्षेत्र प्रमुख सहित बैंक के स्टाफ सदस्य और वृद्धाश्रम के सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 28.02.2025 को सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत कुद्रोली गोकर्णाथेश्वर क्षेत्र मंदिर में श्री रामसुब्रमणियन एस., श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशकगण द्वारा श्रीमती रेणू के नायर, अंचल प्रमुख की उपस्थिति में मंगलूरु अंचल के अंतर्गत 3001वीं ई-हुंडी की स्थापना की गई.

दिनांक 29.01.2025 को अंचल कार्यालय, रांची की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत रांची स्थित पहाड़ी मंदिर को श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख, श्री रवि किशोर बदुला, सहायक महाप्रबंधक द्वारा वाटर कूलर एवं वाटर प्यूरिफायर प्रदान किया गया.

दिनांक 17.03.2025 क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत एलबीएस इंस्टिट्यूट ऑफ टेकनालॉजी फॉर वूमेन में स्थापित स्मार्ट लैब का उद्घाटन श्रीमती रेणू के. नायर, अंचल प्रमुख, मंगलूरु द्वारा किया गया. साथ हैं श्रीमती इशिता रॉय, प्रमुख सचिव, केरल सरकार, श्री अब्दुल रहमान, निदेशक, एलबीएस, श्री सुजित एस तारीवाळ, क्षेत्र प्रमुख.

दिनांक 26.03.2025 को अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत श्रीमती शालिनी मेनन, अंचल प्रमुख द्वारा जीएचसीसीडी को स्ट्रेचर प्रदान किया गया. इस अवसर पर श्री आर. नरसिम्हा कुमार, क्षेत्र प्रमुख तथा अस्पताल के सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 08.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, पटना की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत पालीगंज, पटना स्थित सूर्य मंदिर को वॉटर कूलर भेंट करते हुए श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख, रांची.

दिनांक 13.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, हासन द्वारा सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत गवर्नमेंट हाई स्कूल, कुवेंपुनगर, हासन को टेबल, कुर्सी और अलमारी प्रदान की गई. इस अवसर पर श्री अनिल कुलकर्णी, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 23.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा की कमला नगर शाखा द्वारा सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत आयोजित रक्तदान शिविर में श्री देवेन्द्र कुमार चौबे, क्षेत्र प्रमुख, आगरा उपस्थित रहे.

दिनांक 12.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, अनंतपुर की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत श्री सी.एच.वी.एन भास्कर रॉव, अंचल प्रमुख, विजयवाडा, श्री जितेंद्र कुमार मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, द्वारा समदृष्टि क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल के दिव्यांग हेतु 05 व्हील चेयर और10 सिलाई मशीन प्रदान किया गया. साथ हैं श्री आर. यदु भूषण रेड्डी तथा श्री के.श्रीनिवास उप-क्षेत्र प्रमुख एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

Agility Quotient in Customer Service

During our school and college days, we did every IQ (intelligence quotient) test we could lay our hands on and competed on scores. It was not surprising as at that time, society at large believed that geniuses would excel at everything in life. Be it Academic excellence, financial success, better health and even sports where physical endurance rules apply for most: A high IQ guaranteed them all.

By the time we entered the job scenario, the hype around IQ had dimmed, as EQ (emotional quotient) entered the picture. Everyone turned their eyes towards it and dumped IQ. We learnt that a high IQ might be good academically, but it wouldn't help us get ahead in our professional and personal lives. Because real intelligence required more than good scores in exams or tests; it needed empathy, maturity and the ability to identify and embrace one's own feelings as well as those of everyone we are surrounded with. We could no longer function as an isolated body, no matter how well informed, and desirous to succeed.

Nowadays, there's a new Q on the block: the adaptability or agility quotient (AQ) which measures our ability to quickly respond and adjust to new situations and challenges in the ever-changing dance of life. It was identified first by Harvard Business Review, back in 2011, as the "new competitive advantage", but the changes brought and demanded by the COVID-19 pandemic have cemented its importance.

It is difficult to measure change when everything around us is in flux. And lately, change has become the new normal: our industry has changed, our customer needs have changed, our work environment has changed and with the introduction of millennials and zennials in work force, the dimension of work force has also changed. The change often begins where our comfort zone ends. Presently with the pace of change, the comfort zone is destined to be breached. And then the question arises, "Am I doing enough in my business to keep up with the pace?"

Agility, being able to adjust to new conditions quickly, is the core of business evolution, yet business leaders often struggle to determine when to make a change and what actions to take. The answer is closer than we might imagine: "Ask your customers". The boardrooms of the businesses are always serious on customers but in my experience the seriousness vanishes at the place of execution. Resultantly, the customers don't participate in shaping your business and restrict themselves to their dealings only.

It is true that customers may not tell us when to launch new services or exactly what they want. However, if we open the dialogue, they will often talk about their plans, their challenges and their worries. Reading between these lines can help us decide how to respond, provide service and identify what may be missing from our solutions.

A few tips to help with customer insights:

1. **Grievance handling mechanism:** Banks have digitised their customer grievance mechanism. Digitisation and uses of AI algorithms have quickened the process of resolution but missing human element in the process should be a matter of concern. While resolving grievances through automation at mass level the system should be trained to refer certain cases to the fairly higher level for direct conversation with customers.
2. **Select customers for interactions:** It is needless to say, select your targets wisely. Select customers with whom you are most uncomfortable, next the customers who are most profitable, then the customers those you love working with.
3. **Perk up with a largesse:** Offer to treat the customers for lunch or coffee to talk about business relationship. Make them feel that they are important to you.
4. **Enquire:** Ask about their business plans in the next 12 months, about their goals, forecasts, spending plans and any major financial decisions or assistance they require in future.
5. **Practice inquisitiveness:** Since the goal is to really find a solution for betterment of the organisation, be inquisitive to hear more. Use follow-up technique for elaborating the short answers.
6. **Dig out a "dream view":** Take the conversation to such a level that a customer starts to express / describe the products or service he/she is looking for.
7. **Get feedback:** Also seek their thoughts on your products, services and people.

8. **Aim for maximum:** Try to include maximum in the conversation before making any response.

Customer conversations are mutually beneficial. They can help deepen relationships and build trust with our customers while helping us navigate the changes better. Customer conversations can also strengthen the relationship and open the door for additional referrals thus increasing sales opportunities.

During conversations we may find that the customers are following similar themes. This makes sense as the majority of customers are having similar needs. But it's their details and personal stories that will help us to navigate change and come up with new products and services.

Conversations with customers will help us to increase our agility to:

Understand our value- During conversations our customers may reveal some eye-opening findings about certain products which they love or about certain strengths of human resources which are otherwise not known to us. Understanding these values allow us to shift our strategies towards driving our products and services more aligned to the likings of customers. Our agility quotient is based on feeling confident about a potential change. Getting customer input or validation during conversations brings that confidence.

Stand out in a crowded marketplace- There are many players offering similar services in the crowded market, it is possible that we might be getting nickled and dimed. Nowadays we find that our competition is no longer the brick-and-mortar companies but rather dozens of online firms ready to scoop up clients with digital offerings and products.

This challenge is critical and needs urgent adjustments to stay competitive.

By conversing with our customers who are already on board, we may learn what differentiates us or our approach—and be able to use that for staying afloat in the market. Further, we may learn what we need to distinguish ourselves from others in the industry.

Experiment incrementally - Make small and incremental changes, what's amazing about small changes are that they can reduce the risk factors in adaptability. Customers may speak about major changes in product line and services. That may seem necessary also, but major change may bring panic, may be expensive and time consuming. This may affect adaptability also as it will be big departure from the current situation. Instead, the micro-change approach allows us to experiment, evolve, iterate and optimize.

When things are going well in business, it's easy to get bogged down by operations and to avoid risk. However, agility is not about disrupting the status quo. Rather, it is about proactively anticipating what our company will need to do to stay competitive, relevant and profitable. By conversing with our best customers, we learn about their thought process and plans for their future, allowing us to shift our own strategic thinking and plans.

Ambarish Kumar Singh
DGM,
C.O., Mumbai

फूल गुलमोहर

वृक्ष की चोटियों पर लाल सुर्ख
सबकी आंखों को आकर्षित करता,
सूर्य की रोशनी से प्रतियोगिता,
बसंत उत्सव में अपनी चरम पर
हम सबको रोमांचित करता मनोहर.
फूल गुलमोहर.

शुष्क वातावरण में भी पुष्पित,
अट्टालिकाओं से अट्टहास करता,
अपने सौंदर्य पर इतराता, मुस्कुराता,
विहग वृंद को बुलाता, बैठाता,
हर टहनियों पर चल-चलकर,
फूल गुलमोहर.

भ्रमर, तितलियां भी उड़ आती.
कभी इधर, कभी उधर शर्माती,
परागों में डंक घुसाकर हंसती,
जीवन का यही आनंद, कहती,
निराले इस क्षण को देखें जी भरकर,
फूल गुलमोहर.

जीवन के लिए सबक, सदैव खुश रहो,
गुलमोहर की तरह जिंदगी जी कर,
हर चुनौतियों से संघर्ष करके,
बढ़ो आगे बिना रुके, मार्ग पर.
सबक है सफल जीवन का जीवन भर.
फूल गुलमोहर.

अभिनय कुमार
एन.पी.सी., पटना

Agile Methodology

Introduction and Application in Banking

Agile methodology, originally developed for software development, has now become a popular framework for project management across various industries. The primary goal of Agile is to prioritize flexibility, collaboration, and customer-centricity, enabling teams to quickly adapt with changing requirements and deliver continuous value. It is an iterative process—a dynamic and practical approach based on improvement and feedback—where small, incremental parts of a product or project are developed and delivered sequentially.

Agile is significantly different from traditional project management systems like the Waterfall model, where each phase begins only after the previous phase is completed, and the product or service is delivered all at once at the end. In today's rapidly changing business environment, particularly in sectors like banking, Agile has emerged as an invaluable tool to enhance efficiency, foster innovation, and respond swiftly to market demands.

Principles of Agile

Agile is founded on four core values and twelve principles, as outlined in the **Agile Manifesto**. These core values are:

- **Prioritizing individuals and interactions over processes and tools:** Emphasizes the importance of human collaboration and teamwork over strict adherence to processes or reliance on tools.
- **Focusing on working software over comprehensive documentation:** Encourages delivering functional outputs rather than spending excessive time on documentation.
- **Customer collaboration over contract negotiation:** Stresses ongoing collaboration with the customer rather than rigidly adhering to contractual obligations.
- **Responding to change over following a plan:** Promotes adaptability and flexibility in the face of changing requirements, rather than rigidly sticking to a pre-defined plan.

These values underscore the significance of flexibility, customer involvement, and continuous feedback. Agile teams typically work in sprints, which are time-bound cycles lasting 2–4 weeks. At the end of each sprint, a functional segment of the product or service is delivered. This iterative process allows teams to receive ongoing feedback, making project development more efficient and effective.

The Need for Agile in Banking

The banking sector, where regulatory compliance, risk management, and customer trust are paramount, is increasingly adopting Agile methodologies. With the shift toward digital banking and evolving customer expectations, there is a growing need for a dynamic approach to innovation. Traditional systems often struggle to keep pace with rapid product delivery and changes in regulations, which is where Agile proves invaluable.

Some of the key challenges faced by banks today include:

- Integration of fintech innovations
- Growing competition from digital-native companies
- A changing regulatory landscape
- Demand for real-time customer services

To address these challenges, many banks are adopting Agile practices to introduce flexibility into their product development cycles, streamline internal processes, and foster innovation. This enables them to adapt swiftly to market demands and regulatory changes while enhancing customer satisfaction.

Applications of Agile in Banking

i. **Digital Transformation Initiatives:** Agile is widely used in digital transformation efforts within banking. Banks are focusing on customer-centric digital products such as mobile banking apps, digital wallets, and online lending platforms. Agile enables development teams to release these digital products iteratively, gathering user feedback and adjusting features to align with market demands.

For instance, a bank may launch an initial version of a mobile banking app with basic functionalities like balance inquiries and fund transfers. Subsequent updates can include features like investment tracking or integration with third-party financial services. This process ensures continuous improvement and sustained customer engagement.

ii. **Enhancing Customer Experience:** Agile methodology emphasizes customer interaction and feedback, which significantly contributes to improving the customer experience in banking. By maintaining constant communication with customers, banks can ensure that the products and services they develop meet customer

expectations. Agile teams can quickly act on user feedback, delivering improvements or new features in much less time than traditional methods.

For example, a new loan approval system can be developed using Agile, with the initial version tested with real customers. This allows banks to quickly enhance the loan approval process and overall user experience.

iii. **Regulatory Compliance and Risk Management:** In a heavily regulated industry like banking, implementing regulatory changes can be complex. Agile offers a method to implement these requirements incrementally, ensuring compliance while minimizing risks.

Agile's focus on transparency and collaboration also plays a critical role in risk management. With smaller development phases and regular review meetings (called "scrums"), potential risks are identified early. This proactive approach helps banks avoid significant problems later and maintain compliance effectively.

iv. **Innovation in Product Development:** Innovation is crucial in the rapidly evolving financial landscape. Agile's iterative nature fosters innovation by allowing teams to experiment and learn from their mistakes. Whether it's a new credit card product, launching a financial app, or building AI-driven customer service tools, Agile enables banks to test solutions quickly in the market and refine them based on real feedback.

Agile also ensures faster time-to-market for new banking products, which is critical in today's competitive environment, where fintech companies and neobanks often outpace traditional banks in introducing innovations.

v. **Optimization of Internal Processes:** Beyond customer-facing products, Agile can also improve internal operations within banking. For instance, back-office processes such as loan approvals or fraud detection systems can be managed using Agile principles, leading to increased efficiency.

Agile teams can experiment with new workflows and technical solutions in short sprints, improving productivity and streamlining processes.

Challenges in Implementing Agile in Banking

While Agile offers numerous benefits, implementing it in the banking industry presents significant challenges.

i. **Dependency on Legacy Systems;** A major hurdle is the banking sector's reliance on traditional legacy systems, which are not easily compatible with Agile's flexible and iterative nature. These systems often require extensive restructuring or modernization before Agile practices can be effectively implemented.

ii. **Complex Hierarchical Structures:** Banks typically operate with complex hierarchical structures that conflict with Agile's collaborative, flat-team setups. Agile thrives on a culture of open communication and cross-functional teams, which can be difficult to establish within traditional hierarchical environments.

iii. **Cultural Shift:** Agile demands a mindset shift—from focusing on long-term, static outcomes to embracing flexibility and continuous improvement. Many employees in the traditional banking environment may struggle to adapt to this change, viewing it as a disruption to established norms and workflows.

iv. **Regulatory Constraints:** The iterative nature of Agile can sometimes clash with stringent regulatory requirements in banking. Banks must balance the need for rapid delivery with the obligation to ensure that new products or features meet all necessary compliance checks. This can slow down iterations and introduce delays, reducing the agility of the process.

Agile methodology has emerged as a vital tool for enhancing innovation and efficiency in the banking industry. Its iterative and customer-centric processes equip banks to adapt to rapidly changing market conditions and evolving customer needs. However, challenges such as reliance on legacy systems, cultural resistance, and regulatory constraints must be addressed to fully realize the potential of Agile in banking.

With the right approach and strategies, banks can overcome these barriers and leverage Agile methodology to remain competitive and deliver exceptional customer experiences. Agile, when implemented thoughtfully, can become a cornerstone for the future of banking innovation and operational excellence.

Aditya Srivastva
ACOE,
C.O., Mumbai

Power of Financial Health Segmentation

India's banking sector is booming, with 80% of its massive 1.4 billion population already using banking services. However, simply dividing customers by age, income, or location isn't enough anymore. To truly thrive, banks need to understand their customers' financial health. Think of it this way: a young professional and a retired senior citizen might both have similar incomes, but their financial needs and worries are completely different.

A PwC India report highlights that 65% of banks leadership are prioritizing customer-centric strategies, and financial health at the heart of transformation shift. Why? Because personalization really works and the same is highlighted by McKinsey, that personalized experiences can boost customer retention by 20% and revenue by 15%. For banks, focusing on financial health can lead to a significant 10-15% increase in profitability. It also builds stronger customer loyalty and helps banks stay competitive against rising fintechs.

Beyond fintech giants, neo-banks and global players are entering India's ₹500 lakh crore banking market. For instance, neo-banks have captured 8% of digital-first customers in urban India, pushing traditional banks to adopt deeper segmentation. Financial health focus offers a 10-15% profitability edge, critical for staying ahead in this crowded landscape.

This article provides a practical roadmap for Banks to use financial health segmentation and explore how to tailor products, leverage technology, and build a culture of financial wellness for sustainable growth.

What Exactly Is Financial Health, and How Do We Measure It?

Financial health goes beyond income (average ₹2.5 lakh, NSSO 2023) or CIBIL scores (710 average, 2024). It's about holistic insights: 48% of households can't manage a ₹30,000 emergency, while household debt hit ₹75 lakh crore with a 35% debt-to-income ratio. Emerging metrics like Buy Now, Pay Later (BNPL) usage ₹3 lakh crore in 2024 and wearable payment trends add granularity. Banks leveraging UPI data (₹160 lakh crore projected for FY25, NPCI) and AI-driven behavioural analytics can now assess financial health in real-time. To assess Bank's need to consider following signs:

- **Cash Flow Management:** Nearly half (48%) of Indian household's struggle to cover a ₹30,000 emergency. This shows how vulnerable many are to unexpected expenses.
- **Debt Management:** Household debt in India has reached a staggering ₹75 lakh crore in 2024 (RBI), with a debt-to-income ratio of 35%. This indicates a significant burden for many families.
- **Savings:** Only 40% of Indians have enough savings to cover three months of expenses. This lack of a safety net is a major concern.
- **Financial Literacy:** A concerning 73% of Indians lack basic financial knowledge which highlights the need for better financial education.
- **Financial Resilience:** 30% of Indians couldn't withstand a one-month income loss. This shows how fragile many financial situations are.

To accurately measure financial health, Banks can explore established frameworks such as Financial Health Network's or analyse their own data, such as UPI transaction patterns, which reached ₹153 lakh crore in 2024. The good news is that real-time data adoption by Bank's has increased by 35% since 2020, thanks to APIs and advanced analytics.

Five Key Customer Segments Based on Financial Health

Let's walkthrough the five distinct segments:

- **Thriving (14%):** High earners (₹12 lakh+ annually by 2025, adjusted for inflation) with 6+ months' savings. Their ₹18 lakh crore market potential reflects an 85% investment rate (SEBI). For the Thriving, ESG-linked mutual funds (₹2 lakh crore AUM, AMFI) and green loans are key.
- **Secure (32%):** Earning ₹6-11 lakh annually, with ₹22 lakh crore potential. UPI usage now at 92% (NPCI). The Secure segment benefits from gamified savings apps (e.g., 25% engagement boost, FinTech India). The Secure segment heavily uses UPI (90% usage).
- **Vulnerable (26%):** Average ₹1.2 lakh unsecured debt, ₹11 lakh crore market. Microloan reliance rose to 52% (SIDBI). Vulnerable segment relies on microloans (50% uptake SIDBI).

- **Stressed (18%):** Below ₹2.2 lakh annually with ₹6 lakh crore potential. Vulnerable and stressed segments need debt restructuring tied to climate-resilient livelihoods (₹50,000 crore pilot, NABARD).
- **Emerging (10%):** Young adults with ₹3.5 lakh crore potential. Savings adoption grew to 35% with digital nudges (NITI Aayog). Emerging segment responds to reward-based education platforms (60% uptake among 18-25 year olds).

Total market potential now exceeds ₹60 lakh crore, driven by 7% GDP growth projection for 2025. These segments, totalling a massive ₹53 lakh crore, exhibit diverse financial behaviours.

Tailored Products and Services:

Today's customers demand personalized experiences, with 72% expecting tailored services, Banks can cater to each segment by adopting the following:

- **Thriving:** Offer wealth management (₹50 lakh crore AUM, AMFI) and premium services like priority banking.
- **Secure:** Provide UPI-linked budgeting apps (80% adoption among 30-50 age group) and auto-savings features (average ₹2,000/month).
- **Vulnerable:** Offer microloan restructuring (₹2.5 lakh crore market) and financial literacy workshops.
- **Stressed:** Implement hardship moratoriums (15% of borrowers used in 2023) and link them to PMJDY aid.
- **Emerging:** Provide no-frills accounts (50% growth via Jan Dhan) and educational apps.

Digital delivery is crucial, as 70% of banking interactions occur online. Banks must ensure seamless user experiences across apps like BHIM and their online portals.

Leveraging Technology:

AI and analytics usage are up by 50% since 2021, with blockchain securing 15% of open banking transactions, Voice-based AI chatbots, like SBI's SIA, now serve 10% of rural queries in regional languages, Mobile app usage hit 92% weekly, while cybercrime costs rose to ₹1.7 lakh crore, underscoring encryption needs. Key to engage customers, Banks must have following tools included:

- **Dashboards:** 65% of users engage with personalized insights.
- **Predictive Analytics:** Reduces customer churn by 20% by identifying risks in segments like the Stressed.
- **Chatbots:** Handle 75% of customer queries
- **Mobile Apps:** 90% of customers use apps weekly, with features like UPI integration.
- **Data security** is paramount, as cybercrime costs Indian banks ₹1.5 lakh crore annually. Robust encryption and compliance with RBI's data norms are essential.

Building a Culture of Financial Wellness

Banks must embed financial health into their core values to create a culture of financial wellness. Following are key insights highlighting the same:

- **Mission Alignment:** 75% of top Indian banks tie their purpose to profit.
- **Employee Advocacy:** HDFC Bank's 2023 wellness training boosted staff engagement by 25%.
- **Partnerships:** Collaborate with NITI Aayog and NGOs, as seen with 150+ banks joining PMJDY initiatives.
- **Content:** 70% of customers value educational resources, such as videos on SIPs and loan management.

Measuring Success and Optimizing Impact

Success goes beyond revenue and optimizing impact need measuring key performance indicators (KPIs), which includes:

- **Health Improvement:** 12% average savings increase.
- **Attrition:** 18% reduction with personalization
- **Lifetime Value:** 25% increase with loyalty
- **Satisfaction:** 88% CSAT in tailored programs

A continuous feedback loop, used by 85% of leading banks, is vital for refinement.

Case Studies at a broader level

- **HDFC Bank & Razor pay:** Their 2024 partnership launched a financial health dashboard for MSMEs in the Secure segment, reducing loan defaults by 18% and growing SME deposits by ₹1 lakh crore.
- **Axis Bank:** Digital budgeting tools for the Financially Secure segment led to a 20% reduction in customer churn.
- **Bandhan Bank:** Financial literacy programs for the Financially Emerging segment resulted in a 35% growth in deposit accounts.

- **State Bank of India (SBI):** Their widespread adoption of the Jan Dhan Yojana, and their constant implementation of localized financial literacy programs has made a massive impact on the financially stressed demographic.
- **Kotak Mahindra Bank:** Their focus on building a strong digital ecosystem has allowed them to provide very tailored financial products, and services to all of their customer demographics.

55% of Banks that have adopted financial health segmentation see a Return on Investment (ROI) within 18 months.

Future of Financial Health Segmentation: Trends and Opportunities

RBI's 2025 mandate for financial health reporting (covering 60% of banks) will accelerate adoption. Rural penetration, with 4G reaching 85% of villages and UPI transactions hitting ₹50 lakh crore in rural areas, opens a ₹10 lakh crore untapped market. The landscape is constantly evolving, with key trends shaping the future.

Open Banking has already seen 30% adoption already, enabling seamless data sharing and personalized services. The fintech market, valued at ₹15 lakh crore, offers opportunities for partnerships and innovation. 70% of banks plan to expand AI usage by 2027, including AI-driven loan advice and personalized financial planning. 65% of Gen Z customers want proactive financial guidance, pushing banks to innovate and provide relevant digital tools.

Achieving Sustainable Growth Through Financial Health Focus

A ₹5,000 crore tech investment yields a 15-20% profitability boost within 24 months, with a 14% rise in shareholder returns. Training costs of ₹500 crore annually unlock a 25% staff productivity gain. By 2030, segmentation could empower 300 million Indians financially, fuelling a ₹100 lakh crore banking sector. The benefits are substantial:

- 15-20% growth in profitability.
- Empowered communities with improved financial well-being.
- A loyal customer base ready to navigate India's economic growth.

By embracing financial health segmentation, banks can not only achieve sustainable growth but also play a vital role in building a more financially secure and prosperous nation.

Jeetendra Yadav
Digitization Vertical,
C.O., Mumbai

Blooming Flowers

All that she is

The one who held my hand
Was quiet strength that lit my way.
The one who showed me grace
Left echoes in the words I say.

The one who walks beside me
Is courage, steady, bold, and true.
The one I strive to become
Is love reflected in all they do.

The one I knew as a child
Was warmth that soothed my every fear.
The one I grew beside
Wiped away each heavy tear.

The one I learned with
Spoke truth in silence, soft and wise.
The one I built a life with
Held me strong when storms would rise.

The one I brought to life
Is hope, in every shade of light.
Mother, sister, daughter, friend,
She is nature's soul—endlessly bright.

Woman—
Brave and luminous, breaking through,
Turning even shadows gold.

With quiet fire, you rise anew,
A future's story yet untold.

Your strength may whisper, never loud—
Yet lifts the world, serene and proud.

Sreeram Puppala
R.O., Warangal

Climate Risk: From Obscurity to the Open

"We have met the enemy, and he is us." - Walt Kelly.

Walt Kelly, the creator of the comic strip Pogo had used the phrase in an Earth Day poster in 1970. The phrase and the cartoon emphasized the environmental harm caused by humans. Since then, the idea has been reinforced that humanity is accountable for its own issues, including pollution, deforestation, and climate change. Fast forward to the present times, the enemy within us has jumped out of the closet. Erratic weather, unexpected and frequent seismic activities, unexplained phenomena, and polluted air are laying climate risk bare before our eyes. The question has gradually shifted from why to when. Every activity, be it commercial or non-commercial, is placed under scrutiny, with contributions to global carbon emissions being measured. What comes as a faint ray of hope is the standardization of the measurement mechanism and the bid to collaborate amongst nations for deeper understanding of how climate risk can be mitigated for the survival of the species.

To dig deep, we need to start scraping layer by layer. Understanding climate risk is the first layer. Physical and the Transition Risk are the two categories of climate risk. Physical risk is the visible damage caused by climate change to the ecosystem. Droughts in fertile areas or floods in deserts are classic examples of weather anomalies caused by climate change. On the other hand, transition risk is the risk related to switching over to a low-carbon economy. Transition to lower carbon emissions starts with a change in mindset, followed by overhauling of technical interfaces and operational procedures. This brings in a paradigmatic shift in the organisations culture and operations which can prove to be costlier than the benefit derived. The looming question is: Are we ready for this change?

While the coinage of the term 'ESG' took place only as late as 2004, the establishment of Green House Gas Protocol (GHG Protocol) was developed in the year 1997 by the World Resource Institute (WRI) and the World Business Council for Sustainable Development (WBCSD). This protocol incorporates a globally accepted methodology for quantifying and managing greenhouse gas emissions. It published a set of guidelines on how to measure emission from electricity and energy purchases in the year 2001. As per the latest data available, "in 2023, 97% of disclosing S&P 500 companies have reported to Carbon Disclosure Project using GHG Protocol".

The GHG protocol refers to seven greenhouse gases that are together referred to as CO2 equivalent. These seven greenhouse gases are carbon dioxide (CO2), methane (CH4), nitrous oxide (N2O), hydrofluorocarbons (HFCs), perfluorocarbons (PCFs), sulphur hexafluoride (SF6) and nitrogen trifluoride (NF3). The emission of these gases is measured through tools which are cross-sectoral, country specific, sector-specific, and city-specific with most companies using a combination of at least two tools to cover their emissions. The mode of emissions of these gases is classified under three categories which is named as Scope 1, 2 and 3.

Carbon Emissions Scope 1 refers to the direct GHG emissions. These emission producing sources are under the direct control of the company. For example, the emissions caused by Bank's owned vehicle will come under Scope 1. **Scope 2** measures the emissions generated off-site for production of the electricity used by the organisation and are referred as Indirect GHG emissions. **Scope 3** accounts for other indirect GHG emission generated from all other sources of business activity which are not included under Scope 1 & 2. It encompasses a host of activities including the emissions generated by employees while commuting to office. Fifteen distinct reporting categories bifurcated into upstream and downstream activities have been enumerated to provide guidance to companies on calculating emissions under Scope 3.

A new and evolving form of emission measurement is the **Scope 4**, which refers to 'avoided emissions'. This stems from the creation of more energy-efficient or environmentally friendly products. It is a voluntary metric devised by the World Resources Institute in 2013. It allows companies to demonstrate their role in driving decarbonization beyond their direct footprint by contributing to systemic emission reductions.

Challenges in transitioning to carbon neutral: For Banks, end use of credit facility extended is ascertained based on the documentary evidence provided by the borrowing companies themselves. With climate risk regulatory measures, financing decisions will come under deep scrutiny and face dilemmas. It would require Banks to develop alternate mechanism to ascertain end use of funds in line with the objective, keeping a check on greenwashing. Creating a carbon sink fund may help banks address financing dilemmas; however, it would require collaboration among lenders, which is challenging in today's competitive VUCA world. Quantifying the impact of green investments can be difficult, particularly regarding social and governance factors. Financial institutions may struggle to track and report the long-term non-financial benefits of its investments. As, investors and regulators demand evidence of ESG benefits inadequate measurement tools or frameworks can undermine the perceived value of ESG-focused strategies. Incorporating ESG criteria into traditional financial models is also complex and the need to integrate Climate risk assessments alongside financial risk, may require developing new tools, models, and expertise. Aggressive and unregulated organisations may resort to greenwashing, undermining the system integrity and objective of climate risk mitigation.

Despite the challenges posed by transition risk, Banks coming under regulatory tutelage, cannot absolve from their responsibility and accountability towards the ecosystem. Reserve Bank of India (RBI) has issued a draft disclosure framework on climate-related financial risks, which requires banks to begin reporting on climate risk by April 2025 and to meet specific climate targets by April 2027. The framework encompasses four thematic pillars of disclosure, namely governance, strategy, risk management and metrics & target. The glide path charted by RBI for the financial institutions is as under:

GLIDE PATH	Governance, Strategy, Risk Management	Metrics & Targets
SCBs, AIFIs, Top & Upper Layer NBFCs	FY 2025-26 onwards	FY 2027-28 onwards
Tier IV UCBs	FY 2026-27 onwards	FY 2028-29 onwards

Source: RBI

The present era of intricate financial interlinkages presents a direct effect of climate risk on Banking system. The macro and micro vulnerabilities create an all-pervasive socio-economic impact coupled with costs related to transition to carbon neutral financing. Green financing is sweeping capital markets with promises of high returns. However, the menace of greenwashing complicates credit decision-making.

Way Forward

PCAF provides a consistent framework for measuring financed emissions (GHG emissions financed by loans, investments, and financial products). This standardization is essential for transparency, comparability, and accountability across the financial sector. With rapid research and advancement, world is racing towards standardizing metrics and targets and sustainable solutions of addressing climate risk.

India is moving ahead steadfastly towards meeting its nationally determined commitment of net zero carbon emissions by 2070 and is revising its targets on upside showing promising trends. Reserve Bank of India has brought all financial institutions under the ambit of regulatory disclosures on ESG compliance. Deliberations on mitigating climate risk at regulatory level is gaining ground. At institutional level, corporates and PSU's have commenced measurement of their scope emissions. At Union Bank of India, we are traversing the path of sustainable financing and functioning. However, the challenge of transition risk must be addressed in an organisation agnostic manner to create greater and lasting impact. It needs a collaborative and conscious approach by all stakeholders of our planet - Earth. Whether it is a minuscule effort like carpooling during office commutes or banning single-use plastics in official meetings, every collaborative effort counts.

Despite all the inherent challenges of transitioning towards a carbon neutral economy, it is undisputable that well-defined policies and procedures framed with private public partnership can reduce the climate risk. As regulatory changes are making the adaptation of carbon neutral financing solutions faster than the prevailing readiness, India can leverage upon the 'first mover advantage' by bringing in innovative technology for implementing climate related strategies ensuring sustainable growth. The banking system being the lifeline of the economy can resort to tools such as stress testing, client engagement and collaboration, sound governance practices and structured financing to enable the financial system to curate and operate on climate mitigation frameworks ensuring a soft landing on the rough and unpredictable terrains of climate risk. Last but not the least as an individual every citizen can ensure its own squirrel contribution in reducing the risk by building a sustainable ecosystem through community efforts. Every drop in the ocean counts, even if it looks insignificant on a distended platform. The conundrum of climate risk is yearning for a solution as the risk is now out in open from the shadows of denial. Integration of macro and micro components at the global level can help us leap ahead of the curve. The need of the hour is to foster a collaborative mindset ubiquitously.

Neha Nidhi
U.L.A., Gurugram

बैंक - एक अनमोल धरोहर

बैंक, वह स्थान जहाँ से मिलता है सहारा,
धन की सुरक्षा और सपनों का किनारा.
यहां हर एक लेन-देन में होती है जान,
बिना बैंक के जीवन होता वीरान.

धन जमा कर उसे सुरक्षित रखा जाता है,
हर एक व्यक्ति को यहां पर विश्वास पाया जाता है.
चाहे छोटी हो या बड़ी हो बचत,
बैंक की शाखा हर जरूरत को पूरा करती है.

मांग हो या प्रापर्टी की खरीदारी की बात,
बैंक से मिलता है ऋण, बनती है राहत की रात.
कार, घर, शिक्षा या चिकित्सा की जरूरत,
बैंक से मिलता है, हर एक संकट का समाधान.

बैंक का है बड़ा योगदान आर्थिक विकास में,
यहां से मिलती है प्रेरणा और प्रगति के रथ में.
यह केवल एक खाता या लेन-देन नहीं है,
यह है समाज की उन्नति की कुंजी, हर पथ में.

वर्तमान समय में ऑनलाइन बैंकिंग का समा,
घर बैठे ही हो जाती है सभी कामों की ताजा हवा.
नेट बैंकिंग और मोबाइल एप्स की सुविधा,
बैंक से जुड़ी हर सुविधा ने बढाई है गति.

बैंक है जीवन की योजना, योजनाओं का ध्रुव तारा.
संगठित पूंजी, सुरक्षित धन का खजाना,
जन धन योजना और डिजिटल बैंकिंग के साथ,
हर व्यक्ति को मिलता है यहां का भरोसा और साथ.

बैंक में हम अपनी मेहनत की कमाई रखते हैं,
यहां पर सपने अपने साकार करते हैं.
यहां की योजनाएं और उत्पाद हैं बहुत,
हर किसी के लिए कुछ न कुछ है यहाँ बहुत.

व्यवसायों का विकास भी है बैंक से,
आर्थिक क्षेत्र को ऊंचाइयों तक पहुंचा देती है यह शाखाएं.
निवेश हो या पूंजी का निवेश करना हो,
बैंक हर स्थिति में मददगार है, यह सच है, भरोसा करो.

इसलिए बैंक का महत्व समझो,
हर एक लेन-देन में सावधानी रखो.
समाज के विकास में योगदान दें,
और अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रण लें.

बैंक, यह सिर्फ एक संस्था नहीं है,
यह है हमारे सपनों का आधार, इसे समझो.
आर्थिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ो,
बैंक से जुड़कर सफलता के मार्ग पर चलो.

अजय सिंह रावत
आर.एल.पी., वरंगल

उद्घाटन

मुस्तफानगर शाखा, क्षे.का., खम्मम

वैष्णोदेवी शाखा, क्षे.का., अहमदाबाद

सर्वोदय क्लासरूम, गुरुग्राम केंद्र

किल्लिपालम शाखा, क्षे.का., श्रीकाकुलम

धानोरी शाखा, क्षे.का., पुणे मेट्रो

खुदरा ऋण केंद्र, क्षे.का., बरेली

पश्चिम गोनंगूडेम शाखा, क्षे.का., राजमंड्री

एमएलपी तथा आरएलपी परिसर, क्षे.का., हावड़ा

बल्लारपुर शाखा, क्षे.का., नागपुर

यूएमएफबी शाखा, क्षे.का., लुधियाना

महानगर शाखा, क्षे.का., बरेली

वझूर शाखा, क्षे.का., कोट्टायम

उदयमपेरूर शाखा, क्षे.का., एर्णाकुलम

नेरियमंगलम शाखा, क्षे.का., एर्णाकुलम

मुतंकुज़ी शाखा, क्षे.का., एर्णाकुलम

नई पलोड शाखा, क्षे.का., तिरुवनंतपुरम

क्षे.का., एर्णाकुलम का नवीन परिसर

डेडियापाडा शाखा, क्षे.का., बड़ौदा

जिला न्यायालय शाखा, क्षे.का., अनंतपुर

फतेहगढ़ शाखा, क्षे.का., बरेली

कौतारम शाखा, क्षे.का., मचिलीपट्टनम

धोबाबेरिया शाखा, क्षे.का., हावड़ा

जेकेसी कॉलेज शाखा, क्षे.का., गुंटूर

रामलिंगेश्वरपेटा शाखा, क्षे.का., गुंटूर

ब्राह्मणकोडूरु शाखा, क्षे.का., गुंटूर

रुसू शाखा, चेब्रोलू, क्षे.का., गुंटूर

भनपुरी उरला शाखा, क्षे.का., रायपुर

Learning and Development Ecosystem in Banks

In the rapidly evolving financial sector, the importance of a robust learning and development (L&D) ecosystem cannot be overstated. Banks, which serve as pillars of economic stability and growth, are increasingly recognizing that the skills of their workforce are key to stay competitive, fostering innovation, and ensuring compliance with constantly changing regulations. As the demands on banks become more complex, there is a need to revamp and enhance learning and development frameworks. This essay will explore the key components of an effective L&D ecosystem in banks, the challenges faced, and the strategies that can be implemented to improve it.

The Role of Learning and Development in Banks

The banking sector has undergone significant transformations in the last few decades, driven by technology, customer expectations, regulatory changes, and global economic shifts. In this dynamic environment, employees need to be equipped with the right skills, knowledge, and attitudes to handle complex tasks, embrace new technologies, and deliver exceptional customer service. An effective L&D ecosystem is essential to ensure that employees at all levels—whether front-line staff, managers, or senior executives—are continuously evolving in their roles and contribute towards the bank's success.

The primary role of L&D in banks

Enhancing Skills and Knowledge: As banks adopt new technologies like artificial intelligence, machine learning, blockchain, and mobile banking platforms, employees must stay updated on these advancements. Additionally, regulatory compliance, risk management, and financial products require continuous learning to ensure that employees can operate efficiently and securely.

Improving Performance: Well-trained employees are better equipped to handle their tasks, leading to improved operational efficiency, customer satisfaction, and reduced errors. Regular training helps improve both soft skills—such as communication and leadership—and technical skills required in the banking industry.

Promoting Innovation and Adaptability: The ability to adapt quickly to changes in the banking landscape is crucial for success. An effective L&D ecosystem ensures that employees are constantly learning, improving, and innovating, allowing the bank to remain agile and responsive to new challenges.

Ensuring Compliance: With a constant stream of regulatory changes in the banking industry, L&D programs are necessary to ensure that employees remain compliant with laws and regulations. Training focused on compliance reduces the risk of legal issues and financial penalties.

Fostering Leadership: As banks evolve, it is important to develop next generation of leaders. A strong L&D ecosystem nurtures leadership skill at all levels, ensuring a pipeline of capable leaders who can guide the bank through future challenges and changes.

Key Components of a Robust L&D Ecosystem in Banks

To create an L&D ecosystem that meets the needs of a modern bank, it is essential to consider several interconnected components that support the learning journey of employees.

A Comprehensive Learning Strategy: An effective L&D ecosystem begins with a comprehensive learning strategy that aligns with bank's overall goals and objectives. The strategy should address both short-term needs—such as skill gaps for specific roles—and long-term goals, like leadership development and innovation capabilities. The strategy must be dynamic, with flexibility to adjust to industry shifts, emerging technologies, and evolving regulatory standards.

Blended Learning Approaches: A one-size-fits-all approach to training does not work in a diverse industry like banking. To improve learning outcomes, banks should adopt a blended learning approach that combines formal classroom-based training with digital learning, on-the-job training, and experiential learning. Digital learning, including online courses, webinars, and virtual simulations, offers employees the flexibility to learn at their own pace while ensuring that they remain engaged in their learning journey.

Personalized Learning Paths: In a large and diverse organization like a bank, employees have different roles, experience levels, and career aspirations. It is important to offer personalized learning paths that cater to the individual needs of each employee. For example, front-line

staff may need to focus on customer service training and product knowledge, while management-level employees may require leadership development programs, financial analysis skills, and strategic thinking courses.

Personalized learning ensures that employees get the training that is most relevant to their roles, increasing the likelihood that they will apply what they learn effectively.

Continuous Learning Culture: A successful L&D ecosystem promotes a culture of continuous learning, where employees are encouraged to develop new skills and grow throughout their careers. This requires a shift in mindset, where learning is seen as a lifelong journey rather than a one-time event. By fostering a culture of continuous learning, banks can ensure that employees are always improving and adapting to new challenges, making them more resilient to change.

Encouraging employees to take ownership of their professional development through self-directed learning and access to learning resources is crucial to build a learning culture. Incentives, such as recognition, rewards, and career advancement opportunities, can also be used to motivate employees to actively engage in their development.

Use of Technology and Data Analytics: In the modern age, technology plays a key role in enhancing the learning experience. Banks can utilize learning management systems (LMS) to centralize and streamline training content, track learning progress, and evaluate performance. LMS platforms can deliver personalized content based on the learner's needs and provide valuable analytics on training effectiveness, helping HR and L&D teams identify gaps in knowledge and areas for improvement.

Furthermore, emerging technologies such as artificial intelligence (AI) and machine learning can be used to create intelligent, adaptive learning experiences. These technologies can recommend personalized content, assess skill levels, and help banks track learning outcomes more effectively.

Collaboration and Knowledge Sharing: L&D in banks should not be confined to formal training sessions alone. Collaborative learning, peer-to-peer knowledge sharing, and mentorship programs can be powerful ways to improve employee development. Platforms that facilitate communication and collaboration—such as internal forums, social learning platforms, and knowledge-sharing communities—allow employees to exchange ideas and insights, fostering a deeper understanding of bank's operations.

Mentorship programs are particularly valuable for career development and leadership training. Experienced employees can pass on their knowledge and skills to newer employees, providing guidance on technical, operational, and leadership challenges.

Challenges in Improving L&D Ecosystem in Banks

While the importance of a well-established L&D ecosystem is clear, banks face several challenges in improving their learning initiatives:

Resistance to Change: Employees may be resistant to new learning methods or technologies. Overcoming this resistance requires clear communication about the benefits of the changes and offering support throughout the transition.

Time and Resource Constraints: Balancing the demands of day-to-day banking operations with the need for employee development can be difficult. It is essential to allocate dedicated time for training and development and ensure that employees can engage with learning without sacrificing their primary responsibilities.

Keeping Up with Technological Advances: The pace of technological change in banking is rapid, and keeping up with the latest tools and platforms can be a challenge for L&D departments. Continuous investment in technology and training resources is necessary to stay ahead.

Measuring Training Effectiveness: Measuring the impact of L&D programs on employee performance, customer satisfaction, and business outcomes can be complex. Banks need to adopt metrics and evaluation tools that go beyond simple completion rates and assess how well training translates into tangible improvements.

Strategies to Improve L&D Ecosystem in Banks

To address these challenges and improve L&D ecosystem, banks can implement following strategies:

Invest in Modern Learning Technologies: Banks should invest in state-of -art learning technologies that enable seamless delivery of training, from mobile learning apps to AI-powered platforms. These tools provide employees with easy access to content and help track their learning progress in real time.

Foster a Growth Mindset: Cultivating a growth mindset among employees is essential to creating a culture of continuous learning. By emphasizing that skills can be

developed through effort and practice, banks can inspire employees to take ownership of their learning.

Align Learning with Business Goals: Ensure that learning initiatives are closely aligned with bank's strategic objectives. By tailoring training programs to meet both individual career goals and bank's overarching needs, employees are more likely to see the value in training and apply what they learn to drive business success.

Offer a Blend of Formal and Informal Learning Opportunities: Formal training sessions should be complemented by informal learning opportunities, such as on-the-job training, job rotations, and access to expert resources. This blend encourages employees to learn in real-world contexts.

Enhance Leadership Development Programs: Given the dynamic nature of the banking industry, leadership development is a critical component of L&D. Establish leadership training programs that focus on both technical and soft skills to prepare managers and executives for the challenges of the future.

Improving learning and development ecosystem in banks is crucial for ensuring that employees are equipped with necessary skills, knowledge, and mindsets to navigate the evolving landscape of the banking sector. By investing in a comprehensive, technology-driven, and continuous learning culture, banks can empower their workforce to excel in their roles, foster innovation, and remain competitive. With the right strategies and commitment towards development, L&D can become a key enabler of growth and excellence, both for the bank and its employees.

Tushar Maheshwari
Gangaghat Branch,
R.O., Kanpur

सत्य-मीमांसा

क्षण-भंगुर यह काल-प्रवाह, नदी-लहर सम बहता जाए,
शाश्वत-सत्य-पिपासा-अकुल, मानव-मन तरसता जाए.
अणु-अणु में विद्त-कण सम, परिवर्तन का नृत्य निरंतर,
फिर भी चाहे मनुज हृदय यह, शाश्वत-स्थिर रूप निरंतर.

माया-जाल में बँधा जगत यह, दर्पण-प्रतिबिंब सदृश छलावा,
परछाईं मात्र है यह दृश्य सकल, सत्य-सूर्य की मिथ्या आभा.
इंद्रियों के मृग-तृष्णा जल में, मिथ्या का तम-सम्राट विराजे,
आत्म-ज्ञान की अग्नि बिना जग, मृत्यु-पाश में जकड़ा साजे.

एक अनेक में, अनेक एक में, द्वैत-अद्वैत का द्वंद्व-विहार,
जल-तरंग आकाश-नभ जैसे, भिन्न-अभिन्न अनोखा संसार.
घट-घट में प्राण-तत्व एक सा, रूप अनेक पर सार समान,
क्यों खोजे तू भेद जहाँ है, अभेद-महासिंधु विद्यमान?

भाग्य-बंधन में जकड़ा मानव, या स्वयं कर्म का धनी विधाता?
क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-द्वन्द्व यही तो, कर्म-मुक्ति का है महाख्याता.
अर्जुन सम रथ पर खड़ा तू, युद्ध-विकल्प सम्मुख है आया,
कर्ता बन, पर फल-विमुख हो, यही सनातन धर्म बताया.

मृत्यु-अमरता के मध्य झूले, मानव-जीवन-झूला डोले,
आया कौन? गया कौन? उस पर, वृथा तर्क के पंखा खोले.
एक दीप से द्वितीय प्रकाशित, ज्योति एक पर रूप अनेके,
जन्म-मरण चक्र नहीं थमता, अश्रु-हास के बीच अनेके.

बंधन-मुक्ति का युग-युगांतर, सतत संघर्ष अखंड है जारी,
स्वतंत्रता का भार वहन कर, थकी मनुज की देह-अटारी.
माया-बंधन कसा है ऐसा, छूटे ना छूटे प्रयास सतत से,
मुक्ति-कामना ही तो बंधन, मुक्त वही जो निर्वासित इससे.

गहन चिंतन करते-करते, जीवन-सागर हो गया क्षीण,
ग्रंथ-पुराण पढ़े, शास्त्र खोले, ज्ञान-विज्ञान हुआ आधीन.
हाथ न आया कुछ अंत में, रिक्त रहा मानव-कोष,
क्या पाया क्या खोया जग में? कर ले केवल मन-संतोष!

"अमित" कहे जीवन-क्षण में, ही तो छिपा अमित ज्ञान है,
वर्तमान जो जीता पूर्ण, उसको काल-चक्र पहचान है.
शाश्वत-सत्य न ग्रंथों में, न जिज्ञासा के जाल-जटा में,
जो है, वह बस अभी यहीं है, तेरी साँस-साँस की मधुर कथा में.

अमित कुमार
क्षे.का., वाराणसी

The Art of Delegation

We accomplish all that we do through delegation, either to time or to other people.

– Stephen R. Covey

Many a times, we see the managers struggling to cope-up with the work load. One of the reasons is that they do not delegate the work either due to lack of awareness or confidence in the employees. This will have significant effect on the performance of the organisation, nonetheless it affects the growth of the individual in the organisation as well. This article defines the management concept of delegation and dwells into different aspects of delegation for effective and successful management of work.

Delegation is defined as transfer of authority. It is the downward transfer of authority from a superior to a subordinate. Delegation is also referred to as assigning tasks or authority to another person or group to accomplish a goal. This is important because the superior cannot look after all the processes and delegation helps him/her in managing the work effectively. Delegation is an effective way of managing time and resources on more important activities. Further, it provides a sense of responsibility, a chance to grow and exercise initiatives to whom the authority is delegated.

Principles of Delegation

1. Authority: Authority is the power of a person to command the subordinates and take actions by the virtue of his/her position. In an organisation, authority differs according to hierarchy. The authority has a top to bottom flow i.e., superior has authority over his/her subordinate. It defines the superior-subordinate relationship. The superior communicates his/her decisions to the subordinate, because he/she has the authority to do so, and expects the subordinate to comply with this decision. Although authority is inherent in the job position of a person, it also depends on the personality of the superior. Again, the limit or scope of authority also depends on the laws, rules and regulations and work culture of the organisation.

2. Responsibility: Delegation involves transfer of responsibility at least to some extent. This arises from the subordinate - superior relationship as the subordinate is responsible for the job given by his/her superior. A key point here is that responsibility has a bottom to top flow as the subordinate is always responsible to his/her superior. If the subordinate is given the responsibility for a task, he/she must also be provided with the necessary authority. If authority is more than the responsibility, it can lead to misuse. On the other hand, if responsibility is more than the authority, it will lead to incapability for completion of the allotted tasks.

3. Accountability: Accountability is the answerability for the outcome of a job. Regardless of the delegation, it is considered that the superior answerable for the tasks accomplished by the subordinate. Effectively, it means that delegation involves no transfer of accountability. Notably, accountability flows upwards i.e., a subordinate is accountable to his/her superior. Accountability can be enforced through regular feedback on the extent of work accomplished.

Benefits of Delegation

1. Effective Management: Delegation provides a breathing space to higher level executives / managers by sharing their workload. As a result, they can concentrate on tasks which are more important and having higher priority. Further, freedom from routine work allows for exploration of new ideas.

2. Employee Development: With the help of delegation, new responsibilities are assigned to employees. This allows them to work on a nature of work that is different from the routine work, helping them to develop new skills and discover hidden talents. In this way, delegation leads to the development of employees by providing them to expand their area of operation and helping them to grow. Effectively, it increases their prospects for future lead roles and breeds future executives.

3. Motivation of Employees: The process of delegation not only leads to the development of talent but also has various psychological benefits. This is because, the faith and trust displayed in the subordinates build confidence and self-esteem, which ultimately drives them to work harder.

4. Facilitation of Growth: Delegation provides employees with opportunities to develop and

effectively train themselves as better decision makers and executives. This further aids in the process of expansion of an organisation, as it already has the suitable workforce which is competent enough.

5. Hierarchy Management: Delegation establishes the superior-subordinate relationship. Also, it directly relates to the extent and flow of authority. This is because authority determines who must report to whom.

Barriers of Delegation:

Leaders often do not delegate, even though it is a good idea for several reasons.

1. Control issues: One of the main reasons why leaders hesitate to delegate the work is that they do not want to lose the power. Leaders are afraid of giving tasks to employees thinking that it gives up control over decisions making and the general direction of work.

2. Perceived Lack of Time: Leaders might think that it takes more time to discuss tasks, to give advice, and to check the progress than to do the tasks themselves. This type of thinking takes away the long-term benefits of sharing and grooming the employees.

3. Perfection: Leaders who want everything to be perfect might be hesitant to give tasks to other people because they are afraid that work done by the others would not meet their high standards. This way of thinking makes leaders too busy and leave team members without enough work. This may lead to delayed accomplishment of tasks and churn of customers who always demand high level of efficiency.

4. Insecurity: Some leaders would be afraid of delegating because they feel insecure or would like to keep an eye on everything. They might want to stay in charge of the whole job or task.

5. Ability concerns: Sometimes leaders will not delegate the work as they feel that the employees are not competent enough to handle the work and work done by them will spoil the good reputation they are enjoying till now.

Leaders can overcome all the above-mentioned barriers by following the traits for effective delegation as given hereunder.

Key traits for effective delegation

Delegation, as a vital leadership skill, is a process, encompasses more than simply assigning tasks to individuals. It includes clear communication, giving people power through trust, and giving comments and praise regularly.

> *"Don't tell people how to do things, tell them what to do and let them surprise you with their results."*
>
> *- George S. Patton*

1. Clear communication: Effective communication is paramount in delegating tasks successfully. When entrusting responsibilities to team members, leaders need to articulate their expectations, goals, and desired outcomes with clarity. Misunderstandings or ambiguity can lead to delays and / or suboptimal results. To enhance communication during the delegation process below mentioned point should be noted:

a) **List the tasks clearly:** Clear directions is to be given with respect to what is supposed to be done.

b) **Set Expectations:** Employees should be made aware of what is expected from them in terms of deadlines, quality standards, and any other special needs. Make sure that every employee knows exactly what is expected from him/her.

c) **Encourage Questions:** Employees should be encouraged to ask questions and seek answers easily. They be informed that they are free to seek guidance whenever required.

2. Trust as a vehicle for empowerment: Giving tasks to team members is not the only thing that delegation does; it is also giving them power and responsibility. Giving people more power builds a sense of responsibility, pushes people to make decisions on their own, and supports a culture of accountability.

a) **Autonomy:** Required amount of autonomy is to be provided to employees by letting them do their jobs in any way they choose, as long as they stick to the rules and requirements. Freedom encourages new ideas and creativity.

b) **Advantage of expertise:** Superior will use the special skills and knowledge of each team member. Delegation should be based on their skills to help them feel like they are important.

c) **Risk taking:** Superior should create an atmosphere where people are comfortable taking measured risks. Employees should feel comfortable taking the lead and making choices that are within the scope of assigned tasks.

d) **Providing help:** Leader is required to provide help

wherever required to his/her subordinates. They need to believe that the employees are capable enough to complete the given tasks and deal with issues that crop up. Simultaneously micromanagement should be avoided.

3. Appreciation and Feedback: Most successful part of delegation is providing team members timely, constructive feedback and acknowledging their work and successes. Regular contact with employees improves work ethic, boosts productivity, and pushes employees to keep getting better. Superiors also should be liberal in appreciating the good work done by the employees. Acknowledging achievements promptly boosts morale and reinforces a culture of excellence within the employees.

Takeaways:

- ✓ Delegation is a deliberate way of effective utilisation of the services and the skills of each team member. Leaders who are good at delegation would be the part of growth and success stories.
- ✓ Delegation helps to define the powers, duties and answerability within the organisation. Effectively this eliminates the scope of duplication and overlapping of duties. This is because it provides a clear picture of the working relationships and the work being carried out at various levels. This further helps in developing and maintaining effective coordination amongst the departments, levels and functions of the organisation.
- ✓ Delegation that works well spreads out tasks more evenly, preventing bottlenecks and raising the general productivity of the team.
- ✓ Delegation frees up leaders' time to focus on strategic goals, which helps both leaders and team members utilise their time well.
- ✓ Leaders, through delegation, shift from being taskmasters to architects of an environment where people collaborate to accomplish objectives.
- ✓ Delegating work to team members helps them improve their skills, confidence to take bigger responsibilities and to groom them as future leaders.

S B Karimullah Sahib
R.O., Kadapa

हमें गर्व है

दिनांक 12.01.2025 को ओडिशा रायफल असोशिएशन द्वारा आयोजित 31वें राज प्रबोध चन्द्र धीर बीरबर शूटिंग चैंपियनशिप, तालचर में श्री धर्मेंद्र साहु, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कासा एवं लीप, रायगड़ा ने 12 बोर ओपेन शूटिंग में स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक & एयर राइफल शूटिंग में कांस्य पदक जीता.

दिनांक 16.02.2025 को महाराष्ट्र कराटे स्पोर्ट्स एसोसिएशन ऑफ ठाणे (बुडोकॉन इंटरनेशनल, ऑस्ट्रेलिया से संबद्ध) द्वारा आयोजित 29वीं भारत राष्ट्रीय स्तर ओपन कराटे चैंपियनशिप (उम्र वर्ग 6 वर्ष से कम) में कुमारी अद्विता प्रसाद सुपुत्री श्री सुधीर भोला कृष्ण प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.) ने काटा मार्शल आर्ट में कांस्य पदक और कुमाइट मार्शल आर्ट में रजत पदक जीता है.

Growth Mindset and Continuous Learning

The Indian banking sector is facing many challenges. Banks must adapt to Digital Transformation and meet strict regulatory requirements, while also responding to changing customer expectations. To succeed, employees need to improve their technical skills and adopt a growth mindset. This growth mindset, a concept introduced by psychologist Carol Dweck, means believing that abilities and intelligence can grow with effort, learning, and resilience. When a strong culture of continuous learning supports this mindset, it encourages employees to adapt to change, embrace innovation, and achieve long-term success. By developing these qualities, the banking sector can tackle today's challenges and take advantage of future opportunities.

Understanding Growth Mindset

A growth mindset is very different from a fixed mindset. People with a fixed mindset believe their skills and intelligence cannot change. In contrast, employees with a growth mindset see challenges as chances to improve, actively seek helpful feedback, and continue working hard after facing setbacks. Those with a fixed mindset often resist change, fear failure, and avoid learning new skills.

How Individuals Can Develop a Growth Mindset

- Embrace challenges and view failures as stepping stones to growth and success. Complex tasks are opportunities to expand skills and knowledge; each setback teaches invaluable lessons.
- Cultivate a relentless curiosity and a passion for learning. Actively seek out new knowledge through reading or exploring various avenues for growth. An open mind and a spirit of inquiry enhance critical thinking and problem-solving abilities.
- Develop resilience and adaptability. Embrace flexibility and practice mindfulness and stress management to maintain motivation during uncertain times.
- Seek constructive feedback and embrace it as a pathway to improvement. Engaging with insights from managers, peers, and mentors allows you to refine skills and grow, as constructive criticism is a chance to elevate our abilities.
- Set inspiring personal and professional development goals. Aim for short-term and long-term accomplishments, from mastering new technologies to enhancing customer service skills or obtaining industry certifications. Regularly review and adjust these goals to remain motivated and focused on the journey.

Strategies for Continuous Learning at Individual Level

Embrace Self-Learning: Banking professionals should set aside time for self-directed learning by diving into financial publications, industry reports, and research studies. Platforms like Coursera, Udemy, and LinkedIn Learning offer valuable courses on financial technology, risk management, and leadership skills.

Take Advantage of Internal Training and Workshops: Employees should make a point to nominate themselves for various internal training programs on the topics of their interest and actively engage in these programs. Participating in discussions during training enhances understanding and boosts knowledge retention.

Utilize Online Learning Resources: Webinars, podcasts, and various online learning resources offer insights into industry trends and best practices. Employees can keep themselves informed and updated by subscribing to industry newsletters and using social media efficiently.

Engage in Inter departmental Learning: Actively seeking to understand the tasks, roles, and responsibilities of other departments is essential for developing a well-rounded skill set and fostering innovative thinking. Collaborating with colleagues across various departments, not only enhances one's own capabilities but also contribute to a more cohesive work environment. This cross-functional engagement allows to gain valuable insights into the unique challenges and processes that different teams face within the banking sector.

Get Involved with Professional Associations and Networks: Attending conferences and seminars can offer employees fresh

perspectives and insights into the field. It will provide networking opportunities and access to valuable industry resources.

Overcoming Challenges: While benefits of cultivating a growth mindset and fostering a learning culture in the workplace are well-recognized, individuals frequently encounter a range of challenges that can hinder their progress. Understanding these obstacles is key to finding effective strategies to overcome them. Some of the most common challenges include:

Time Constraints: The demanding nature of banking and financial services jobs often leaves employees with little time to pursue additional learning opportunities. Long hours and high-pressure environments can make it difficult for individuals to carve out time for professional development, even when they recognize its importance.

Fear of Failure: Many employees experience anxiety about stepping outside their comfort zones. This fear can stem from the worry of making mistakes or not meeting expectations, leading to a reluctance to take on new challenges or explore unfamiliar concepts.

Lack of Motivation: Sustaining enthusiasm for continuous learning can present a significant hurdle. In the absence of external encouragement or a supportive culture, employees may struggle to find the intrinsic motivation needed to engage actively in their own development.

Resource Limitations: Access to advanced learning tools and educational resources can be restricted, particularly in smaller banks or organizations with limited budgets. Without access to quality online courses, workshops, or professional development programs, employees may feel ill-equipped to enhance their skills.

Despite these challenges, there are effective strategies that individuals can embrace to turn these obstacles into opportunities for personal and professional growth:

Prioritize Learning: Allocating just 15-30 minutes each day for focused learning can lead to significant progress over time. Whether through reading articles, watching educational videos, or engaging in online courses, fostering a habit of daily learning can accumulate vast knowledge.

Adopt a Positive Mindset: Shifting the perspective to view learning as a valuable investment rather than a tedious task can greatly enhance motivation. Recognizing the long-term benefits of skill development and the excitement of acquiring new knowledge can inspire a more proactive approach to learning.

Seek Support from Peers and Mentors: Building connections with colleagues or finding a mentor can provide essential guidance and accountability. Group learning initiatives, such as study circles, enrich the learning experience by allowing individuals to share insights and support one another.

Utilize Microlearning Approaches: Breaking down complex information into bite-sized, manageable segments makes the learning process more accessible and enjoyable. Microlearning allows individuals to absorb information at their own pace, fitting in short learning sessions during breaks or downtime. By adopting these strategies and embracing a growth mindset, individuals can effectively navigate the challenges they face and thrive in their learning journeys, paving the way for both personal fulfilment and professional success.

In today's fast-changing world, it is important for everyone to have a growth mindset and keep learning. By facing challenges, seeking out new knowledge, and staying flexible, employees can protect their careers and help their organizations succeed. Focusing on personal and professional growth improves job performance and leads to better career opportunities and long-term success in the banking industry.

Indu. P
U.L.A., Gurugram

शुभमस्तु

संसार चंद
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

From Ambiguity to Achievement

A Step-by-Step Guide to Manifesting Goals - A Proven Strategy for Success

Many people have dreams, but only a small percentage take the necessary steps to achieve them. Studies show that 83% of people don't set clear goals; 14% have goals but don't write them down; Only 3% write down their goals—and they achieve 10x more results than others.

Clearly, the act of defining, writing, and systematically pursuing goals dramatically increases success. By using structured techniques like WOOP, the If-Then Strategy, the 90-Day Manifestation Window, and tracking progress, anyone can turn aspirations into reality. Small wins along the way build confidence, making even the biggest goals achievable.

From Ambiguity to Clarity: The First Step to Success

One of the biggest reasons people fail is ambiguity—having vague aspirations without a defined plan. Vague goals don't activate action. Compare a general wish to a powerful, aligned intention.

Ambiguous / Vague Goal	Clear Actionable Goal
"I want to be successful."	"I will launch an online store with 10 products and earn Rs. 50,000 per month by Dec. 31."
"I want to get in shape."	"I will work out for 30 minutes, 5 times a week, and lose 4 kg in 3 months."
"I want to save money."	"I will save Rs.5000 by eating out only twice a month."
"I want to read more."	"I will read one book per month and keep a reading log."

By making goals specific, measurable, and time-bound, we create a clear roadmap to success rather than relying on vague hopes. The Harvard study also found that Setting goals with deadlines increase success by 76%; Sharing goals with a trusted person boosts commitment by 33%. **So, let's not just define our goals – add a deadline and share them.**

The Power of Sharing Goals:

Accountability Boosts Commitment. Studies show that sharing goals with a trusted person improves commitment and follow-through. **Why It Works :** Creates a sense of responsibility—when someone checks on our progress, we are more likely to stay on track; Increases motivation—mentors, friends, or coaches can encourage and support us; Provides feedback and guidance—helping us adjust the approach when needed. By telling a mentor or friend about our goal, plan, and progress, we increase the likelihood of achieving it.

Breaking Down Manifestation into Steps: We must avoid being overwhelmed by breaking our vision into mini-goals with deadlines.

Big Vision=> Start a business;

Mini-Goal 1=> Research the niche by April 15th;

Mini-Goal 2=> Create a prototype by April 30th;

Mini-Goal 3=> Launch by June 1st.

Small wins build confidence and consistency – energetic alignment.

The Power of Small Wins: Building Confidence and Momentum-

Many people give up because their goals feel too overwhelming. The secret to staying motivated is to celebrate small wins—progress, no matter how minor, reinforces confidence.

Why Small Wins Matter: Small successes build motivation. Completing one workout session makes it easier to commit to the next; They provide proof of progress. Saving Rs. 500/- may seem small, but it proves financial discipline is possible; They create momentum. Writing just 200 words per day can result in a full book over time. When we acknowledge progress, even in small steps, our confidence and motivation increases.

The If-Then Strategy: Staying on Track When Challenges Arise-

Obstacles are inevitable, but the If-Then Strategy helps us stay committed by linking potential setbacks to specific actions. Let us see understand by an example :

Goal: "I will work out 5 times a week.";

Obstacle: "I may feel too tired after work.";

If-Then Plan: "If I feel tired, then I will do just 10 minutes of exercise instead of skipping it." This approach eliminates excuses and creates automatic solutions for challenges. Anticipating obstacles helps us stay on track no matter what.

The WOOP Technique: A Practical Framework for Success

The WOOP (Wish, Outcome, Obstacle, Plan) method is a powerful tool for transforming intentions into actionable steps:

Wish: Define the specific goal;

Outcome: Visualize the positive

impact of achieving it;

Obstacle: Identify challenges that could hinder progress;

Plan – Create a strategy to overcome those challenges.

Let us understand by an example: **Goal:** "I want to wake up early.";

Wish: "I will wake up at 6 AM daily.";

Outcome: "I will have more time for exercise and reading.";

Obstacle: "I may feel too tired to get out of bed.";

Plan: "If I feel tired, then I will drink a glass of water and stretch for five minutes to wake up."

By anticipating obstacles and pre-planning, WOOP significantly increases the likelihood of success.

The 90-Day Manifestation Window: A Realistic Timeline for Success

Research shows that 90 days is the ideal timeframe for achieving goals. **Why?** - It's long enough to see real progress; It's short enough to maintain urgency, commitment, and energetical alignment along with motivation.

How to Use This Method: Set a clear 90-day goal. Example: "I will save Rs. 5,000/- in 90 days." Break it down into weekly milestones. Example: "I will save Rs. 400/- per week." Track progress weekly. Adjust the plan if needed. This technique keeps us focused, accountable, and prevents procrastination.

Tracking Progress: The Key to Staying on Course

Without tracking, it's easy to lose motivation or forget how much progress has been made. Tracking makes goals measurable, ensuring us to stay focused and continuously improve. Here are effective ways to track progress:

Tracking Method	How It Works	Why It's Effective
Journaling	Write reflections on progress.	Increases self-awareness and motivation.
Checklists	Mark off completed tasks.	Provides a visual sense of accomplishment.
Habit Tracking Apps	Log habits like workouts or spending.	Ensures consistency with reminders.
Weekly Reviews	Evaluate progress and adjust strategies.	Identifies areas for improvement.
Accountability Partner	Report progress to a mentor or friend.	Encourages discipline and responsibility.
90-Day Progress Check	Assess achievements and set new milestones.	Helps refine strategies for future goals.

A Step-by-Step Manifestation Blueprint

Let us Now Bring It All Together: By following these steps, we create a structured, actionable process for goal achievement:

- ❖ Clarify the Goal – Move from vague desires to a specific, measurable objective.
- ❖ Share the Goal with a Trusted Person – Boost accountability and commitment.
- ❖ Adjust and Celebrate – Modifying the approach as needed and acknowledge achievements.
- ❖ Apply the If-Then Strategy – Prepare for setbacks with predefined responses.
- ❖ Use the WOOP Technique – Identify obstacles and create a plan to overcome them.
- ❖ Set a 90-Day Timeline – Break goals into smaller milestones with weekly check-ins.
- ❖ Celebrate Small Wins – Recognize progress to stay motivated and build confidence.
- ❖ Track Progress Regularly – Use checklists, journals, or habit-tracking apps.

Success is a Process, Not Luck

The difference between dreamers and achievers is action. Most people fail because they don't set clear goals, track progress, or prepare for obstacles. The 3% who write down their goals achieve 10x more than others because they turn dreams into structured plans.

By using WOOP, If-Then Strategies, the 90-Day Manifestation Window, tracking progress, and celebrating small wins, anyone can dramatically increase their chances of success.

SUCCESS DOESN'T HAPPEN BY CHANCE— IT HAPPENS BY DESIGN

Sangeeta Sinha
R.O., Mumbai - South

कुंभ मेला 2025: विश्व का सबसे बड़ा अस्थायी शहर

जनवरी-फरवरी-2025 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज शहर में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम स्थल त्रिवेणी पर महाकुंभ मेले का आयोजन सम्पन्न हुआ. यह मेला न केवल आध्यात्मिक महत्व रखता है, बल्कि अपनी भव्यता और संगठन के लिए भी विश्व में प्रसिद्ध है. उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे "सबसे बड़े अस्थायी शहर" के रूप में तैयार किया, जिसमें 1.50 लाख टेंट्स लगाए गए. यह विशाल मेला क्षेत्र आधुनिक सुविधाओं से लैस रहा, जिसमें 69,000 एलईडी और सोलर हाइब्रिड स्ट्रीट लाइट्स, 400 किलोमीटर से अधिक अस्थायी सड़कें और चेकर्ड प्लेट्स, साथ ही 30 पंटून ब्रिज का निर्माण शामिल है.

इसके अतिरिक्त, स्वच्छता और डिजिटल सुविधाओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया. "स्वच्छ कुंभ" अभियान के तहत 1.50 लाख शौचालयों की व्यवस्था की गई, जिसमें 15,000 स्वच्छता कर्मी और 2,500 गंगा सेवा दूतों ने अपनी सेवाएँ दी. 100 मीट्रिक टन की क्षमता वाला एक निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट रीसाइक्लिंग संयंत्र भी स्थापित किया गया तथा 11 स्थायी सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (FSTP) बनाए गए.

"डिजिटल कुंभ" के तहत, मेले की निगरानी के लिए 2,750 क्राउड मॉनिटरिंग सेटअप कैमरे और 24x7 ICCC मॉनिटरिंग की व्यवस्था की गई थी. 10 डिजिटल लॉस्ट एंड फाउंड सेंटर भी स्थापित किए गए. प्रयागराज को "स्मार्ट सिटी" के रूप में विकसित करने के लिए भी कई कदम उठाए गए हैं.

यह कुंभ मेला न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह तकनीकी और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में भारत की प्रगति को भी दर्शाता है. उत्तर प्रदेश सरकार का यह प्रयास कुंभ मेले को एक वैश्विक मंच पर और अधिक प्रभावशाली बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हुआ है.

दीपक कुमार
क्षे.का., प्रयागराज

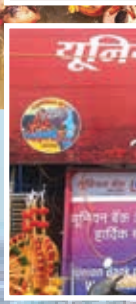

2025

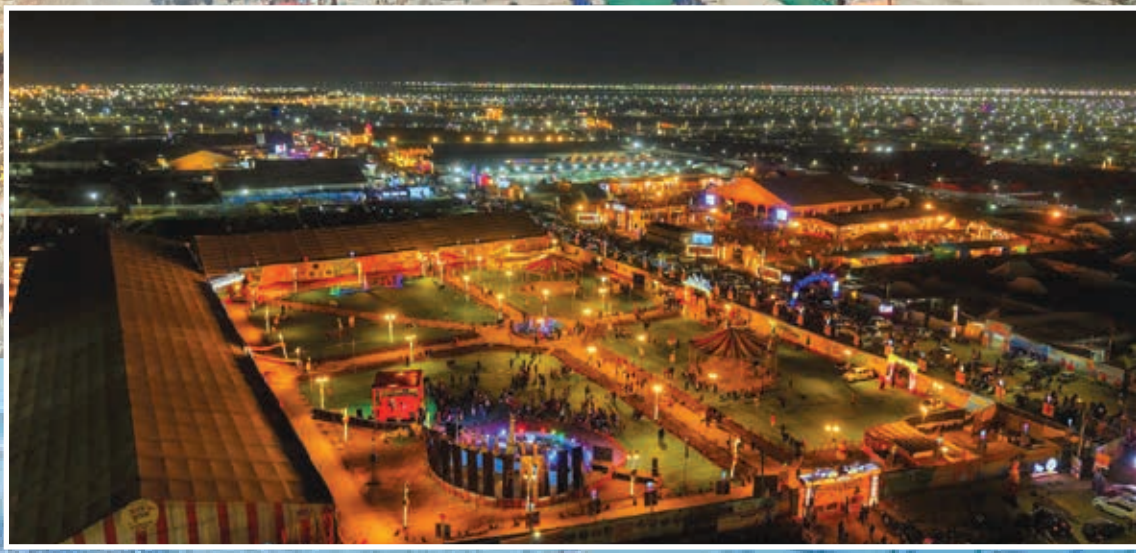

Union Bank
of India
दिव्य महा कुम्भ सुरक्षित महा कुम्भ

Emotional Intelligence

A Journey of Self-Discovery and Connection

Suma sat in her cozy office, her fingers moving over the keyboard as she reviewed her latest project. The bright sunlight filtered through the windows, illuminating the clutter of papers, coffee mugs, and a potted plant on her desk. She glanced at her calendar—meetings stacked one after another. Her head throbbed from the continuous demands of work, but it wasn't just the workload weighing her down. Lately, she'd been struggling with something subtler, something she couldn't quite put her finger on.

It was a lingering sense of disconnect. She had noticed it with her colleagues, friends, and even with herself. There were moments when she couldn't quite understand why she felt distant from people who, just months ago, had seemed so familiar. There were conversations that felt more like transactions than meaningful exchanges, and conflicts that simmered below the surface, unresolved.

Suma had always prided herself on being competent at her job. She was driven, intelligent, and organized. But it was clear now that her professional success had come with a hidden cost—her ability to relate emotionally with those around her. The once-vibrant relationships she cherished were now strained, and it wasn't just about the work. It was about something deeper. Something she had neglected for far too long. The concept that nagged her the most..... Emotional intelligence.

The Awakening

One evening, as Suma sat in a quiet café, sipping her cappuccino, a conversation with a close friend, Riya, stood out. Riya had always been someone Suma could turn to for advice. She was calm, thoughtful, and intuitive in contrast to Suma's often more task-oriented, pragmatic approach to life.

"I've been noticing something about you lately," Riya said, her voice soft but direct. "You're always so busy—working, managing projects, keeping everything in control. But... you've been kind of distant. Not just with me, but with everyone."

Suma bristled at the comment, feeling an instinctive defensiveness rise within her. "What do you mean by distant?"

"I mean you don't seem as present as you used to be," Riya said. "You've become so focused on the 'doing' that the 'being' part of you is slipping away."

Suma paused, the words sinking in. It wasn't just her work that was demanding her attention; it was her emotions—those that had been repressed or ignored in favour of logic and productivity.

"I've been so busy, Riya," Suma replied. "I'm just trying to stay on top of everything."

"I get that. But it's not all about tasks and results. How do you feel? And, more importantly, how do you think others are feeling around you?"

The question struck Suma like a bolt of lightning. She realized that her constant pursuit of excellence had led her to overlook the emotional connections that truly made work and life meaningful. It wasn't just about checking boxes—it was about understanding emotions, navigating them, and building stronger relationships. She began to wonder if this was where her recent struggles originated: a lack of emotional intelligence.

What Is Emotional Intelligence?

The conversation with Riya marked the beginning of Suma's journey into understanding emotional intelligence. But what exactly was Emotional Intelligence (EI), and why was it so important?

Emotional intelligence refers to the ability to recognize, understand, manage, and influence emotions in ourselves and others. It involves several key components: self-awareness, self-regulation, motivation, empathy, and social skills. Daniel Goleman, a psychologist who popularized the concept in his ground-breaking book Emotional Intelligence, argues that EI is a critical factor in personal and professional success, sometimes even more than cognitive intelligence.

Self-awareness is the foundation of emotional intelligence. It involves being in tune with your own emotions and recognizing how they influence your thoughts and behaviours. Without this awareness, it's easy to react impulsively or overlook the deeper emotional needs of yourself and others.

Self-regulation refers to the ability to manage emotions effectively. Rather than letting emotions dictate your actions, self-regulation enables you to pause, reflect, and choose the best response. This can be especially helpful in high-stress or emotionally charged situations, where rash decisions often lead to regret.

Motivation, in the context of emotional intelligence, goes beyond extrinsic rewards like money or recognition. It's about an intrinsic drive to achieve personal goals and contribute meaningfully to others. Motivated individuals tend to have a higher level of resilience and

perseverance, which can help them navigate difficult challenges.

Empathy is the ability to understand and share the feelings of another person. It goes beyond sympathy, which is feeling sorry for someone—it's about putting yourself in their shoes and understanding their emotional state. Empathy is crucial for building trust and fostering healthy relationships.

Finally, social skills involve the ability to navigate complex social environments and build strong relationships. This includes effective communication, conflict resolution, and collaboration.

As Suma delved deeper into these concepts, she began to understand why she had been struggling. She realized that, over the years, she had neglected these emotional competencies. Her professional success had been built on technical skills, but her personal and social relationships were faltering because of her limited emotional awareness.

The Transformation: Determined to improve her emotional intelligence, Suma set out on a journey of self-discovery. She started by practicing mindfulness to enhance her self-awareness. By taking a few moments each day to check in with herself, she could identify the emotions she was feeling—whether it was stress, frustration, joy, or contentment—and reflect on how they were influencing her thoughts and decisions. She found that this simple practice helped her understand herself better and navigate her emotions more effectively.

Suma also focused on self-regulation. She knew she tended to react impulsively, especially when under pressure. But through mindfulness and reflection, she learned to pause before responding. When she felt frustration rising in a meeting, she would take a deep breath, ground herself, and choose a more constructive way to express her thoughts. Slowly but surely, she felt more in control of her emotional responses.

Motivation, too, became a key focus for Suma. She realized that her drive had often been centered on external rewards—promotion, recognition, and success. But as she embraced emotional intelligence, she started to shift her focus. She sought deeper fulfilment in her work by aligning her tasks with her values and passions. Her motivation became more intrinsic, and she found herself feeling more connected to her purpose, which brought a renewed sense of energy and satisfaction.

The most profound shift, however, came through empathy. Suma started paying more attention to the emotions of others. She made a conscious effort to listen deeply in conversations, to ask questions, and to show genuine concern for her colleagues' well-being. It wasn't just about getting the work done—it was about understanding how her actions impacted others and how she could support them emotionally.

At first, the changes were subtle. Her colleagues noticed that she seemed more present in meetings, more willing to collaborate, and more attuned to the emotional dynamics within the team. Slowly, Suma rebuilt the connections that had once felt distant. She also found herself feeling more fulfilled in her personal relationships. She could understand her friends' needs more deeply, and in turn, they responded with greater trust and openness.

The Ripple Effect: As Suma continued to develop her emotional intelligence, she noticed a ripple effect. Not only did her professional relationships improve, but she felt more empowered in her personal life as well. She became more resilient in the face of challenges, knowing that her emotions didn't have to control her actions. She learned to navigate conflicts with grace, acknowledging her own feelings and respecting those of others.

Perhaps most importantly, Suma began to feel more connected to herself. She no longer saw emotions as a source of weakness or distraction. Instead, she viewed them as powerful signals that could guide her through life's complexities.

In the end, emotional intelligence became not just a skill to be mastered, but a way of life. It wasn't about perfection—it was about progress, self-compassion, and understanding. Suma's journey was ongoing, but with each step, she grew more confident in her ability to navigate both the challenges and the joys of life with emotional depth and awareness.

Suma's story illustrates the transformative power of emotional intelligence. By developing self-awareness, self-regulation, empathy, motivation, and social skills, individuals can build stronger, more meaningful relationships, both personally and professionally. Emotional intelligence is not just a "soft skill" or an abstract concept; it's a practical tool that shapes our interactions, decisions, and sense of well-being.

As Suma discovered, the key to emotional intelligence is not just learning about it, but actively practicing it in every aspect of life. Through this ongoing process of self-discovery, anyone can unlock the power of their emotions and use them to create deeper connections, enhance personal growth, and lead a more fulfilling life.

D. Hari Soumith
R.O., Bengaluru (N)

Her Finance, Her Future

Celebrating Women's Financial Empowerment with Union Bank of India

As we celebrate International Women's Day, it is essential to recognize that a woman's aspirations are limitless-and so should be her financial opportunities! Whether saving for the future, launching a business, or securing her family's well-being, financial independence is the cornerstone of true empowerment. At Union Bank of India, we stand beside every woman at every step, committed to foster their financial growth and security.

Despite women making up 41% of our total customer base, they contribute just 17% to our overall business, highlighting a significant gap in financial participation. The bank is actively introducing women-centric financial products, organizing outreach programs, and fostering entrepreneurship through dedicated seminars and workshops.

As the nation moves toward Viksit Bharat, unlocking the full economic potential of Aadhi Aabadi is not just a social imperative but a strategic necessity. Economic empowerment is the key to women's empowerment, and financial inclusion plays a vital role in this journey.

Government-led initiatives such as Stand-Up India and Pradhan Mantri Mudra Yojana (PMMY) have been instrumental in supporting women entrepreneurs. Stand-Up India provides financial backing for Greenfield Enterprises led by women, SC, and ST entrepreneurs, while PMMY caters to non-corporate, non-farm small businesses. The results are encouraging-69% of PMMY loans and 84% of Stand-Up India beneficiaries are women. Additionally, almost half of government-recognized start-ups are led by women. These schemes go beyond funding; they empower women to take charge, build businesses, and drive economic progress.

By equipping women with the right financial tools, we are not just supporting individual aspirations, but we are creating a ripple effect that uplifts families, strengthens communities, and accelerates national growth. As we celebrate Women's Day, it is time to reaffirm our commitment to financial inclusion and empower women as key catalysts of India's economic growth with the bank's diverse range of women-centric products and services.

1. Union Samriddhi: A Special Savings Account for Women

Union Samriddhi is a women-centric savings account (for ages 18-70 years) designed to empower homemakers, professionals, and entrepreneurs by providing financial security and growth opportunities. With a quarterly average balance requirement of just ₹15,000, it encourages savings discipline while offering exclusive benefits and comprehensive protection.

2. Union Unnati: Special Current Account for Women Entrepreneurs

Access to financial resources and banking solutions enables women to build successful businesses, contributing to both local and national progress. To support them, our bank introduces Union Unnati-a specialized current account for women entrepreneurs (for ages 18-70 years). With an average monthly balance requirement of just ₹50,000, it offers seamless banking, financial security, and exclusive benefits, empowering women to efficiently manage their businesses and achieve financial independence.

3. "Empower Her" Debit Card: The Empower Her Debit Card offers women enhanced transaction limits, with a daily withdrawal limit of ₹75,000 and a shopping limit of ₹1,50,000. Designed exclusively for Union Samriddhi Savings and Union Unnati Current accounts, it ensures secure and seamless financial freedom.

4. "Divaā" Credit Card: The Divaā Credit Card is designed exclusively for women, offering a range of benefits and exciting offers across health check-ups, travel, lifestyle, shopping, food, entertainment, and more. This card is available to resident Indian women who are salaried individuals (aged 18-65 years) or professionals (aged 18-70 years) with a minimum annual income of ₹2.50 lakh.

With a base credit limit of ₹50,000, the Divaā Credit Card provides financial flexibility, along with exclusive rewards and privileges tailored for today's modern woman.

5. Concessional Rate of Interest for Gold Loans to Women Borrowers: To promote female financial empowerment under the Viksit Bharat – Widening Financial Product Access to Women initiative, our bank has introduced a 10-basis-point concession in the interest rate for women beneficiaries of various gold loan schemes such as Union Krishi Kamdhenu Gold Loan, Union MSME Gold Loan Plus and Union Swarna Sakti Loan Scheme.

6. Union Women Professional Personal Loan Scheme: Our bank is committed to empowering women professionals by providing financial support for their personal needs. Whether it's for marriage, purchasing consumer durables, travel, holidays, or other personal expenses, women can now access funds with ease. This personal loan is available to both salaried women (aged 21 years up to retirement) and non-salaried women (aged 23 to 65 years) who are Income Tax assesses, engaged in recognized professions such as healthcare, aviation, filmmaking, fashion/ interior design, etc., and earning an annual income of ₹5 lakh or more.

This loan is offered as a term loan only, with a maximum amount of ₹50 lakh per individual, ensuring competitive interest rates and making borrowing more affordable.

7. Revamped Union Nari Shakti Scheme:

Union Bank of India provides need-based financial assistance to women-owned and managed MSMEs engaged in manufacturing, production, processing, preservation, services, or trading activities. The loan amount ranges from a minimum of ₹2 lakh, with no upper limit, ensuring flexibility for businesses.

For Self-Help Groups (SHGs), the maximum loan amount is ₹20 lakh. The margin requirement is between 5% and 15%, making financing more accessible. Additionally, processing fees are waived for loans up to ₹2 crore, while loans exceeding this amount receive a 50% concession on applicable charges. Loans up to ₹5 crore qualify for CGTMSE coverage, while only 25% collateral is required for higher amounts, making business financing more accessible and flexible. This initiative aims to empower women entrepreneurs by providing financial support with minimal costs.

8. Stand-Up India Scheme: The Stand-Up India scheme empowers SC/ST and women entrepreneurs by facilitating loans for Greenfield projects in manufacturing, services, trading, and allied agricultural activities. Eligible businesses can avail loans ranging from ₹10 lakh to ₹1 crore, with a minimum margin of 15%, inclusive of government subsidies. Working capital up to ₹10 lakh can be sanctioned as an overdraft (OD) facility. Loans can be secured via collateral or the CGFSSI guarantee, and applications must be routed through the Stand-Up Mitra portal. This initiative fosters entrepreneurship, job creation, and economic inclusion.

9. Union Lakhpati Didi – Financing Scheme for Individual SHG Members: To contribute to the Government's Lakhpati Didi initiative, a dedicated financing scheme has been launched for individual women SHG members under Deendayal Antyodaya Yojana (DAY)-NRLM. This flagship program of the Ministry of Rural Development empowers rural women by providing financial access, livelihood opportunities, and strengthening SHG-based community institutions. Women entrepreneurs can now access hassle-free financing of up to ₹5 lakh through a simplified loan process. No balance sheets, tax returns, or quotations are required for 30 designated activities, and financial benchmark ratios are waived-making business funding easier than ever!

Additionally, the Women Enterprise Acceleration Fund offers exclusive benefits such as credit guarantee fee reimbursement and interest subvention on timely repayments.

10. Modification in CGTMSE Guidelines: To support women entrepreneurs and boost economic growth, the guarantee coverage for credit facilities sanctioned to women entrepreneurs has been increased from 85% to 90%. This aims to encourage Member Lending Institutions (MLIs) to enhance lending to women-led businesses. However, the revised guideline excludes enhancements of existing working capital accounts already covered under the Credit Guarantee Schemes.

Additionally, our bank also offers 0.05% concession in the interest rate for various home loan, education loan schemes and special retail lending schemes for government employees, if the house is singly or jointly owned by a female borrower.

11. Union PINK 2.0 – Women-Specific Cancer Care Plan: In partnership with Manipal Cigna, our bank presents Union PINK 2.0, a dedicated cancer care plan designed exclusively for women. This specialized health insurance provides financial security by offering a 100% lump sum pay-out upon the diagnosis of three major cancers, eliminating the need for hospitalization. It ensures financial peace of mind during life's toughest moments.

12. Nari Shakti Branches: Our bank has recently launched five specialized Nari Shakti branches in Mumbai, Bengaluru, Chennai, Jaipur, and Visakhapatnam under the vision of Viksit Bharat. These branches were virtually inaugurated by Union Finance Minister Nirmala Sitharaman. Nari Shakti branches are more than just banking outlets-they serve as launchpads for women-led businesses. These branches provide credit facilities, advisory services, and networking opportunities while fostering collaborations with entrepreneurs, chambers of commerce, and NGOs. From startup workshops to skill development programs and mentorship, we support women in turning their ambitions into success.

Her Finance, Her Future: A woman's financial strength is the backbone of a thriving community. True empowerment isn't just spoken-it's acted upon. Union Bank of India is committed to equip women with the right financial tools to achieve independence, security and success. Because when women take charge of their finances, they uplift families, fuel economies, and drive national progress.

This Women's Day let's move beyond celebration and act. Empowering women financially unlocks endless possibilities-not just for them, but for society as a whole. The time is now-because when she rises, everyone thrives!

Nilofer Naz
Z.L.C., Powai

पुरस्कार एवं सम्मान

दिनांक 06 एवं 07 फरवरी, 2025 को मुंबई में आयोजित एशिया एल&डी सम्मेलन में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को "निरंतर ज्ञानार्जन एवं विकास में उत्कृष्टता" तथा "वर्ष का उत्कृष्ट नेतृत्व विकास कार्यक्रम" पुरस्कार से सम्मानित किया गया. बैंक की ओर से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री नीरज सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.) तथा श्री सेतुपिच्चै, सहायक महाप्रबंधक (मा.सं.).

दिनांक 04.03.2025 को नई दिल्ली में आयोजित आईएचआरसी पुरस्कार 2024 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को उत्तम कार्यबल आयोजना श्रेणी में "एचडीएम" पुरस्कार से सम्मानित किया गया. बैंक की ओर से श्री सचिन गुप्ता, सहायक महाप्रबंधक (यूएलए, कॉर्पोरेट एवं ट्रेजरी) तथा श्री देवब्रत रंजन दास, सहायक महाप्रबंधक (यूएलए, स्ट्रेटेजी एवं फाइनेंस) ने पुरस्कार प्राप्त किया.

5Rs - Habits Worth Embracing

Over the past few decades, the financial services industry has witnessed a noticeable change in the way banking is carried out. In the past, banking was mostly manual and fragmented with each branch working as an independent entity in itself. With the advent of technology, particularly the internet and smartphones, branches have become increasingly integrated to the financial system. Considering the same, embracing the 5 habits enumerated hereunder will be particularly useful for the new age bankers who are just embarking on their banking career.

1. READ circulars and manuals

In the earlier days, accessibility to information was limited and knowledge sharing played a key role even in carrying out routine banking tasks. If you were posted in a distant location, leave aside circulars, even getting access to newspapers on a daily basis was a challenge. Given these circumstances, bankers used to heavily rely on each other and collective knowledge was the sensible way to take things forward. Times have changed drastically now and everyone is having equitable access to information thus, leaving you with no reason to not read circulars and manuals and relying on others for assistance.

2. REVIEW your work

Banking is invariably fraught with distractions. It is seldom the case that you get an opportunity to put your entire focus on the task at hand without being interrupted by a customer, a phone call, your line manager or colleague. All these interruptions, which are inevitable and faced by everyone from top to bottom in the hierarchy, leave you exposed to the possibility of making errors in your tasks at hand. One good way of minimizing these errors is setting aside some time to review whatever you are doing. This will not only help you in detecting and rectifying your errors by yourself but also give time to the real reviewers of your work to further add value rather than pointing out those errors to you.

3. RECALL your activities of the day

As a banker, it is likely that you interact with several people during the course of the day and might not be able to fulfil some of your obligations on account of being preoccupied with something else. Sparing some time to quickly recall whatever you have done during the day might give you an opportunity to take those unfinished interactions to a logical conclusion. Making notes or creating a to do list for the day is another good way to revisit anything which has been lying pending at your end for a while.

4. REFRAIN from indulging in malpractices and adhere to guidelines

In the past, when branches used to work in silos, compliance monitoring and fraud detection was difficult. This gave an opportunity to nefarious elements to engage in malpractices and evade the operational guidelines even if it was just for seeking thrill. However, with technology integration, literally everything is traceable. So, the chances of any of the malpractices and non-adherence to guidelines going undetected are miniscule. Moreover, it is important to understand that banks have been existing and evolving for more than a century now. Given the repetitive nature of banking processes, it is easy to identify procedural lapses and deviation Therefore, it is advised to refrain from indulging in malpractices and adhere to the guidelines.

5. Build RESILIENCE through physical activity

Over the years, long hours of sitting and significant increase in screen time have become identifiable characteristics of the banking profession. These characteristics have resulted in bankers getting caught with some or the other disease or ailment in the middle of their career. Therefore, it has become increasingly important to lead a healthy lifestyle right from the beginning. According to the World Health Organization, regular physical activity reduces risk of many types of cancer, heart disease and stroke, diabetes, depression and dementia. Thus, engaging in regular physical activity can build or strengthen your resilience and help in coping with stress.

Hopefully, embracing these five habits or 'the five Rs' namely, **read, review, recall, refrain and resilience** will help in successfully navigating your banking career ahead.

Ankit Palliwal
R.M.D.,
C.O., Mumbai

मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली

क्षेत्रीय कार्यालय, एमएलपी, बोरीवली

क्षेत्रीय कार्यालय, सिकंदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, धनबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (द)

क्षेत्रीय कार्यालय, समस्तीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, मचिलीपट्टनम

एमएलपी, कडपा

क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावि

क्षेत्रीय कार्यालय, शिवमोग्गा

क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम

क्षेत्रीय कार्यालय, ग्रेटर पुणे

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-दक्षिण

क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, बठिंडा

क्षेत्रीय कार्यालय, अनंतपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम

क्षेत्रीय कार्यालय, समस्तीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, सेलम

क्षेत्रीय कार्यालय, राजमंड्री

क्षेत्रीय कार्यालय, खम्मम

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-ठाणे

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली (उत्तर)

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे मेट्रो

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

जीवनदायिनी नर्मदा नदी

नर्मदा नदी भारत की एक प्रमुख नदी है, जो मध्य भारत से पश्चिमी भारत क्षेत्र की ओर बहती है. यह मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी नदी है जिसे मध्यप्रदेश और गुजरात की जीवन रेखा भी कहा जाता है. यह नदी मध्यप्रदेश से लेकर गुजरात के अरब सागर तक फैली हुई है. यह नदी अपनी अदभुत सुंदरता, प्राकृतिक विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है. इसका भौगोलिक और धार्मिक महत्व बहुत अधिक है. नर्मदा नदी की लंबाई लगभग 1312 किलोमीटर है. जिसमें से लगभग 1012 किलोमीटर मध्यप्रदेश में बहती है.

नर्मदा नदी की उत्पत्ति: नर्मदा पुराण के अनुसार भगवान शिव के आशीर्वाद से नर्मदा नदी प्रकट हुई हैं. माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को नर्मदा नदी का धरती पर अवतरण हुआ था इसीलिए इस दिन नर्मदा जयंती मनाई जाती है. नर्मदा नदी को "नर्मदा माँ" के नाम से पूजा जाता है और यह नदी भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है.

नर्मदा नदी का मार्ग: नर्मदा नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में अमरकंटक पर्वत के नीचे स्थित नर्मदा कुंड से हुआ है जहाँ माई की बगिया नामक मंदिर है. यहाँ से ये नदी पश्चिम की ओर जाते हुए एक चट्टान से नीचे गिरते हुए जलप्रपात बनाती है जिसे कपिलधारा नाम से जाना जाता है. इसके बाद अनूपपुर, शहडोल, डिंडोरी, मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम, खंडवा, केवड़िया, वडोदरा, नर्मदा (जिला), भरूच आदि स्थानों से होती हुई खंभात की खाड़ी में मिलती है.

नर्मदा नदी अमरकंटक से प्रकट होकर घुमावदार मार्ग और प्रबल वेग के साथ घने जंगलों और चट्टानों को पार करते हुए जबलपुर पहुँचती है. जबलपुर जिसे संस्कारधानी के नाम से जाना जाता है यहाँ पर नर्मदा नदी के किनारे पर लगभग 10 घाट है जिनमें से भेड़ाघाट पर बहुत बड़ा जलप्रपात है, सफेद संगमरमरों के बीच से गुज़रती हुई माँ नर्मदा को आप पंचवटी से नौका विहार करते हुए देख सकते हैं. यह दृश्य अत्यंत मनोरम होता है. विशेष बात यह है कि ग्रीष्मकाल में भी भेड़ाघाट में जलप्रपात में जल कम नहीं होता. साथ ही यहाँ पर जल का प्रवाह इतना तीव्र होता है कि जल की बूँदें चट्टानों से टकराकर आसमान में धुएँ की तरह दिखती हैं इसीलिए इसे धुँआधार के नाम से भी जाना जाता है.

संगमरमर की चट्टानों से निकलकर नदी मिट्टी के उपजाऊ मैदान में प्रवेश करती है, जिसे नर्मदा घाटी कहते हैं, यहाँ की भूमि में प्राकृतिक उपजाऊ शक्ति बहुत ज्यादा होती है. इसके बाद शेर, शक्कर, दुधी, तवा, गंजाल, हिरन, बारना, चोरल, करम और लोहर जैसी महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ नर्मदा नदी में आकर मिलती हैं. इसके बाद नदी ओमकारेश्वर में आती है जहाँ पर नदी का जल सबसे स्वच्छ होता है यहीं पर नर्मदा तट के किनारे पर भगवान शिव का ओमकारेश्वर ज्योतिर्लिंग है. चूँकि यहाँ नदी का जल ओम के आकार में प्रवाहित होता है इसीलिए इसे ओमकारेश्वर कहते है. इसके बाद नदी गुजरात के केवडिया में जाती है जहाँ पर सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा है जो कि विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है, इसके बाद नदी भरूच से होते हुई खंभात की खाड़ी से अरब सागर में समाहित होती है.

नर्मदा नदी का उल्टी दिशा में प्रवाह: भारत की सभी नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है परंतु नर्मदा नदी भारत में पश्चिम से पूर्व की बजाय पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है अर्थात उल्टी दिशा में बहती है. नर्मदा नदी के उल्टी दिशा में बहने की वैज्ञानिक वजह रिफ्ट वैली है, जिसकी वजह से यह नदी ढलान की विपरीत दिशा में बहती है.

पौराणिक कथा के अनुसार, राजकुमार सोनभद्र के साथ नर्मदा का विवाह तय हुआ था, लेकिन विवाह से पहले नर्मदा ने राजकुमार को देखने की इच्छा जाहिर की और अपनी सहेली जोहिला को संदेश लेकर भेजा. जब सोनभद्र ने जोहिला को देखा, तो उन्हें नर्मदा समझकर प्रेम प्रस्ताव रख दिया. जोहिला भी इस प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं कर सकीं और दोनों का प्रेम संबंध बन गया. जब नर्मदा जी को इस बात का पता चला, तो वे क्रोधित हो गईं और जीवनभर अविवाहित रहने का संकल्प ले लिया. इसी नाराजगी में उन्होंने पूर्व से पश्चिम दिशा की तरफ अर्थात विपरीत दिशा में बहना शुरू कर दिया.

नर्मदा नदी का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व: यह नदी अन्य प्रमुख नदियों से अलग है क्योंकि इसका बहाव उल्टी दिशा में है, जबकि अधिकांश भारतीय नदियाँ गंगा, यमुना, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियाँ दक्षिण या पूर्व दिशा में बहती हैं. नर्मदा नदी को भारतीय संस्कृति और धर्म में एक विशेष स्थान प्राप्त है. इसे "माँ नर्मदा" के

नाम से पूजा जाता है और इसे हिंदू धर्म में अत्यधिक पवित्र नदी माना जाता है. नर्मदा नदी का उल्लेख अनेक धार्मिक ग्रंथों में किया गया है. नर्मदा नदी के तट पर अनेक तीर्थ स्थल है इनमें अमरकंटक, जबलपुर, नर्मदापुरम, महेश्वर और ओम्कारेश्वर प्रमुख हैं. अमरकंटक में माँ नर्मदा का उद्गम स्थल है और माई का बगिया नाम से मंदिर है, जबलपुर में ग्वारीघाट पर नदी के बीच में माँ नर्मदा का मंदिर है, नर्मदापुरम में सेठानी घाट, महेश्वर में रानी अहिल्याबाई द्वारा बनवाए गए किले और मंदिर है और ओमकारेश्वर में भगवान शिव का ज्योतिर्लिंग है. इन सभी घाटों पर प्रतिदिन संध्या के समय माँ नर्मदा की भव्य आरती होती है.

नर्मदा नदी को भगवान शिव का आशीर्वाद है इसीलिए नर्मदा नदी से निकले हर कंकड़, पत्थर को शिवलिंग माना जाता है और इन्हें नर्मदेश्वर के नाम से जाना जाता है. नर्मदेश्वर शिवलिंग की न तो स्थापना होती है न ही विसर्जन होता है अर्थात जैसे अन्य शिवलिंग को पूजा स्थान पर स्थापित करने से पहले पंडितजी द्वारा पूजा करवाना होता है परन्तु नर्मदेश्वर शिवलिंग को पूजा स्थान पर सीधे स्थापित किया जा सकता है.

ऐसी मान्यता है की गंगा नदी में स्नान से पाप धुल जाते है परंतु नर्मदा नदी के दर्शन मात्र से ही पाप धुल जाते हैं. साथ ही जैसे गंगा नदी का जल किसी भी पात्र में रखने पर खराब नहीं होता उसी तरह नर्मदा जल भी कभी खराब नहीं होता.

यह विश्व की एकमात्र नदी है जिसकी परिक्रमा होती है. ऐसा माना जाता है की मार्कन्डेय ऋषि ने सबसे पहले नर्मदा जी की परिक्रमा की थी. नर्मदा परिक्रमा लगभग 2800 किलोमीटर की होती है. शास्त्र सम्मत यह परिक्रमा 3 वर्ष 3 महीने और 13 दिन में होनी चाहिए. नर्मदा परिक्रमा मध्यप्रदेश के अमरकंटक से शुरू होती है और गुजरात के भरूच तक जाकर फिर वापिस अमरकंटक तक आना होता है.

नर्मदा नदी का पर्यावरणीय महत्व: नर्मदा नदी का पर्यावरणीय महत्व भी अत्यधिक है. यह नदी न केवल पानी का मुख्य स्रोत है, बल्कि यह क्षेत्र की जैव विविधता को भी बनाए रखने में मदद करती है. नर्मदा नदी के आसपास के क्षेत्रों में घने जंगल और वन्यजीवों की विविधता मौजूद है. यहाँ पर जंगली जानवर जैसे कि हाथी, बाघ, हिरण, बारहसिंघा, तेंदुआ और विभिन्न प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं. नर्मदा नदी में घड़ियाल और अन्य दुर्लभ जलचर पाए जाते हैं. नदी के आसपास का क्षेत्र पर्यावरण के दृष्टिकोण से अत्यधिक समृद्ध है और नर्मदा नदी इसके जीवनदायिनी स्रोत के रूप में कार्य करती है. इस नदी का पर्यावरण और जैव विविधता पर इतना अधिक महत्व है कि अनेकों वैज्ञानिकों ने इस विषय पर शोध किया है और इसी विषय पर शोध के लिए इन वैज्ञानिकों को अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं.

नर्मदा नदी का आर्थिक महत्व: नर्मदा नदी का आर्थिक महत्व भी अत्यधिक है. यह नदी मध्यप्रदेश और गुजरात के कृषि जल आपूर्ति, पेयजल आपूर्ति और बिजली उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. इसके जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है, जिससे मध्य प्रदेश और गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा मिलता है. इसके अलावा, नर्मदा बाँध परियोजना के अंतर्गत नर्मदा नदी पर छोटे-बड़े लगभग 30 बाँध बनाए गए है और जल विद्युत परियोजनाओं ने इस क्षेत्र की ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ाया है. इस नर्मदा बाँध परियोजना से जल का संचय, भूमि जल संवर्धन, कृषि भूमि की उत्पादन क्षमता में वृद्धि, महानगरों को पेय जल आपूर्ति, ग्रीष्म ऋतु में सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में जल आपूर्ति, विद्युत उत्पादन जैसे अनेक लक्ष्यों की प्राप्ति हुई है. इन बाँधों में बनाए गए विद्युत उत्पादन केंद्र से जो बिजली बनाई जाती है वह प्रदेश के उपयोग में तो आती ही है साथ ही बिजली की जरूरत कम होने पर इसे अन्य राज्यों को बेचकर राजस्व प्राप्त किया जाता है.

नर्मदा नदी पर बने प्रमुख बाँध

बरगी बाँध- जबलपुर के पास बरगी में इस बांध को 1990 में बनाया गया था इसमें 21 गेट है और 90 मेगावाट बिजली उत्पादन क्षमता है.

इंदिरा सागर बाँध- यह बाँध खंडवा जिले के नर्मदानगर में बनाया गया है जो कि 2005 से कार्यरत है. जलाशय में संग्रहित पानी की मात्रा के संबंध में सबसे बड़ा बाँध है. इसमें 1000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है.

सरदार सरोवर बाँध- गुजरात के केवड़िया में बना यह बाँध भारत का दूसरा सबसे बड़ा बाँध है जिसकी ऊँचाई 163 मीटर है. इसमें 30 गेट है.

नर्मदा नदी का संरक्षण: नर्मदा नदी मध्यप्रदेश और गुजरात के लिए बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए इसके संरक्षण के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं. नर्मदा नदी की सफाई और प्रदूषण नियंत्रण के लिए न केवल सरकार बल्कि अनेक सामाजिक संस्थाएँ और संगठन काम कर रहे हैं. साथ ही सरकार ने नर्मदा नदी के किनारे जल प्रबंधन, बाढ़ नियंत्रण और जल संरक्षण के लिए अनेक योजनाएँ बनाई हैं. भू माफियाओं द्वारा नर्मदा नदी से रेत की चोरी रोकने के लिए भी सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं. नर्मदा नदी के किनारे स्थित जंगलों और जैवविविधता तंत्र के संरक्षण के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर योजनाएँ बनाई गई हैं, ताकि जैव विविधता को बनाए रखा जा सके.

नर्मदा नदी भारतीय उपमहाद्वीप की एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण नदी है, जोकि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है ही, साथ ही यह पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है. नर्मदा नदी भारतीय इतिहास, संस्कृति और धार्मिकता के साथ गहराई से जुड़ी हुई है. इसके संरक्षण के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ियाँ भी इस अदभुत नदी से लाभ प्राप्त कर सकें और इसका महत्व बनाए रख सकें.

विशाल शर्मा
डी.आई.टी.,
कें.का., मुंबई

एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व - रीटा डिसूजा

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, अनेक्स, मंगलूरु में पदस्थ वरिष्ठ प्रबंधक, सुश्री रीटा डिसूजा, नारी सामर्थ्य और समर्पण की मिसाल हैं. उनका जीवन खेल, सेवा और नेतृत्व का अद्भुत संगम है. एक एथलीट के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश और बैंक का नाम रोशन किया, साथ ही एक बैंक कर्मी के रूप में उन्होंने चुनौतीपूर्ण बदलावों के दौरान अपनी प्रतिबद्धता और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया. ऊर्जावान और बहिर्मुखी प्रकृति, संगठनात्मक कौशल, टीम भावना, और लोगों से जुड़ने की क्षमता ने उन्हें हर जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने में सक्षम बनाया. उनका मानना है कि उम्र केवल एक संख्या है — विकास और आनंद हर उम्र में संभव है. अपनी उपलब्धियों के माध्यम से उन्होंने यह मिसाल कायम की कि एक महिला अनेक भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती है. हमारे संवाददाता जॉन अब्राहम के साथ रीटा जी का संवाद -

अपने बचपन और परिवार के बारे में कुछ बताएं?

मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान हूँ. उनके विवाह के 13 वर्ष के बाद 1965 में मेरा जन्म हुआ. मेरा पालन-पोषण चुनौतियों के बीच हुआ, लेकिन मेरे माता-पिता ने अटूट प्यार और मजबूत मूल्यों के साथ मेरी परवरिश की. मेरी माँ मेरा आधार स्तंभ है, अब वे 99 साल की हैं. मेरा बेटा रॉयस्टन डिसूजा जर्मनी में सीआरएम कंसल्टेंट है.

मैंने सेंट गेरोसा स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और सेंट एग्नेस कॉलेज, मंगलूरु से बी.ए. की डिग्री हासिल की. मैं अपने स्कूल और कॉलेज की एथलेटिक टीम की कप्तान थी. मैंने 100 मीटर, 200 मीटर, लंबी कूद और रिले में भाग लेना शुरू किया और स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कई पुरस्कार प्राप्त किए.

आपने बैंकिंग करियर की शुरुआत कब और कैसे की?

मैंने जनवरी 1986 में तत्कालीन कॉर्पोरेशन बैंक के प्रधान कार्यालय, मंगलूरु में स्पोर्ट्स कोटा के तहत लिपिक के रूप में कार्यारंभ किया. इसके बाद विभिन्न शाखाओं में सेवाएँ दीं और 2007 में अधिकारी पद पर पदोन्नत हुई. विशेष रूप से कोटारा शाखा में फिनेकल 10 के पायलट प्रोजेक्ट पर कार्य करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण एवं गर्वपूर्ण अनुभव रहा.

आपके कोच कौन थे ? आपके जीवन पर उनका क्या प्रभाव रहा?

मैंने श्री अप्पाचू (एनआईएस) और स्वर्गीय श्री लैंसी से प्रशिक्षण प्राप्त किया . वे न केवल कोच थे बल्कि गुरु और समर्थन के स्तंभ थे, उन्होंने सुनिश्चित किया कि हम एथलीटों को सर्वोत्तम प्रशिक्षण मिले और साथ ही हमें दृढ़ता और टीम वर्क के मूल्यों का भी संचार किया. केवल एक प्रशिक्षण मैदान से अधिक, हमारा खेल वातावरण एक घनिष्ठ परिवार की तरह लगता था. हर खिलाड़ी का एक सपना था और खेल ही हमारा जीवन था.

आपको प्रेरणा किनसे मिली ?

ओलंपियन और अर्जुन पुरस्कार विजेता वंदना राव मेरी आदर्श और प्रेरणा का एक जबरदस्त स्रोत रही हैं. उन्होंने 1984 और 1988 में ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली कर्नाटक की पहली महिला

के रूप में इतिहास रचा. हमने तत्कालीन कॉर्पोरेशन बैंक के मंगलूरु स्थित प्रधान कार्यालय में साथ काम किया था. मंगला स्टेडियम में उनके साथ प्रशिक्षण लेना और विभिन्न एथलेटिक मीट में प्रतिस्पर्धा करना एक अविश्वसनीय अनुभव था. उनकी लगन, अनुशासन और उत्कृष्टता की निरंतर खोज ने मुझ पर एक अमिट छाप छोड़ी. एक प्रेरणा से कहीं ज़्यादा, वह एक सच्ची मार्गदर्शक और एक चिरस्थायी दोस्त रही हैं.

आपने कई महत्वपूर्ण प्रतियोगिताओं में भाग लिया है. कृपया इनके बारे में बताएं.

मैंने मैसूर की राज्य दशहरा प्रतियोगिताओं, इंटर-स्टेट सीनियर एथलेटिक चैंपियनशिप, इंडियन नेशनल ओपन एथलेटिक्स, कर्नाटक स्टेट वेटरंस मीट, नेशनल मास्टर्स एथलेटिक चैंपियनशिप और बैंक स्पोर्ट्स बोर्ड के दक्षिणी क्षेत्र व अखिल भारतीय अंतर बैंक ओलंपियाड में हिस्सा लिया. 1986 से 2007 तक लगातार विभिन्न शहरों में बैंक का प्रतिनिधित्व किया. इन प्रतियोगिताओं में व्यक्तिगत व रिले स्पर्धाओं में अनेक स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्राप्त किए. विशेष रूप से, मैंने पी.टी. उषा, शाइनी अब्राहम, अश्विनी नचप्पा जैसे अंतरराष्ट्रीय दिग्गजों के साथ ट्रैक साझा किया. त्रिवेंद्रम में इंटर यूनिवर्सिटी मीट और मुंबई में ओपन नेशनल्स में भाग लेना मेरे लिए गौरव का विषय रहा. 2004 में, मुझे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य मिला जब मैंने बैंकॉक, थाईलैंड में आयोजित 13वीं एशिया मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में महिलाओं की 4x100 मीटर रिले टीम में भाग लिया. इस प्रतियोगिता में हमारी टीम ने चौथा स्थान प्राप्त किया — यह अनुभव मेरे लिए अत्यंत गौरवपूर्ण रहा.

खेल जीवन के अविस्मरणीय पल और उपलब्धियाँ बताएं?

1987 में जब मैं 6 सप्ताह की गर्भवती थी, तब मैंने अंतर बैंक मीट में 100 मीटर, 200 मीटर, 4x100 और 4x400 मीटर रिले में भाग लेकर स्वर्ण व रजत पदक जीते — यह मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से एक साहसिक उपलब्धि थी. 1989 में 10 माह के शिशु को माँ के पास छोड़कर मद्रास में हुई अंतर बैंक मीट में भाग लेना, फिर कोलकाता में रजत व स्वर्ण पदक जीतना मेरे लिए भावनात्मक और प्रेरणादायक पल थे. जीवन भर की इस यात्रा में मैंने सैकड़ों पुरस्कार प्राप्त किए हैं — राज्य, राष्ट्रीय और बैंकिंग स्तर पर. हर पदक मेरी लगन, समर्पण और संतुलन की कहानी बयाँ करता है. भले ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों के कारण राष्ट्रीय कैंपों में भाग नहीं ले पाई, लेकिन जो कुछ हासिल किया है, मेरे लिए गर्व का विषय है.

खेल और बैंकिंग के अलावा आप अन्य गतिविधियों में भी शामिल हैं, आपके बहुमुखी व्यक्तित्व के संबंध में बताएं?

बचपन से ही मैं पाठयक्रम से इतर गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल रही हूं, मंचीय प्रस्तुतियों का शौक मेरे खेल करियर के साथ-साथ जारी रहा. तत्कालीन कॉर्पोरेशन बैंक में शामिल होने के बाद, मैंने बैंक कर्मचारी खेल और मनोरंजन क्लब के माध्यम से कई कार्यक्रमों के आयोजन और मेजबानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. 2006 में वित्त मंत्री की उपस्थिति में बैंक के 100वें स्थापना दिवस से लेकर 2024 तक इस कार्यक्रम की मेजबानी कर रही हूँ. लगातार तीन वर्षों से यू-जीनियस क्विज़ के लिए ब्रेक टाइम के दौरान खेल गतिविधियों का आयोजन तथा 13 वर्षों से एनआरआई ग्राहक सभा का आयोजन कर रही हूँ. मैंने नराकास की आशु प्रतियोगिताओं में भी पुरस्कार जीते हैं. मैं अपने संगठन और सहकर्मियों से मिले अटूट समर्थन के लिए आभारी हूँ.

आप भारत में ट्रैक और फील्ड खेलों का भविष्य कैसे देखते हैं?

भारत में ट्रैक और फील्ड का भविष्य आशाजनक है, जिसमें सरकार और निजी क्षेत्र दोनों से समर्थन बढ़ रहा है. खेलो इंडिया, TOPS (टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम) और जमीनी स्तर के कार्यक्रम जैसी पहल युवा प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें निखारने में मदद कर रही हैं. भारतीय एथलीट पहले ही वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना चुके हैं और प्रशिक्षण में निरंतर निवेश के साथ हम और भी बड़ी उपलब्धियों की उम्मीद कर सकते हैं. हालांकि, स्कूल और कॉलेज स्तर पर ट्रैक और फील्ड के विकास पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है, भारत में विश्व स्तरीय स्प्रिंटर्स, जंपर्स और थ्रोअर तैयार करने की क्षमता है जो ओलंपिक सहित उच्चतम स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं.

ट्रैक और फील्ड के आकांक्षियों को आप क्या संदेश देना चाहती हैं?

ट्रैक और फील्ड केवल एक खेल नहीं है, जीवनशैली है, जो अनुशासन, लचीलापन और कभी हार न मानने वाला रवैया पैदा करता है. एथलेटिक्स में करियर बनाने की ख्वाहिश रखने वाले बच्चों को मेरी सलाह सरल है- खुद पर विश्वास रखें, प्रतिबद्ध रहें और कड़ी मेहनत करें. ट्रैक और फील्ड में सफलता रातों-रात नहीं मिलती, इसके लिए धैर्य, दृढ़ता और खेल के प्रति जुनून की आवश्यकता होती है. फिटनेस, तकनीक और मानसिक शक्ति में एक मजबूत आधार बनाने पर ध्यान दें. चुनौतियाँ और असफलताएँ प्रक्रिया का हिस्सा हैं, लेकिन वे आपको एक मजबूत एथलीट बनाती हैं. भारत में एथलेटिक्स के लिए बढ़ते समर्थन के साथ, अवसर बढ़ रहे हैं. यदि आप वास्तव में समर्पित हैं और प्रयास करने के लिए तैयार हैं, तो ट्रैक आपको आगे ले जा सकता है. **"बड़े सपने देखो, कड़ी मेहनत करो और अपनी पहचान बनाओ"**

जॉन अब्राहम
अं.का., बेंगलूरु

यात्राएं क्यों महत्वपूर्ण हैं?

किसी ने क्या खूब कहा है कि दुनिया एक किताब है और जो यात्रा नहीं करते हैं वे केवल एक पन्ना ही पढ़ते हैं. यात्रा का अर्थ है रोजमर्रे की जिंदगी और तनाव से दूर होकर कुछ दिनों के लिए देश-विदेश के धार्मिक स्थलों या प्राकृतिक/कृत्रिम सौंदर्य वाले स्थानों की यात्रा करना. यात्रा से न केवल आपको मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है, बल्कि विभिन्न स्थानों, विभिन्न संस्कृतियों, उनके रीति-रिवाजों, पहनावे, सामाजिक व्यवस्था, भाषा के बारे में भी काफी जानकारी देता है. जैसे पर्यटन के विभिन्न घटक हैं जैसे धार्मिक पर्यटन, प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटन, कृत्रिम सौंदर्य या भव्य निर्माण स्थल, औद्योगिक पर्यटन, कृषि पर्यटन, राजनीतिक, सामाजिक-शैक्षिक पर्यटन, ठंड के मौसम में पर्यटन, स्कूल या कॉलेज यात्राएं वाले पर्यटन.

हमारे देश में धार्मिक स्थलों पर पर्यटन खूब होता है. हमारे देश को प्राचीन काल से ही धार्मिक एवं आध्यात्मिक आधार प्राप्त रहा है. हजारों वर्षों से, हमारे पास कई बड़े मंदिर, कुंड, गुफाएं, स्तूप, आश्रम, मठ, घाट, किले, महल, धाम, किलेबंदी, कृत्रिम तालाब, झीलें, बगीचे, कुएं (वाव) और नक्काशीदार विभिन्न देवी-देवता, राक्षस, पशु, पक्षी, पेड़, चंद्रमा, सूर्य, ग्रह, सितारे, नर्तकियाँ, अप्सराएँ आदि. की अनेक मूर्तियाँ हैं. इससे पता चलता है कि हमारी संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी होने के बावजूद कितनी सभ्य और उन्नत है. यह सोचकर हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है कि हम भी इस महान और प्राचीन सभ्यता का हिस्सा हैं. दुर्भाग्य से आज हमारे देश में बहुत से लोग हमारी इस प्राचीन, महान, सभ्य एवं सुसंस्कृत संस्कृति से परिचित भी नहीं हैं. उसके लिए सिर्फ किताबी ज्ञान ही काम आता है लेकिन पूरे देश में घूमने से ही हमें अपनी असली पहचान पता चलेगी. जैसे-जैसे हम देश-विदेश की यात्रा करेंगे, हमारा ज्ञान बढ़ेगा, कई खट्टे-मीठे अनुभव हमारे साथ होंगे, दुनिया और जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण व्यापक, समृद्ध और सकारात्मक होगा. इसमें बिल्कुल भी संदेह नहीं है कि धीरे-धीरे हमारी वाणी, व्यवहार और रहन-सहन में आमूल-चूल परिवर्तन आएगा और हमारा व्यक्तित्व विकास होगा. पर्यटन से जहां आत्मविश्वास, साहस, धैर्य और बढ़ता है वहीं भय, शंका, चिड़चिड़ापन, लाचारी, अकेलापन, घृणा, ईर्ष्या जैसे गुण दूर हो जाते हैं. जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण आता है, भाषा और वाणी पर नियंत्रण रहता है. हमने जो जानकारी ली है उसके आधार पर कहें तो पर्यटन के दौरान हमें भव्य, असामान्य, दिव्य, अति-सुंदर, अलौकिक, अदभुत, अकल्पनीय स्थानों, वस्तुओं या इमारतों के दर्शन होते हैं, जिससे हमारे अंदर एक बड़ी सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है. और हमें भी लगता है कि हमें कुछ बड़ा करना चाहिए. उससे, हम निश्चित रूप से अपने जीवन में कुछ असाधारण बना सकते हैं. सामान्य से असाधारण तक की यह यात्रा पर्यटन से ही संभव है.

आजकल पर्यटन, यात्रा, भ्रमण की परिभाषा और अर्थ बदले नजर आते हैं. यह विचार उत्पन्न होने लगा है कि पर्यटन का मतलब तड़क-भड़क, मौज-मस्ती, खाना-पीना और नाचना है. जिन स्थानों पर हम पर्यटन के लिए आए हैं उनकी विशेषताएँ क्या हैं? इसका इतिहास क्या है? हम इससे क्या सीख सकते हैं? यह जगह हमें क्या बता रही है? पर्यटन को लेकर जब ये या इससे मिलते-जुलते प्रश्न हमारे मन में उठेंगे तभी हमारे पर्यटन का उद्देश्य पूरा होगा. वही स्थान हमें इन सवालों के जवाब देंगे लेकिन इसके लिए हमें प्रत्येक स्थान का अवलोकन करते समय एक व्यापक दृष्टिकोण रखना होगा जब हम उन स्थानों का बहुत ही अलग तरीके से निरीक्षण करेंगे. अगर हजारों साल पहले सतसमुद्र में कोई व्यवस्था नहीं थी तो यह कैसे संभव है? और जब ऐसे सवाल हमारे मन में होते हैं तो हम अनजाने में उन सवालों के जवाब ढूंढने के लिए अलग रास्ता अपना लेते हैं और यहीं हमारा पर्यटन सार्थक हो जाता है. इसलिए पर्यटन करना ही नहीं, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि हम यह किस दृष्टिकोण से और किस उद्देश्य से कर रहे हैं. आख़िरकार, हमारे समग्र विकास के लिए यात्रा, यात्रा, पर्यटन का कोई विकल्प नहीं है. यदि आप पर्यटन कर चुके कुछ लोगों की राय और अनुभवों पर नजर डालें तो आपको पता चलेगा कि पर्यटन के बाद उनके जीवन में कितने और कैसे सकारात्मक बदलाव आए हैं.

'सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल
जिंदगानी फिर कहाँ,
ज़िंदगानी अगर रही भी तो,
जवानी फ़िर कहाँ'

सुशांत उल्हासराव लताड
जालना शाखा,
क्षे.का., अहमदनगर

Let Food Be Thy Medicine

We all love our food. When I say our food, it's not uniforms for all but food, which is specific to our tradition, culture and family habits. As a generation, today we are most fortunate to have all varieties of food, all modes of delivery and most importantly affordability to all.

But as we know, too much of anything is bad. Excess availability of food and its over indulgence is causing lifestyle diseases like obesity, diabetes and several others. While physical work has come down, consumption of food has increased on the contrary. The evolution of the human body is such that it tries to store the excess food intake as fat to deal with any scarcity in future. But such scarcity never comes in one's life time. So, fat accumulates in the body. Such accumulated fat in the body starts obstructing normal functioning of all our internal organs and also causes restrictions on our mobility, flexibility and aesthetics. The fat surrounding our internal organs is called visceral fat and it has serious repercussions for our health and it forces the body to function at sub-optimal level. If we do not take care of it early and continue with our excess intake of food, we are sure to end up taking medicines.

Fortunate as we are, Indian traditions and scriptures preach us to treat food as our medicine. Body loses its ease to act and perform if it is deprived of food. Hunger is just like any bodily illness which subsides with intake of medicines. We do not indulge in excess medicine, we never ask a doctor whether we can take extra medicine than what is prescribed, because we know that medicine is good but excess is bad. However, we fail to apply this simple logic when it comes to our food, we end up eating more food than what is required.

We tied our emotions to food intake and this ends up in excess intake of food. Whether the mood is happy or sad, the result is more food intake. Binge eating is an addiction afflicting us all today and we need to change our mindset and become cautious.

Our scriptures advocate us to take food like a medicine, in right kind, right quantity and importantly at right time. We are always chasing the targets, we never care what we take and when we take, more particularly our dinner. It is mentioned that our body has an inbuilt mechanism to repair and rejuvenate itself. It does so during our sleep & rest and hence it is required that we take sufficient rest and sleep. If we burden our body with excess food or food at late night, it has to engage its resources to digest that food and as a consequence the repair mechanism goes wrong.

Then, why don't we try the food as medicine viz., right kind, right quantity and at right time. It has no side effects in the sense it is understood. Yes, it has positive side effects on all systems of our body. The body would become robust and optimally functioning and it surely helps in achieving our life goals. This vehicle of ours i.e., the body needs good fuel i.e. good food and good thoughts so that the journey can be completed as planned without any breakdowns or let downs. As the food, so the mind, as the mind so the thought; as the thought, so the act. Food is an important factor which determines the alertness and lethargy, the worry and calm, the brightness and dullness. A Balanced diet containing carbs, protein, fat and vital minerals and more importantly at right timing can bring a positive change in one's life. A wonderful advisory from the Yore is that we must listen to our body. Body at all times is trying to communicate to us when it wants food and when it doesn't want. But we never heed to it and just get swayed by taste and emotions. Food excesses are often rationalized on grounds of culture and religion. But no culture, tradition or religion would want its members to suffer and it is only due to our exploitative nature that we take shelter in them to justify our excesses.

Our scriptures clearly advised us to take food in three portions, water in one portion and leave space for air in one portion. So, it is obvious that we shall not burden our stomach with volumes of food which may hamper digestion and the body may be deprived of essential nutrition and flexibility. This ratio of food to water & air comes down as we grow older and our energy requirement comes down. Further, prudence stipulates that the quality and quantity of our food shall depend on the nature of our work and our life stage like budding stage, growth stage and retiring stage.

To conclude, it is time we listened to our rich heritage to improve our understanding of the body and mind. A body well nourished by right kind of food and a mind filled with right kind of thoughts can produce miraculous results for ourselves as well as for the society. A healthy body and mind are an asset for the family and the opposite a liability. It is up to us to decide whether we want to be an asset for our family or a liability. The following verse from **Bhagavad Gita 15.14** may prompt us to re-orient our approach to food:

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणपानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चुतर्विधम् ॥

Meaning: I am the fire of digestion in the bodies of all living creatures and I join with the air of life, outgoing and incoming, to digest the four kinds of food stuff}

It is a self-verifiable fact that we are active and agile when our food is pure and intake is timely and adequate.

So. Let Food Be Thy Medicine….

A simple food math: Every 100 extra calories we take, our body gains weight by 11 g. Be calorie conscious.

PORTION CONTROL = TASTE BHI
HEALTH BHI

L.K. Sudhakar Rao
Z.O.,
Vishakhapatnam

Heritage Industries of Phulia- Jamdani Sarees

Our country has a proud heritage of cottage industries, specially the handloom and powerloom sector where different cotton and silk yarns are weaved into dreamy sarees. Each dreamy saree has a rich history and its own fan following. However, my visit to Phulia was probably the most exotic experience I ever had in my life. Phulia is a small town in Shantipur block of Nadia district of West Bengal. Phulia is surrounded by various villages where the art of weaving Tant and Jamdani sarees in handloom or powerloom is carried out in form of cottage industries. Phulia Jamdani is also known as Shantipur Jamdani, the name of the block and is a close cousin of the world renowned Dhakai Jamdani saree, the origin of Jamdani.

After the partition in 1947, many weavers from Bangladesh migrated to India and were rehabilitated in West Bengal. This was the start of jamdani weaving in present day India. Over the last few decades, the art of jamdani weaving has witnessed a revival due to support from the governments and non-government organizations in both India and Bangladesh.

The purpose of my visit to the village of artists was shopping and all I expected was to select a bunch of sarees from the ones available, more of a factory outlet kind, the only intention was to pay directly to the artist instead of the middleman. But

to my amazement, the visit soon culminated into my full-fledged engagement into selecting designs and colour schemes. Yes, the fine designs and colorful yarns were set in front of me and I was given the freedom to choose the patterns which will be weaved in the coming days. Surprisingly, I had the privilege to choose fabric from cotton, linen, tussar, resham, rayon, matka silk, muga silk, raw silk; to choose the colour scheme in every saree; to suggest types of Zari and threads for molifs and also choose the intricate designs of Jamdani in a different yarn. It was a mind-boggling task! However, the artists helped me in finalizing the designs. My amazement had no bounds when I realized that all this homework ensured that, I was provided with tailor made products, the sarees were to be weaved as per my liking.

My high ride of excitement continued as I became a part of the dying process. Basic yarns were dyed as per colour scheme and laid out under sun to dry, in the backyard usually over bamboo logs. Every morning I visited the weaver's household to behold the process of designing a dreamy saree. This was my first encounter with a loom. Jamdani sarees are woven on the brocade loom. This is a supplementary weft technique of weaving, where the artistic motifs are produced by a non-structural weft, in addition to the standard weft that holds the warp threads together. The standard weft creates a fine, sheer fabric while the supplementary weft with thicker threads adds the intricate patterns to it. Each supplementary weft motif is added separately by hand by interlacing the weft threads into the warp with fine bamboo sticks using individual spools of thread. The result is a myriad of vibrant patterns that

appear to float on a shimmering surface. What's remarkable in this weaving technique is that the pattern is not sketched or outlined on the fabric. Instead, it is drawn on a graph paper and placed underneath the warp. Needless to say, jamdani weaving is an extremely skilful, laborious and time-consuming process.

Process of designing a Phulia Jamdani

Bleaching and Drying: Prior to dyeing, the yarns are bleached with Bleaching Powder for light and medium shades. However, Bleaching is not used for very dark shades.

Sizing: Sizing is a process where starch (sago or Boiled Rice or Khoi) is coated on the warp yarns for imparting strength; enhance abrasion resistance to withstand the stress and strain exerted during weaving process. There by it reduces the yarn breakage and improves quality and efficiency of weaving. The loom sizing is also carried out after weaving to reduce reed marks, to impart stiffness to the fabric and bring in proper look.

Warping and Beaming: Warping is a process of making desired length and width of warp sheet by combining many small packages called bobbins/ spools. The process of warping used in Phulia is known as sectional

warping. Sectional warping process is carried on a wooden drum from a wooden peg creel. The process of transferring warp sheet to a weaver beam to mount on loom is called beaming. All these processes are carried out manually.

Pirn Winding: After dyeing and sizing of weft yarns, the weft package called pirn is prepared on Charkha. Pirn winding is the process of transferring the yarns from the hanks into bobbin/pirn of the shuttles used in the weft while weaving. The rotation of the Charkha is carried out by hands.

Preparation of Loom: Preparation of the loom for weaving is done by the skilled weavers and the process involves the following activities:

Drafting and Denting: The process of drawing in/ passing the warp yarn through the healds of the loom as per the draft of the design to be woven is known as drafting. This helps in the future process of weaving for easy locating of broken ends and also helps in the designing processes. Generally, sarees are woven in plain and drawn in straight pattern. The extra warp in body and border are drawn through harness cord of brocade for designing. Denting is a process of passing the yarn through the reed. The process helps in maintaining the width of fabric during weaving, beating up of weft yarn into fell of the cloth and the reed guides the shuttle during weaving.

Setting up of Brocade: Prior to the weaving process, the weaver sets the design of the saree border and buttas with the help of extra warp. The respective ends of the design are tied to an attachment called brocade. This Brocade design gives lots of value addition to the fabric during weaving. And very often weft buttas are produced during weaving by inserting weft threads by hand.

Weaving: The weaving is performed by the skilled weavers of the family. The looms being used are mainly traditional fly shuttle pit looms with brocades.

Designing is done through Tie and dye borders, extra warps and extra weft and designs with brocades. The motives of the designs are panna hajar (thousand emeralds), kalka (paisley), butidar (small flowers), fulwar (flowers arranged in straight rows), tersa (diagonal patterns), jalar (motifs evenly covering the entire saree), duria (polka spots) and charkona (rectangular motifs). However floral and geometric motives are most popular.

As the sarees were many and weaving a saree takes time, the job was distributed among the households in village. As the days passed by and the sarees started taking shape, the involvement of the whole family in the entire process was clearly visible in each household, from young kids to elders, each person did their part. The youngsters worked as assistants helping in weaving the motifs and learning the process of intricate work. The "khat khat" sound of the loom was all over the place. A mesh of colourful threads would hang over every loom as if one has messed up the things. Out of this mesh and mess, the skillful hands would weave while singing a song of the motherland.

Jamdani sarees are characterized by sheer or almost transparent background due to its ultra-fine fabric with intricately woven designs. The pattern could be self-designs where same thread colour is used for the base as well as the motifs or contrast colours for the base and motif or half and half pattern where two colours are used to prepare of the base as well as the motifs. Originally Jamdani sarees were prepared out of cotton yarn mostly in white, but with the changing times, Jamdani is also available in cotton silk as well as pure silk. The beauty of any saree is highlighted by its "border" which is known as "par" and "pallu" or "aanchol". The use of gold and silver yarn in these parts made the sarees shimmer.

As the first saree was ready, the weaver family, held the same in front of me like a proud parent displaying their magnificent creation in front of the entire clan. The jubilance was like a child who just won a trophy.

Yes, designing and creating is a painful process, a process that connects the creator with one's creation. During the process of dyeing, weaving, beautifying the dreamy sarees, I was an enthusiastic onlooker, noting and recording the planning, dexterity, devotion and delight of the weaver family. The artists had limited capital with them and were not seeking any financial assistance. The cashflow was restricted to say 10 sarees at a time, but again the heirloom has been passed over generations in the same fashion. The artist takes care of his art, the financial matters are taken care of by their leader.

The process of weaving Jamdani sarees dates back to thousands of years and it is more of a culture that has been passed on from generation to generation. A culture which has shifted base with time but still rooted to the ancestral place, a culture which has thrived and flourished against all odds, a culture which has learnt to innovate and embrace change, a culture where the "khat khat" of loom and songs of the long lost and loved motherland is a daily routine. Purchasing from factory outlet was not a new thing for me, however being a part of the dreamy journey truly explained the meaning of "heritage industries". To sum up my visit to Phulia was full of Vibrance, Weaves, Warp, Weft and Wonder.

Shilpa Sharma Sarkar
R.M.D.,
C.O., Mumbai

A Fateful Discovery

My Journey with Triple Negative Metastatic Breast Cancer

The Delayed Diagnosis

On September 2022, I was diagnosed with triple negative stage 4 oligometastatic breast cancer at the age of 29. In India, most women go for a breast screening only when they notice a lump, and my case was no different. I had no family history of breast cancer. In my case, the breasts were asymmetric. I had one lump in my right breast and little discomfort on my left breast. When I consulted my gynaecologist, she advised to go for an ultrasound for right one and said left is okay and its normal in younger women and the lump is benign. As she didn't reveal anything alarming. I took few days gap for my ultrasound. When I went for ultrasound, left side was suspected to be highly malignant and radiologist recommended biopsy. Based on the advice, I took 2 biopsies to be certain that it was cancer.

Facing the Challenge Head-On

With an aggressive form of cancer already spread to my bones, I had very little time to make decisions about treatment. Doctors gave me a 50-50 chance of cure and a 30% survival rate, statistics that were difficult to digest. At times, I even refused treatment from doctors who delivered these harsh realities. Then, I met Dr. Bhawna who assured me that I could be cured. she explained the lengthy treatment plan, a mix of chemotherapy, mastectomy surgery, radiation and post medications with their side effects.

Understanding the treatment plan and disease is one thing, dealing with emotions quite another. I took a deep breath and started treatment which began with 1G cycles of chemotherapy then mastectomy surgery and then 18 cycles of radiation therapy on both the affected sides.

Maintaining a Positive Attitude

My mother and friends told me: "In a couple of years, you won't even remember this phase. You can choose to face it bravely, or cry over it." I chose the first. I made it a point to walk daily, which helped me both mentally and physically. My faith in the almighty was also a source of strength; I believed that God would heal me. Initially, I hesitated to share my diagnosis, but one of my colleagues, Samir Chopra sir encouraged me to share with my other colleagues so they could pray for me. Knowing people were praying gave me strength, and he has been a constant source of motivation.

I also paid close attention to my diet, avoiding spicy foods to prevent acid reflux from chemotherapy and drinking plenty of water to flush out toxins.

I started chanting, remarkably, I even returned to work two days after my chemo sessions. The normalcy of work helped distract me from the illness and reminded me of my strength.

Throughout my treatment, I listened closely to my body's changing needs. My preferences shifted from cycle to cycle, but I made sure I was nourishing myself properly. It was a journey of adapting to new changes, while learning how to meet my body's demands.

Overcoming Emotional Turmoil

The diagnosis was heart-breaking. I used to wake up in the middle of the night, crying and feeling like my life was over. Even now, there are times when I wish it were all just a nightmare, and I could wake up to find everything back to normal.

Chemotherapy caused extreme discomfort, with nausea, vomiting, itching, weakness, pain, hair loss and what not. The final rounds of chemo were especially tough, and there were times I questioned whether life was worth living. But this experience taught me to prioritize my well-being. The support from my family, friends, and colleagues, along with the strength I found in other cancer patients, helped me to keep going. I drew inspiration from those who had survived similar battles.

Key Lessons

Let Others Help: People around you often feel concerned when it comes to serious illnesses, and they want to help. Let them.

Get Out of the House: Don't let the walls confine you. It is important to take breaks and get fresh air.

Embrace Your Emotions: Even the negative ones. Bottling them up only make it worse. Allow yourself to feel and release those emotions.

Know your body: Our bodies often signal when something is wrong, so it is important to pay attention to these signs, no matter how subtle, one should regularly check for any abnormalities or changes.

Self-motivation: Stay motivated no matter the situation. Remember, you

are the only one who can truly uplift and save yourself. Keep yourself motivated in every situation, you are the one who can save yourself.

Holding on to Hope: Hope is something we should always hold on to, no matter the circumstances. Do not let a doctor's predictions define your spirit or limit what you believe you can achieve. You are stronger and more resilient than any statistic.

Metastatic breast cancer (MBC) may always be there, casting a shadow, but it doesn't prevent me from living my life. I've learned to live each day as I did before cancer intruded on my body and life. While MBC may not overwhelm me, it is a reminder to cherish every moment and live peacefully. It has put its shadowy filter over everything.

What I went through is something I would never wish upon anyone. Through my journey, I want to emphasize the importance of early diagnosis—especially through self-examinations and mammograms, which are crucial for women of all ages. Early detection can lead to a cure with over 99% survival rate when combined with effective treatment. I also want to highlight the incredible power of a strong support network.

I've heard from my doctor that many patients undergoing such harsh treatment often leave their jobs due to lack of support from their employers and co-workers. I have been truly fortunate to have the unwavering support of my family, friends, and colleagues. Their prayers and words of encouragement gave me strength during my darkest days. My workplace was incredibly understanding; even after chemotherapy, I returned to work just two days after a session, and this was possible because of them. My colleagues have been very compassionate and supportive. Their care made a world of difference in my journey.

Shail Sahu
Sejbahar Branch
R.O., Raipur

वर्ष 2024-25 के दौरान विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर-बैंक हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता

जयश्री राजेन्द्र खापरे

टीना डिंगलानी

मनोज सिंह

गंगा दत्त पंत

प्रतीक जैन

बि. सरस्वती

स्विटी रविशंकर चौधरी

आरती कुमारी

अभिषेक भार्गव

आईना वशिष्ठ

प्रशांत बाबूलाल सलीवाले

इन्दु पी.

अमित कुमार भदानी

अमित कुमार मण्डल

आशीष मारवाह

पी सुमंत

निधि

बिनीता देवी

प्राचिता समर यादव

विजय बिष्ट

स्मिता राहुल डाबरे

उज्ज्वल कान्त

डॉ. कल्याणलक्ष्मी चित्ता

श्वेता सिंह

मोहित मिश्रा

प्रवीण कुमार

विनय शिरीष कोल्हे

राजू यादव

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस- 2025 के अवसर पर आयोजित विभिन्न गतिविधियां

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

अंचल कार्यालय, मंगलूरु

अंचल कार्यालय, मुंबई एवं क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (द)

अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम

अंचल कार्यालय, दिल्ली

अंचल कार्यालय, विजयवाडा

क्षेत्रीय कार्यालय, खम्मम

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (द)

क्षेत्रीय कार्यालय, बठिंडा

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, बालेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

क्षेत्रीय कार्यालय, गाजीपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, मचिलीपट्टनम

क्षेत्रीय कार्यालय, सेलम

क्षेत्रीय कार्यालय, विजयनगरम

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

क्षेत्रीय कार्यालय, राजमंड्री

क्षेत्रीय कार्यालय, कोट्टायम

क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे मेट्रो

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

The Hidden Messages in Water

Observance of **World Water Day** on 22nd of March highlights the importance of conservation of water and sustainable management of water resources.

Water is one of the most fundamental elements of life, covering nearly 71% of the Earth's surface and comprising about 60% of the human body. While water's physical properties have been extensively studied, its metaphysical and consciousness-related aspects have intrigued researchers and thinkers alike. One of the most fascinating studies on water was conducted by **Dr. Masaru Emoto**, a Japanese scientist and author of the book **Hidden Messages in Water**. His research proposed that human consciousness, emotions, and even words could influence the molecular structure of water, providing profound implications for both science and spirituality.

Masaru Emoto (1943–2014) was a Japanese researcher known for his work on the effects of thoughts, words, and intentions on water. Holding a degree in alternative medicine, Emoto embarked on a journey to understand water from a non-traditional perspective. He proposed that water has the ability to store and reflect emotions, an idea that he sought to prove through innovative experiments.

Emoto's Experiments and Findings:

The foundation of Emoto's work lies in the concept that water responds to external stimuli, particularly human emotions and intentions.

Emoto would take samples of water and expose them to different words, phrases, or types of music. Some samples were subjected to positive words like "love" and "thank you," while others were exposed to negative words like "hate" and "you fool."

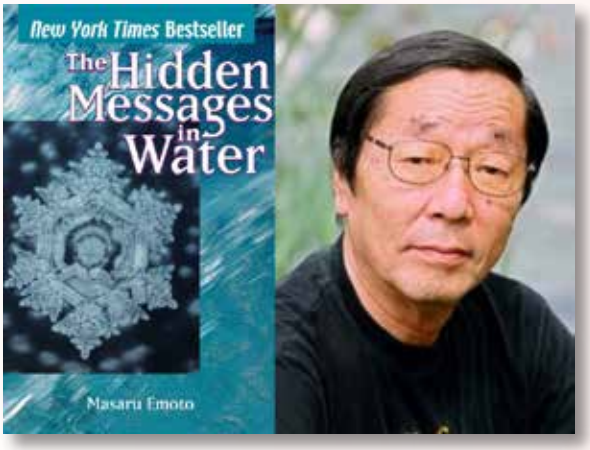

After exposure to these stimuli, the water was frozen, and the resulting ice crystals were examined under a microscope. Emoto observed that water exposed to positive words and harmonious music formed beautiful, symmetric, and well-structured crystals, resembling snowflakes. In contrast, water exposed to negative words or discordant music formed chaotic, disordered, or incomplete crystals.

These findings suggested that water has a form of memory and responsiveness to human consciousness, an idea that aligns with ancient spiritual beliefs and modern discussions in quantum physics.

Scientific Criticism and Skepticism:

Despite the popularity of Emoto's work, it has faced significant scientific criticism. Some of the main concerns raised by the scientific community include:

1. **Lack of Controlled Experiments:** Critics argue that Emoto's experiments lack rigorous scientific control. For instance, skeptics point out that there was no objective way to measure or standardize the process of crystal formation.
2. **Subjectivity in Observations:** Since Emoto and his team handpicked the crystals to be photographed, the selection process may have been biased, favoring crystals that supported his hypothesis.
3. **Reproducibility Issues:** A fundamental principle of scientific research is that experiments must be reproducible. Many researchers attempting to replicate Emoto's results have not been able to achieve the same outcomes under controlled conditions.
4. **The Human Bias:** Some scientists suggest that any perceived changes in water are more likely due to human interpretation rather than actual structural changes in water molecules.

Implications and Spiritual Significance:

Regardless of scientific criticism, Emoto's work had a profound impact on many fields, including spirituality, holistic health, and consciousness studies. Some key takeaways include:

1. **The Power of Positive Thinking:** If human intention can influence water, and given that the human body is mostly water, it implies that our thoughts and emotions could impact our own health and well-being. Greater the extent of positive words, better is the positivity in our body. Thus, inferring better thoughts yield better emotions and health.
2. **The Connection Between Nature and Consciousness:** Emoto's findings support ancient wisdom that suggests nature is deeply interconnected with human consciousness.
3. **The Impact of Prayer and Meditation:** His experiments align with religious and spiritual practices where prayers, mantras, and positive affirmations are believed to bring healing and harmony.

Real-World Applications and Influence:

Emoto's work has inspired many holistic practitioners, educators, and alternative medicine advocates. Some applications include:

- **Water Healing Practices:** Some people practice speaking positive affirmations to their drinking water, believing it enhances health benefits.
- **Conscious Consumption:** Emoto's research has led people to be more mindful of their words and intentions, promoting kindness and gratitude in daily life.
- **Environmental Consciousness:** His work has raised awareness about the energetic impact of pollution and how collective consciousness can influence environmental healing.

Masaru Emoto's hidden messages in water is a fascinating exploration of the potential connection between consciousness and water. While his methods and findings remain controversial in scientific circles, they have sparked meaningful discussions about the power of thoughts, words, and intentions. Whether or not one fully subscribes to Emoto's conclusions, his work encourages a deeper appreciation of water and its role in both our physical and spiritual lives.

The broader lesson from Emoto's research is clear: our thoughts and emotions have power, and cultivating positive energy can contribute to personal well-being and a harmonious world.

M Praveen Kumar
ZLC - Bengaluru

मेरा मोबाइल

सुबह- सुबह नींद से जल्दी जगाता है
प्रकाश की गति से भी तेज संदेश पहुंचाता है
खुद से ज्यादा निर्भर हो गया हूँ इसपर
परिवार और दोस्तों के बाद मेरा हमसफ़र है, मेरा मोबाइल.

विद्यार्थियों को पढ़ने में मदद करता है
तरह-तरह की जानकारी गूगल से देता है
फेसबुक में यादों को समेटे रखता है
व्हाट्सएप्प में जानकारियों को छिपाता है, मेरा मोबाइल.

मेरे अकेलेपन में मेरा सहारा बन जाता है
तरह- तरह के गाने को बजा कर मनोरंजन करवाता है
मैं कहीं भी जाऊँ मेरा साथ नहीं छोड़ता है
समय के साथ- साथ रास्ता भी बताता है, मेरा मोबाइल.

मेरे हाथों से मेरे बच्चों तक पहुँच जाता है
उनके आँखों पर चश्मा लगवा देता है
रिल्स देखने की लत मुझे भी लगा देता है
मेरा समय बर्बाद कर देता है, मेरा मोबाइल.

दूर बैठें रिश्तेदारों से दूरी मिटाता है
ख़ुशी की खबर सबसे पहले पहुंचाता है
नुकसान के अलावा लाभ भी पहुंचाता है
सही इस्तेमाल करने पर भविष्य बनाता है, मेरा मोबाइल.

अमित कुमार श्रीवास्तव
रोहराबाज़ार शाखा
क्षे.का., दुर्गापुर

The Magnificent Fort of Chitra Durga

As we set out on a journey through the history, culture, and temples of our country, we recently had the privilege of visiting the impressive Chitra Durga Fort (Situated in the Chitra Durga District of Karnataka state.). The first glimpse of this magnificent edifice is always inspiring. Once we were inside the fort, we were greeted with a feast for the eyes; the trek of around 450 steps and more than 3 kilometres within the fort not only served as an excellent physical challenge but also offered a profound experience as we immersed ourselves in the fort's rich history, which truly uplifted our spirits and sent chills down our spines.

The immense structure captivated us at first glance. This fort, thought to have been constructed in the 13th century by the Nayakar kings, stands as one of India's most formidable and strategically significant forts. It boasts seven tiers of defensive walls, 19 main gateways, 38 secondary gates, 35 access points, numerous hidden escape paths, and four secret entrances. During its prime, this fort was a domain of opulence, wonders, and mystery. Notably, it extends across several hills and is structured in seven concentric circles, rendering it almost impossible to breach.

The fort boasts a variety of remarkable attractions, including numerous temples, palaces, large rocks shaped like animals & structures that highlight the artistry and architectural prowess of that era.

- **Eknatheswari Devi Temple:** The Devi temple stands as a significant landmark within this Fort. It is dedicated to Goddess Eknatheshwari (Durga), the revered family deity of the Chitra Durga kingdom. Remarkably, devotees continue to offer prayers to the goddess with great reverence even in contemporary times. The temple features an impressive archway (Rajadwar) and a towering flagpole (dhwaja sthamb), both constructed from large stones, situated at the entrance.
- **Hidimbeswara temple:** During the Dwapara Yuga, it is said that a demon named Hidimba instilled fear and caused the deaths of many in the surrounding areas. He was ultimately defeated by Bheema, one of the Pandavas. Within the fort, a temple was constructed in honor of Lord Shiva, which is thought to have been established by Hidimba himself. This temple features a notably large tooth, believed to belong to Hidimba.
- **Maddu Bisuva Kallu:** This innovative mechanism is engineered to manufacture gunpowder for ammunition. An elephant, secured to a structure resembling a traditional grain grinder, was utilized to facilitate the gunpowder production process. As the elephant moved, it turned the grinder, which processed the raw materials into finished product.
- **Rainwater harvesting system:** We then arrived at a fascinating location where rainwater was gathered on one side and subsequently filtered through a purification system. This process resulted in the water flowing out on the opposite side as clean water, which was then stored in a reservoir for various uses throughout the kingdom. Adjacent to this location, there are several narrow drainage pathways for water runoff that have naturally formed beneath large boulders of the mountain within the fort.

- **Onake-Obavva-Kindi:** Haider Ali's forces once uncovered a route to infiltrate the fort. At that moment, a courageous woman named Onake Obavva was stationed at the tunnel, guarding it in place of her ailing husband. Upon spotting enemy soldiers attempting to enter through this passage, she realized there was no time to alert her husband or the rest of the army. She took it upon herself to confront the intruders. Armed only with a pestle, she single-handedly eliminated numerous soldiers as they entered the tunnel one by one, successfully thwarting the enemy's efforts to seize the fort. Her remarkable bravery has inspired several films, and in Chitra Durga, an annual festival is held to commemorate her heroic deeds.
- **Sampige Siddhesvara Temple:** We then explored an elegant temple dedicated to Sampige Siddhesvara. Nestled in a tranquil corner of the fort, the temple complex exudes serenity. However, what truly enhances its allure are the intricate carvings and stunning representations adorning the walls throughout the site.
- **Tuppada Kola Bateri:** This prominent hill rock rises to an elevation exceeding 70°, serving as a watchtower for soldiers to survey the area. Surrounding the fort are approximately 30 large structures that function as watchtowers, equipped with canyons. Some young visitors ascended the Bateri, but descending requires sitting and crawling, as the steep incline makes it impossible to walk down safely.

Although we felt physically exhausted by the evening, our spirits were lifted by the opportunity to explore the sights and delve into the history of the fort. I intentionally engaged with only a few attractions, leaving others undiscovered to spark curiosity and encourage readers to experience them on their own.

Yagnamurthy Dwaraka Nath
Mysore (retd.)

बाल प्रतिभा

The Childhood Treasure

A period of life, cherished by all,
when you grow up, you recollect with awe
how those days meant so much to you,
and your innocence and immaturity too.

To be upbraided for your mischiefs,
but to be forgiven with a treat!
Out of the home when you stayed,
playing with your friends' numerous games,

How those days were the best of all,
never listening when your mother would call.
Your school would be your greatest enemy,
never knowing it meant for, now, what you be.

Another memory you may hard back to
when you would come home drenched from school.
The rain, of course, would be a concern to your mother,
who would rush to the kitchen and prepare a warm supper.
But you know, all you needed was her love and affection;
her being there for you always meant no tension!

These are some memories we all revere evermore,
a childhood treasure, for us, that is, so much more.
Later, in the complex and stressful world, we realise
our childhood inspires not to go for complexities.
In all, this period of life is priceless boon to our existence,
So, let us pass down to our future selves its legacy of child like simplicity and innocence.

Ramit Dwivedi
S/o Shri Pankaj Dwivedi,
Executive Director

अतीत के झरोखों से

यूनियन धारा के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में जनवरी-मार्च 2025 अंक से यह नया खंड **'अतीत के झरोखों से'** का शुभारंभ किया जा रहा है. इस खंड के अंतर्गत यूनियन धारा के पिछले अंकों में प्रकाशित लेख / कविता आदि का पुन: प्रकाशन किया जाएगा.

यूनियन धारा की स्वर्णिम धरोहर को समृद्ध बनाने में योगदान देने वाले हमारे वरिष्ठों के प्रति आभार व्यक्त करने का यह एक विनम्र प्रयास है.

A new coloumn **'अतीत के झरोखों से'** is being started from Jan-March 2025 issue on the occasion of the Golden Jubilee Year of Union Dhara. This coloumn shall feature articles/ poems published in the previous issues of Union Dhara.

This is a humble attempt to express gratitude to our seniors who have contributed to enrich the golden legacy of Union Dhara.

जिल्द 1 अंक 1 Vol.1 issue 1, 1976

ग़ज़ल

तेरी चाहत तो मेरे दिल से मिटाये न मिटे
आग कुछ ऐसी लगी है कि बुझाये न बुझे

उलझनें और बढ़ा देती हैं रस्मे दुनिया
बात बिगड़ी है कुछ ऐसी कि बनाये न बने

जिन्दगी खेल नहीं तेरी मोहब्बत की कसम
बोझ है ग़म का कभी सबसे उठाये न उठे
लाख कोशिश करूँ फिर भी तो नहीं मुमकिन है

दिल की यूँ उजड़ी है बस्ती कि बसाये न बसे
कतराये खून बड़ी चीज़ है एक आँसू भी
आँख से टपके ये 'आदिल' तो उठाये न उठे

आदिल सैयद
उप महाप्रबंधक (प्रशासन)

Memories

While sitting by the window
Staring at the starry sky
All the sweet old memories
From the past come creeping by

Memories of bygone days
Fill my heart with sorrow
Making me think of yesterday
Rather than of tomorrow

These memories to me are treasures
Which no one can steal
The remembrance leaves a heartache
Which no one can heal

The night will pass away
And soon there will be dawn
Thus time goes by
But memories linger on

Katy Lakdawalla
EID

खामोश कोलाहल

सार शून्य नीरसता में
बंधा, थका, बेबस जीवन
एक खामोश कमरे में
यूं.....

जैसे समुद्र में दावानल,
वातावरण में है तनाव
फिर भी है शांति
रहते हैं
यूं.....

जैसे सुप्त धरातल
एक ही कमरे में
होते हैं घर के सारे काम
आवरण के नाम पर
ढका है

निस्तेज खामोशी का आंचल,
उखड़ते पलस्तर
औ' दीवार पर लगी
दीमकों की कतारें
मानो जैसे हंसकर
सुना रही हों सभी
लाचारी औ', बेबसी का कोलाहल

अंबरीष जी. सिंघल
उप महाप्रबंधक (परिचालन)
कार्यालय, बंबई

जिल्द 1 अंक 2 Vol.1 issue 2, 1976

My Prayer

When pride make vain this heart of mine
Oh Lord! I pray make mine like Thine.
That I may learn humility
So as to be as meek as thee.

When anger swells my mind with rage,
Oh Lord! Help me to reach that stage,
And learn to be patient and kind
With those who disturb my mind.

When my eyes lust of the flesh
Oh Lord! I pray thee to bless.
That I may with courage face,
And rid vile thoughts with thy grace.

When my steps lead me astray,
Oh Lord! Lead me the right way
That I may reach my destiny,
And be with thee eternally.

J. A. Fernandes
Branches Accounts

Dejection

Turmoil beneath the still water
A crocodile awaiting its prey.
Shattered hopes and ambition,
Yet, death is far far away.

Things are not the same
Since you went away

Life bears no charm now
For whom I should stay?

I was an aimless wanderer
You showed me the way
How can I live without you
Why did you from me stray?

We had dreamed of a bright dawn
And happiness all around
Alas! When you vanished

Hopes crashed to the ground

M.N. Poojary
DGM(A) Dept

Surrender

Death lays its icy hands
On commoners and kings
Rich or poor, strong or weak
Have all to join the stream

Death's stream is forceful
Its grip powerful
Its blows to dust, hopes and aspirations
Riches power, authority and ambition.

Death has a bitter sting
Nature's reminder to human beings
That no one is immortal
However high his pedestal

Men may weep, cajole, and pray
But the monster will have his sway
Inscrutable are the ways of the Lord they say

With him we mortals have no other way

J. D. UNWALLA
Manager (Personnel)

True Love

True love has its own charm and strength
For those who understand its value and warmth
For others unaware of its charm so divine
Its value is not worth a dime

Life is to love and to love entire humanity
With selfless devotion and utmost purity
For love is a divine spark which springs through divinity
And shall gloriously shine till eternity

The light of love breaks the barriers of caste and creed
Bringing the joyous tidings devoid of lust and greed
Could we not make the way of pure love universal?
Flow through human veins with untampered lull?

J. D. UNWALLA
Manager (Personnel)

जिल्द 1 अंक 3 Vol.1 issue 3, 1976

तुम्हारी वर्जित स्मृति

आज फिर खिल उठे तुम्हारी स्मृति के कचनार
मेरे मन के अनाम बन-प्रान्तर में और वसन्त आ गया
मैं खो गया कचनार की सफेद-रंगीन पंखुड़ियों में
वर्जना को भूलकर कि मोहभंग का ग्रीष्म आना शेष है

अज्ञेय तुम्हारे समान तुम्हारी स्मृति भी मैं पढ़ न पाया
हर बार ऐसा ही होता है
जब जाड़े की धूप निकल जाती है आंगन से समय से पहले
और प्रतीक्षा करनी होती है अगली सुबह की.

अब मुझे फिर प्रतीक्षा है पतझर की ताकि अगला वसन्त आए
फिर खिल उठें तुम्हारी स्मृति के कचनार
मेरे मन के अनाम बन-प्रान्तर में
मैं फिर असफल चेष्टा करूं तुम्हें पढ़ने की
तुम्हारी वर्जित स्मृति के सहारे

राजीव कुमार सिंह
मुंगेर (बिहार) शाखा

Fight

Fight, fight, fight
You'll always hear of fight
Many there are, who fight for power
Some of course ever for a lover;
Fight, they say for justice
Plenty, peace and power
And when they fight, they lose
Scores of men and material
for which they finally muse
Nations fight for power and peace
End up then in faction and piece
Lovers fight for the sake of beloved
Thinking always of getting wed
Happily thereafter they fight for pleasure

Rarely will it end measure for measure;
Children fight for things always silly,
When mummy calls, around her will they rally;
Like men, they fight for life and living-
dogs, cats and crows for a living;
like animals they fight for nothing when men
ose their sense in living
fight it appears is always right
so fight, fight, fight and fight.

M.S.A.RAO
Asst. Superintendent (ADD)

Edmonton '78 Relived

- Prakash Padukone

Prakash Padukone brought honours for the country and Union Bank proudly ralutes him for his distinctions at the Edmonton Games. Perhaps no sportsman on the Indian horizon today evokes so much admiration as the "Gold Man" Prakash Padukone. This tall and handsome member of our Union Bunk family personally describes his visit to Edmonton, his experiences and the final match. In keeping with his temperament, the streak of humility has closely underlined his narration.

The Indian contingent consisting of 65 players and officials landed at Edmonton on July 27, after a long, tiring light from Delhi via Rome, London, New York and Montreal. We spent a night at New York in a hotel. This rest was very necessary because if we had continued our journey to Edmonton without a break at New York, it would have mount 24 hours of continuous travel. One can well imagine the strain it would have put on the players and officials alike! Added to this was the time difference of 12 hours between India and Canada. Invariably all the bad- Minton matches were scheduled to start at 1.30 in the afternoon which meant that according to the Indian Standard Time, we were required to play at 1.30 a.m. Our reaching Edmonton a week before the commencement of the Games proved to be a great boon to us, since by the time the Games started we had adjusted ourselves to the change in timings.

We stayed at the University of Alberta Hostel which could accommodate about 2.000 people. There were three different buildings connected with each other by an underground passage. Each building had 10 floors, each floor consisting of 3 wings. There was a spacious common dining hall, open 24 hours a day. The food was delicious. Security arrangements being very tight, no visitor was allowed to enter the village premises without a temporary Identity Card. The athletes were also required to produce their identity cards at the entrance. The weather at Edmonton was very pleasant, it being summer time. The locals were very friendly and language was no barrier as all of them spoke English. warmth displayed by many Indian families settled there also made us feel at home.

The games were officially declared open on August 3, by Her Majesty. Queen Elizabeth. The presence of Princes Philip and Andrew and the Canadian Prime Minister, Mr. Trudeau, lent an added charm to the colourful inaugural ceremony. Representatives of the 45 participating countries, attired in their national dress, who took part in the colourful march-past on the opening day, were given a standing ovation by a crowd of about 40,000 strong. Another notable fact is, that the tickets for the opening and closing ceremonies priced at 25 Canadian dollars each. were sold out as early as one year in advance.

The Badminton events commenced on the 4th afternoon with the team events, introduced in the Commonwealth Games for the first time. Each tie consisted of 5 matches viz. one each of men's singles, men's doubles, ladies' singles, ladies' doubles and mixed doubles. According to the rules of the Championships, no player was allowed to play more than 2 matches per tie. The eleven nations taking part in the inaugural team events were divided into 2 groups. India was placed in Group 1 along with England, New Zealand, Australia and Wales while Group II included Malaysia, Canada, Scotland, Northern Ireland and Isle of Man.

In our opening encounter, we played Wales, who we beat by 5 matches to nil. The same evening way New Zealand and won by three matches to two. I won both my singles and doubles and Kanwal Thakur Singh won her ladies singles. But both my matches went to three games. In the singles, I was extended to 3 games by Brian Purser, while in the doubles, Uday and myself won in 3 games against Wilson and Livingston. I was trying to be happy with my performance on the opening day. In

fact, in the Men's doubles, after winning the first game at 15-6 we lost the second game at 16-17 after leading 11-4 at one stage. Anyway, at the end of the first day, we had won both the ties against Wales & New Zealand.

The next day was very crucial for us as we were to play 2 tough matches against England and Australia in the afternoon and evening respectively. We lost 0-5 to England in the afternoon. I did not play in the singles Mair mainly for ones. Firstly, my performance on the first day of two reasons. the team events were not up to my expectations. I was playing much below my usual form and was not very confident of playing against Talbot. If I had played in the singles and had not to fared well, it would definitely have affected my performance in the open events. Secondly, my left heel was bothering me for quite some time and I did not want to strain too much. Moreover, I was the only player who was playing both singles and doubles in the team events. All the other teams had separate players for singles and doubles. So, after a long discussion, Dipu and myself jointly decided that I should be rested in the singles against England.

The same evening we played Australia and lost by 2 matches to 3. In fact, we could have won this tie by 4 matches to 1. But unfortunately, we lost two matches after having a commanding lead in the decider in the lady's doubles, Ami and Kanwal combined well and were sitting pretty with a 10-1 lead in the third game. But at this stage, a lapse in their concentration not only enabled the Australians to level the scores at 10 but also win the game at 15-11. Then came the crucial mixed doubles with the scores standing two matches each. We had to win this match, if we were to qualify for the semi-finals. At one stage, of our chances of qualifying looked bright, with Partho and Ami leading 17-13 in the second game after winning me the first at 15-8. But they just could not drive home advantage, and lost the game at 17-18. The Australians took a big lead in the decider, which ultimately clinched the issue in their favour. England qualified for the semi-finals from our group having won all the four matches. There was a tic for the 2nd place between India, New Zealand and Australia, each of them having won 2 matches. The issue had to be decided by the number of matches won and lost by each team. India & New Zealand had won 10 matches and lost 10, whereas Australia had won 9 and lost 11. Thus, Australia was eliminated but there was again a tie between India and New Zealand, since both the teams had won equal number of matches. Now the deciding factor was the difference in the number of games won and lost. India had won 22 games and lost 23 for a difference of minus 1, whereas, New Zealand had won 22 and lost 22 for a difference of NIL. Thus, New Zealand qualified for the semi-finals along with England from Group I, while Canada and Malaysia qualified from Group II. England won the Gold, beating Canada in the finals. Malaysia got the better of New Zealand in the losing semi-finalist tie to win the bronze medal.

The individual events started on the 8th, after a day's rest on the 7th. I did not have to stretch myself much till the mi-finals. I was expecting a tough fight from the English National Champion, Ray Stevens in the semi-finals. How- ever, I was at my best that day and won the match comfortably. I played Talbot of England in the finals. I started confidently in the first game and took a 5-0 lead. But, Talbot levelled the scores at 5 and we went neck to neck till 9. At this stage, I stepped up the pace of the game and scored six points in a row to win the first game at 15-9. There was some initial resistance from Talbot in the second game but I did not have much of a problem in winning the game at 15-8. It was a great moment for me when I scored the last point since I had never won an international tournament before, though I had reached the finals on 2 to 3 occasions. This was also the first ever gold medal for India in badminton. The performance of our team was, on the whole, very satisfactory, especially in the individual events. Syed Modi and Partho Ganguli reached the quarter finals in the men's singles where they went down fighting to Stevens and Talbot respectively. Uday and myself reached the quarter finals in the men's doubles and lost to a Malaysian pair in 3 games. Our girls also gave a sterling performance to win a bronze in the ladies' doubles. This was quite unexpected, as our girls Ami and Kanwal were playing in the Common Commonwealth Games for the first time. Moreover, they had very little international experience compared to the other European players. This was indeed a morale boosting victory for our girls!

The games, which were well organised, and played in the spirit of camaraderie, concluded on August 12, living up to their popular name "The Friendly Games".

प्रतियोगिता क्र. 173

एक छंद लिखें/ Write a Verse

Contest No. 173

फोटो – दीप्तिमान साहू
क्षे.का., हैदराबाद-सैफाबाद

क्या यह तस्वीर आपके मन में किसी पुरानी याद, किसी गहन भावना या सृजनात्मकता अंकुरित कर रही है? हर तस्वीर एक दास्तां बयां करती है. तथापि, यदि आप अपने भावों को एक छंद में व्यक्त करना चाहें तो तुरंत अपनी कलम का जादू दिखाते हुए इस चित्र के लिए 02 पंक्तियों और अधिकतम 15 शब्दों का छंद लिखें और अपने कार्यालय/क्षेत्र के संवाददाता के माध्यम से हमें प्रेषित करें

अपनी प्रविष्टि भेजते समय निम्नलिखित का ज़रूर ध्यान रखें:

- छंद 02 पंक्तियों और अधिकतम 15 शब्द की ही हो.
- प्रविष्टि हिंदी या अंग्रेजी में भेजी जा सकती है. परिपत्र सं. 8303-2024 दि: 12.06.2024 के अनुसार दोनों श्रेणियों में अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे.
- **एक स्टाफ सदस्य एक ही प्रविष्टि प्रस्तुत कर सकते हैं, या तो हिंदी या अंग्रेज़ी में .**
- प्रतियोगिता केवल बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.
- सभी संवाददाताओं से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र से प्राप्त प्रविष्टियों को भाषावार सारणी में समेकित कर अंतिम तिथि तक uniondhara@unionbankofindia.bank पर प्रेषित करें. सारणी में प्रविष्टि के साथ स्टाफ का नाम, पदनाम, शाखा/कार्यालय का नाम, सोल आईडी की सूचना अवश्य दें.
- **प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि 31 मई, 2025 है.**
- शब्द संख्या का ध्यान रखते हुए अंतिम तिथि तक प्राप्त प्रविष्टियों को ही प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जाएगा.

Is this picture evoking some old memory, some deep emotion or sparking creativity? Every picture is worth a thousand words. However, if you want to express your feelings in a verse, then let your pen create magic. Write a verse in 02 lines and maximum 15 words on this picture and send it to us through the correspondent of your office/Region.

Please ensure the following while submitting your entry:

- Verse should be of 02 lines and maximum 15 words only.
- The entry may be sent in Hindi or English. In terms of circular no. 8303-2024 dt. 12.06.2024 separate prizes shall be awarded under each language category.
- **A staff member may submit only one entry, either in Hindi or in English.**
- This contest is open only for the staff members presently in service of the Bank.
- All correspondents are requested to consolidate the entries of their Region, language wise, in a tabular form, by the last date and send them to uniondhara@unionbankofindia.bank. Invariably give details of Staff name, designation, branch/Office name, SOL ID along with the entries.
- **The last date for sending entries is 31st May, 2025.**
- Entries, duly, adhering to the specified word limit, received by the last date, shall only be included in the competition.

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्रमांक 172 - 'शीर्षक लिखें'

पुरस्कार	हिंदी श्रेणी	अंग्रेजी श्रेणी
प्रथम	श्री राहुल पाल, क्षे.का., मुंबई-ठाणे	श्री रोहित एम, क्षे.का., तिरुवनंतपुरम
द्वितीय	सुश्री दीपिका रावत, अं.का., पुणे	सुश्री विद्या, क्षे.का., सेलम
तृतीय	श्री नरेंद्र कुमार चौबे, क्षे.का., रायपुर	श्री ईशान शुक्ला, अं.का., लखनऊ
प्रोत्साहन	श्री अभिनंदन श्रीवास्तव, क्षे.का., गोवा	श्री अनिल कुमार सिंगला, क्षे.का., बठिंडा

दिनांक 26.01.2025 को केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्र ध्वज फहराते हुए कार्यपालकगण श्री नितेश रंजन, श्री रामसुब्रमणियन एस., श्री संजय रुद्र तथा श्री पंकज द्विवेदी, कार्यपालक निदेशकगण तथा कर्नल संजय कुमार, सीएसओ .

दिनांक 30.01.2025 & 31.01.2025 को खुदरा आस्तियां वर्टिकल, कें.का. द्वारा विपणन अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया. साथ हैं श्री रामसुब्रमणियन एस., श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशकगण तथा श्री अरुण कुमार, महाप्रबंधक, खुदरा आस्तियां वर्टिकल.

दिनांक 08.03.2025 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा वर्ल्ड बैंक के सहयोग से भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, की अध्यक्षता में नारी शक्ति से विकसित भारत थीम से संबंधित कई विषयों पर उच्च स्तरीय पैनल चर्चा में सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ ने अपना व्यक्तव्य दिया.

दिनांक 17.03.2025 & 18.03.2025 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा, डीएफ़एस, वित्त मंत्रालय तथा आईबीए के सहयोग से विद्यार्थियों तथा अकादमी को फिनटेक, साइबरसुरक्षा तथा जेन एआई से जोड़ने हेतु पीएसबी हैकाथॉन सीरीज- 2025 का आयोजन सोमय्या स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, मुंबई में किया गया. इस अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री नितेश रंजन, श्री रामसुब्रमणियन एस., श्री संजय रुद्र तथा श्री पंकज द्विवेदी, कार्यपालक निदेशकगण, श्री अनिल कुरिल, सीटीओ तथा अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 17.01.2025 & 18.01.2025 को यूबीकेसी, बेंगलूरु में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा नवोन्मेषी प्रशिक्षण प्रथाओं के माध्यम से मानव क्षमताओं को अनलॉक करने के उद्देश्य से दो दिवसीय इगनाइट-2025, द हुमेन पोटेन्शियल कानक्लेव का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक, श्री चन्द्र मोहन मिनोचा, मुख्य महाप्रबंधक सहित डीएफ़एस, वित्त मंत्रालय, बैंकिंग उद्योग से मानव संसाधन क्षेत्र के विख्यात व्यक्ति तथा अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 01.02.2025 को रायपुर में श्री विष्णु देव साय, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ के साथ सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की राज्य में वित्तीय समावेशन के संबंध में चर्चा. साथ हैं श्री बिरजा प्रसाद दास, अंचल प्रमुख तथा श्री अनुज कुमार सिंह, क्षेत्र प्रमुख, रायपुर.

दिनांक 01.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर के नए परिसर का उद्घाटन सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया. साथ हैं श्री बिरजा प्रसाद दास, अंचल प्रमुख, भोपाल, श्री अनुज कुमार सिंह, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य स्टाफ सदस्य.

दिनांक 15.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर के नए परिसर का उद्घाटन सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया. साथ हैं श्री मनोज कुमार, अंचल प्रमुख तथा श्री गुरदीप सिंह, क्षेत्र प्रमुख,जालंधर.

दिनांक 07.03.2025 को अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा श्री ब्रजेश पाठक, उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश की गरिमामयी उपस्थिति तथा सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ की अध्यक्षता में मेगा आउटरीच कैंप का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ सहित अन्य कार्यपालकगण तथा स्टाफ उपस्थित रहे.

दिनांक 05.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम में एमएसएमई एवं एक्सपोर्टर बैठक का आयोजन किया गया. मंचासीन हैं श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक, श्री संजय नारायण, अंचल प्रमुख, श्री सुधाकर राव, महाप्रबंधक, एमएसएमई तथा श्री संजीव रंजन सहाय, क्षेत्र प्रमुख-गुरुग्राम.

दिनांक 04.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, रीवा द्वारा आयोजित एमएसएमई आउटरीच कैंप में ग्राहक को ऋण स्वीकृति पत्र देते हुए श्री रामसुब्रमणियन एस., कार्यपालक निदेशक. इस अवसर पर श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, केंका, श्री आलोक कुमार, महाप्रबंधक, एनपीसी, श्री बिरजा प्रसाद दास, अंचल प्रमुख, श्री अजय खरे, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य तथा ग्राहक उपस्थित रहे.

दिनांक 06.03.2025 को वाराणसी में आयोजित मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप में ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र देते हुए श्री सौरभ श्रीवास्तव, विधायक, कैंट. साथ हैं श्री रामसुब्रमणियन एस., कार्यपालक निदेशक, श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, केंका तथा श्री धीरेन्द्र जैन, अंचल प्रमुख, वाराणसी.

दिनांक 01.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज की कटरा शाखा द्वारा आयोजित क्रेडिट आउटरीच प्रोग्राम में ग्राहक को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक. साथ हैं श्री धीरेन्द्र जैन, अंचल प्रमुख, वाराणसी तथा श्री संतोष कुमार, क्षेत्र प्रमुख.

दिनांक 01.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज के अंतर्गत कटरा शाखा एवं एटीएम का उद्घाटन श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री धीरेन्द्र जैन, अंचल प्रमुख, वाराणसी, श्री संतोष कुमार, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 10.02.2025 को अंचल कार्यालय, लखनऊ में श्री रामसुब्रमणियन एस., कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, केंका तथा श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 04.03.2025 को अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा आयोजित मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप का उद्घाटन करते हुए श्री लखन पटेल, राज्य मंत्री, पशुपालन एवं डेरी विभाग, श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक सहित अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 07.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर द्वारा आयोजित मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप का शुभारंभ श्रीमती नीलिमा कटियार, विधायक, कल्यानपुर, कानपुर तथा श्री पंकज द्विवेदी, कार्यपालक निदेशक द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री रजत कुमार नन्दा, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य कार्यपालकगण, स्टाफ तथा ग्राहक उपस्थित रहे

दिनांक 24.01.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर द्वारा प्रवासी हमारा गौरव के अंतर्गत एनआरआई कार्निवल का आयोजन श्री मनोज कुमार, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया. साथ हैं श्री प्रशांत शर्मा, संयुक्त अध्यक्ष एवं मुख्य निवेश अधिकारी, ब्राइटर माइंड तथा श्री सी.ए. राजीव रंजन, संस्थापक, ब्राइटर माइंड, श्री गुरदीप सिंह, क्षेत्र प्रमुख,जालंधर तथा अन्य कार्यपालक एवं ग्राहक.

दिनांक 03.03.2025 को श्री सुमित श्रीवास्तव, महाप्रबंधक और केंका द्वारा अंचल कार्यालय, लखनऊ का दौरा किया गया. इस अवसर पर उनकै स्वागत करते हुए श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ तथा श्री राजकुमार यादव, लीप प्रमुख. साथ हैं श्री प्यारेलाल तथा श्री प्रदीप कुमार अवस्थी, उप अंचल प्रमुख तथा श्री मनीष कुमार, सहायक महाप्रबंधक तथा अन्य.

दिनांक 18.03.2025 को श्री अरुण कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, कें.का. द्वारा अंचल कार्यालय, लखनऊ का दौरा किया गया. इस अवसर पर पौधरोपण करते हुए श्री अरुण कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, श्री राजेश कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ, श्री प्यारेलाल तथा श्री प्रदीप कुमार अवस्थी, उप अंचल प्रमुख सहित अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 05.02.2025 क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली में श्री बृजेश कुमार तिवारी, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. साथ हैं श्री प्रेम प्रकाश उपाध्याय तथा विशाल मिश्रा, उप क्षेत्र प्रमुख. इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया.

समाचार (पूर्व)

दिनांक 06.03.2025 को श्री अरुण कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, केंका की अध्यक्षता में हावड़ा क्षेत्र के शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. साथ हैं श्री लोकनाथ साहू, अंचल प्रमुख, कोलकाता.

दिनांक 01.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे मेट्रो के बरामती शाखा का उद्घाटन माननीय श्री अजीत दादा पवार, उप मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र तथा श्री नवीन जैन, अंचल प्रमुख, पुणे द्वारा किया गया. इस अवसर पर अन्य कार्यपालक गण एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 26.02.2025 को पुणे में कारोबार तथा क्षेत्रीय विकास में योगदान के संबंध में श्री अजीत दादा पवार, उप मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र के साथ श्री पंकज द्विवेदी, कार्यपालक निदेशक की चर्चा. साथ हैं श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, केंका, श्री नवीन जैन, अंचल प्रमुख, पुणे, श्री अभिजीत बसाक, अंचल प्रमुख, मुंबई तथा श्री मयंक भारद्वाज, क्षेत्र प्रमुख, पुणे मेट्रो.

दिनांक 20.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-बोरीवली के यूएमएफ़बी शाखा का शुभारंभ तथा आरएलपी कांदिवली एवं एमएलपी बोरीवली के नए परिसर का उद्घाटन सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा किया गया. साथ हैं श्री अभिजीत बसाक, अंचल प्रमुख, मुंबई, श्री ओमप्रकाश करवा, महाप्रबंधक एवं अन्य.

दिनांक 30.01.2025 को अंचल कार्यालय, गांधीनगर के सानंद में नई यूएमएफबी शाखा का उद्घाटन श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री अखिलेश कुमार, अंचल प्रमुख, श्री जी. के. सुधाकर राव, महाप्रबंधक, केंका सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 04.01.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-बोरीवली के जव्हर शाखा का उद्घाटन श्री रामसुब्रमणियन, एस. कार्यपालक निदेशक द्वारा किया गया. साथ हैं श्री अभिजीत बसाक, अंचल प्रमुख, मुंबई, श्री राहुल जुयाल, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 02.01.2025 को अंचल कार्यालय, गांधीनगर में श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में ग्राहक सभा का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री अखिलेश कुमार, अंचल प्रमुख, श्री एन चेझियन, महाप्रबंधक, केंका सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 25.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, ग्रेटर पुणे द्वारा श्री संजय रुद्र, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में कारोबार समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. साथ ही उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर श्री नवीन जैन, अंचल प्रमुख, पुणे, श्री सुभाष कुमार केशव, उप अंचल प्रमुख, श्री मयंक भारद्वाज, क्षेत्र प्रमुख, पुणे मेट्रो, उपेंद्र कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख, ग्रेटर पुणे सहित अन्य कार्यपालकगण एवं शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दिनांक 09.01.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई-अंधेरी द्वारा एनआरआई मीट का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री अभिजीत बसाक, महाप्रबंधक, श्री अश्वनी कुमार सिन्हा, क्षेत्र प्रमुख, श्री प्रकाश चंद्र तिवारी तथा श्री पबितर महांती, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री तरुण गोयल, सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, मुंबई सहित अन्य स्टाफ एवं ग्राहक उपस्थित रहे.

दिनांक 03.02.2025 को आयोजित क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर एवं क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद की संयुक्त कारोबार समीक्षा बैठक में श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, केंका का स्वागत करते हुए श्री अखिलेश कुमार, अंचल प्रमुख गांधीनगर. साथ हैं श्री संतोष साहू क्षेत्र प्रमुख, गांधीनगर, श्री तुषार कान्त कार, क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद तथा अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 04.02.2025 को श्री कबीर भट्टाचार्य, मुख्य महाप्रबंधक, केंका द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा का दौरा किया गया. इस अवसर पर उनका स्वागत करते हुए श्री अंकुर सर्राफ, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा. साथ हैं श्री अखिलेश कुमार, अंचल प्रमुख गांधीनगर.

दिनांक 10.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती द्वारा शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. साथ ही उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर श्री प्रमोद परहाते, क्षेत्र प्रमुख, श्री आकाश श्रीवास्तव तथा श्री अरविंद शर्मा, उप क्षेत्र प्रमुख उपस्थित रहे.

दिनांक 10.02.2025 को आंध्र प्रदेश में 229 & 230 वीं एसएलबीसी बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री एन चन्द्र बाबू नायुडु, मुख्य मंत्री, आंध्र प्रदेश, सुश्री ए. मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ और श्री सी.वी.एन. भास्कर राव, अध्यक्ष, एसएलबीसी एवं अंचल प्रमुख, विजयवाडा उपस्थित रहे .

दिनांक 05.01.2025 को हैदराबाद के प्रजा भवन में श्री रेवंत रेड्डी, मुख्यमंत्री, तेलंगाना तथा श्री कारे भास्कर राव, अंचल प्रमुख द्वारा सिंगरेनी कोलियरीज के मृतक कर्मचारी के परिवार सदस्यों को 1.00 करोड़ रुपये का बीमा दावा चेक सौंपा गया. साथ हैं श्री एम. अरुण कुमार, उप अंचल प्रमुख तथा अन्य.

दिनांक 03.03.2025 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा होसकोटे में आयोजित मेगा एमएसएमई आउटरीच कैंप में सुश्री ए मणिमेखलै, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री नितेश के पाटिल आईएएस, निदेशक एमएसएमई, डॉ. के. सोक्रेट्स, संयुक्त निदेशक, एमएसएमई, भारत सरकार, श्री नवनीत कुमार, अंचल प्रमुख, बेंगलूरु एवं अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 04.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर की यूनियन प्रीमियम शाखा, येर्राबालेम का उद्घाटन श्री पंकज द्विवेदी, कार्यपालक निदेशक द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री सी.वी.एन. भास्कर राव, अंचल प्रमुख, विजयवाडा, श्री एस. जवाहर, क्षेत्र प्रमुख, श्री जे. अश्वर्थ नायक और श्री ए. राजेश, उप क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 20.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावि की मुडलगी शाखा का उद्घाटन श्री लक्ष्मण एस. उप्पार, निदेशक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री दत्तात्रेयबोध स्वामीजी, शिवबोधरंग सिद्ध संस्थान मठ, मुडलगी तथा सुश्री आरती रौनियार क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 14.02.2025 को श्री एस. वी. बिजु, मुख्य महाप्रबंधक द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर का दौरा किया गया. श्री एस. जवाहर, क्षेत्र प्रमुख, श्री जे. अश्वर्थ नायक और श्री ए. राजेश, उप क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 03.01.2025 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु एवं स्थानीय क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा संयुक्त एनआरआई मीट का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री नवनीत कुमार, अंचल प्रमुख, बेंगलूरु साथ हैं श्रीमती वी माधवी, उप अंचल प्रमुख, श्री राजेंद्र कुमार जी, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु उत्तर, श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु दक्षिण, श्री महेश जे, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु पूर्व तथा अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 13.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर में श्री सी.वी.एन. भास्कर राव, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया तथा उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु शाखा प्रमुखों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर श्री एस. जवाहर, क्षेत्र प्रमुख, श्री जे. अश्वर्थ नायक और श्री ए. राजेश, उप क्षेत्र प्रमुख सहित स्थानीय शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दिनांक 20.02.2025 को अंचल कार्यालय, विशाखपट्टणम द्वारा आयोजित 'पीएम विश्वकर्मा योजना' के अंतर्गत श्रीमती शालिनी मेनन, अंचल प्रमुख द्वारा ऋण वितरण किया गया. साथ हैं श्री आर नरसिम्हा कुमार, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य कार्यपालकगण.

दिनांक 27.02.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, कडपा में श्री सी.वी.एन. भास्कर राव, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्रीमती ए. लक्ष्मी तुलसी, क्षेत्र प्रमुख सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित रहे.

दिनांक 06.03.2025 को कोच्चि मेट्रो ट्रेन ब्रांडिंग के बाद ट्रेन को फ्लैग ऑफ करती हुई श्रीमती रेणु के. नायर, अंचल प्रमुख, मंगलूरु. साथ हैं अन्य कार्यपालकगण तथा स्टाफ सदस्य.

दिनांक 11.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम में श्रीमती रेणु के. नायर, अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री दीप्ति आनंदन, क्षेत्र प्रमुख, श्री सत्यनारायण रेड्डी तथा श्री जे. सुब्रमणियम, उप क्षेत्र प्रमुख साहित स्थानीय शाखा प्रमुख उपस्थित रहे.

दिनांक 24.03.2025 को क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा आयोजित एनआरआई बैठक का उद्घाटन ऑनलाइन माध्यम से श्रीमती रेणू के. नायर अंचल प्रमुख, मंगलूरु द्वारा किया गया. इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए श्री सुजित एस तारीवाळ, क्षेत्र प्रमुख तथा अन्य कार्यपालकगण एवं स्टाफ.

दिनांक 11.01.2025 से 13.01.2025 तक गुम्मडिदला, संगारेड्डी जिला में राज्य स्तरीय कबड्डी खेल प्रतियोगिता में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया.

दिनांक 08.02.2025 से 09.02.2025 तक चेंबूर, मुंबई में आयोजित हंशु आडवाणी सेंटेनियल कप, फुटबाल खेल प्रतियोगिता में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया.

दिनांक 11.01.2025 से 12.01.2025 तक पंचगनी, सतारा, महाराष्ट्र में आयोजित स्वर्गीय बालासाहेब मेमोरियल ट्रॉफी, राज्य स्तरीय कबड्डी खेल प्रतियोगिता में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया.

दिनांक 06.01.2025 से 18.01.2025 तक शहडोल, मध्यप्रदेश में आयोजित अखिल भारतीय स्वर्ण कप फुटबाल टूर्नामेंट- 2025 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया.

दिनांक 11.02.2025 से 26.03.2025 तक मुंबई में आयोजित 15वीं इन्शुरेंस शील्ड टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट- 2025 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया.

दिनांक 17.03.2025 से 20.03.2025 तक कोलकाता, पश्चिम बंगाल में आयोजित एआईपीएस हॉकी टूर्नामेंट- 2025 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया.

दिनांक 27.02.2025 से 06.03.2025 तक देहारादून, उत्तराखंड में आयोजित एआईपीएस हॉकी टूर्नामेंट- 2025 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया.

आपकी पाती

यूनियन बैंक की पत्रिका यूनियन धारा के जुलाई-सितंबर-2024 अंक को देखने का अवसर मिला. यह अंक भाषा और साहित्य के साथ-साथ बैंकिंग कारोबार की गतिविधियों, ग्राहक सुविधाओं की जानकारियों के साथ पाठकों के समक्ष उपस्थित हुआ है. हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में प्रकाशित इस अंक का मुखपृष्ठ आकर्षक है. भीतर संपादकीय में पत्रिका का उद्देश्य एवं भावी आवश्यकताओं की चर्चा प्रमुखता से की गई है. श्री प्रवीण कुमार जी ने अपने आलेख बताया है कि भारतीय रिजर्व बैंक की नई पहल के अंतर्गत बैंकिंग प्रबंधन एवं भारतीय अर्थव्यवस्था को बेहतरी से मैनेज करने के लिए कई नए उपाय किए गए हैं. इससे ग्राहक जागरूकता बढ़ेगी और बदलती बैंकिंग प्रणाली को ठीक से समझने का अवसर मिलेगा. श्री अनीश श्रीमाली जी का लेख (ए आई द्वारा ई एस जी सशक्तिकरण) भी बहुत ही ज्ञानवर्धक और उपयोगी है. इसी प्रकार 'डिजिटल मुद्रा' नामक लेख में प्रियंका इंदुरकर ने डिजिटल मुद्रा के बारे में आसान भाषा में महत्वपूर्ण जानकारी दी है. अंग्रेजी की रचनाओं में इफेक्टिव लर्निंग एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रेटेजी में लेखक श्री कुमार हरिशंकर ने प्रशिक्षण व विकास पर अच्छा प्रकाश डाला है. कविताएं भी अच्छी चुनी गई हैं. कुल मिलाकर संपादक मंडल का प्रयास अच्छा और सफल रहा है. पत्रिका पठनीय एवं संग्रहणीय बनी है. बधाई एवं शुभकामनाएं.

डॉ. ललन कुमार
महाप्रबंधक (राभा), राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
एवं सदस्य सचिव, नराकास(उपक्रम), विशाखपट्टणम

आप द्वारा प्रेषित यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की गृह पत्रिका यूनियन धारा का जुलाई - सितंबर 2024 अंक प्राप्त हुआ. प्रस्तुत अंक में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लेख, कविता, यात्रा वृत्तांत, पर्यटन आदि वैविध्य पूर्ण अध्ययन सामग्री समाहित कर आपने सभी वर्गों के पाठकों का ध्यान रखा है. बैंकिंग, वित्त, अर्थव्यवस्था, तनाव, कृषि व बागवानी, जीवन-दर्शन संबंधी लेखों ने पत्रिका को अत्यधिक समृद्ध बनाया है. ए आई, पाडकास्ट और इलेक्ट्रॉनिक वाहन जैसे अपेक्षाकृत नए विषयों पर प्रस्तुत लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं. देश भर में फैले हुए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों के छाया चित्र लघु भारत की सुंदर झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं. कुछ लेख और चित्र भारत के सांस्कृतिक और प्राकृतिक सौंदर्य को उकेरने में सफल हुए हैं. ओलंपिक पर आधारित लेख न सिर्फ ज्ञानवर्धक है बल्कि युवाओं में खेलों के प्रति रुचि उत्पन्न करने वाला भी है. कुल मिलाकर 'यूनियन धारा' का यह अंक संग्रहणीय बन पड़ा है एक बार पुनः पत्रिका के इस उत्कृष्ट अंक के लिए संपादकीय टीम तथा सभी लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

नीरज राय
पीजीटी हिन्दी एवं राजभाषा प्रभारी, केन्द्रीय विद्यालय, गाजीपुर

यूनियन धारा के दिसंबर -2024 अंक एनपीए विशेषांक पढ़ने का अवसर मिला । यूनियन बैंक की यह द्विभाषिक गृह पत्रिका अति ज्ञानवर्द्धक व विभिन्न पहलुओं को अपने अंदर समेटे हुए है । इस पत्रिका में एनपीए तथा रिकवरी विभिन्न लेख जैसे वार्ता कौशल पर प्रभाव, सरफेसी, एसएमए तथा एनपीए से संबंधित कानून व तकनीकी पर कई सारे सारगर्भित आलेख है, जिसे पढ़कर इन पहलुओं पर हमें सटीक जानकारी मिलती है । साथ ही देश भर में विस्तृत यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के कार्यालयों में आयोजित गतिविधियों की प्रमुख तस्वीरें इस पत्रिका को और भी अधिक आकर्षक बनाती है । पत्रिका प्रकाशित करने के लिए "यूनियन धारा टीम" को हार्दिक बधाई व इसके अगले अंक के लिए आप सभी को शुभकामनाएँ ।

डॉ. पी बालामुरुगन
मुख्य प्रबंधक व सदस्य सचिव, नराकास, आणंद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित द्विभाषिक पत्रिका यूनियन धारा के "एनपीए प्रबंधन एवं वसूली विशेषांक प्रेषण करने हेतु हार्दिक आभार! बैंकों के लिए अनर्जक आस्तियों की वसूली हमेशा से ही एक चुनौती पूर्ण कार्य रहा है। साथ ही, हर तिमाही में स्लीपेज को रोकने के लिए जद्दोजहद करना, बैंकरों का एक मुख्य कार्य बन गया है। सभी बैंक अपने पास उपलब्ध रिकवरी टूल्स का उपयोग कर एवं मौजूदा नियामक दिशानिर्देशों के अनुसार निरंतर एनपीए कम करने के लिए प्रयासरत है। सबसे पहले आपको इस महती विषय पर विशेषांक प्रकाशित करने की आपके टीम के प्रयास को साधुवाद देना चाहूँगा। पत्रिका में सम्मिलित आलेख 'एनपीए वसूली में वार्ता कौशल की भूमिका' काफी रोचक है, निस्संदेह वार्ता से हर समस्या का समाधान होता है। तकनीकी एवं सूचनाप्रद विषयों यानी 'सरफेसी: वसूली का रामबाण उपाय', 'एनपीए प्रबंधन के लिए बाहरी एजेंसियों की भूमिका', Role of NPA recovery in Bank's Profitability', 'Bad Bank and NARCL' आदि के समावेशन से यह अंक काफी पठनीय एवं संग्रहणीय बन गया है। पत्रिका में प्रस्तुत समस्त रचनाएं बहुत ही रुचिकर एवं समसामयिक है।

पत्रिका के निर्माण में संपादक मण्डल एवं राजभाषा विभाग का अथक परिश्रम दिखाई पड़ रहा है। वास्तव में 'यूनियन धारा' पत्रिका गागर में सागर है, जो सीमितता में भी असीमित ज्ञान को आलोकित कर पठनीय एवं ज्ञानवर्धक सामग्री तथा सुंदर प्रस्तुति से अपनी ओर आकर्षित कर रही है। यूनियन धारा के निरवरत प्रकाशन हेतु हमारी कोटिशः शुभकामनाएँ.....

नितेश कुमार सिन्हा
महा प्रबंधक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक

एनपीए प्रबंधन एवं वसूली विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु सर्वप्रथम संपादक मंडल को बधाई. कार्मिकों के भीतर एनपीए को लेकर जागरूकता बढ़ाने के सिलसिले में यह अंक निश्चित रूप से काफी कारगर सिद्ध होगा. पत्रिका को पढ़ने के बाद पाठक, वसूली के तमाम बारीकियों से अवगत हो सकेंगे. सिर्फ वसूली पर आधारित विशेषांक को प्रकाशित करना, केन्द्रीय प्रबंधन की एनपीए के प्रति गंभीरता को उद्घाटित करता है. एक अच्छे बैंकर के अंदर कुशल एनपीए प्रबंधन का गुण अवश्य होना चाहिए. लेखों को पढ़कर मैं स्वयं भी वसूली के नवाचारों और तकनीकों से अवगत हुआ हूँ मेरी मालूमात में इज़ाफ़ा हुआ है. 'एनपीए प्रबंधन के लिए बाहरी एजेंसियों का प्रभावी उपयोग' जैसे लेख हमें वसूली में नए प्रयोग करने की सलाह देते हैं. 'हमें गर्व है - शहीद द्वीप' नामक लेख को पढ़कर द्वीप के इतिहास से मेरा परिचय हुआ. बहरहाल 'धारा' एक संतुलित पत्रिका का हक अदा करती हुई अपनी प्रभावशाली पत्रिका होने की बात को दोहरा देती है और अपने ज्ञान संचरण के मज़ीद कार्य को अपने कांधों पर लिए हुए आगे बढ़ते जाती है. आगामी अंको हेतु संपादक मंडल को शुभकामनांए.

सतीश कुमार एम.
क्षेत्र प्रमुख, तृश्शूर

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर का निरीक्षण दि. 04.03.2025

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप- समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब के कर कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री सारंग अ. झंझाड़, क्षेत्र प्रमुख, उदयपुर. साथ हैं श्री चन्द्र मोहन मिनोचा, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री विपिन कुमार शुक्ला, अंचल प्रमुख, जयपुर, श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.), सुश्री कविता श्रीवास्तव, उप अंचल प्रमुख जयपुर, श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.), सुश्री सोनिया चौधरी, प्रबंधक (रा.भा.), श्री दीपक कुमार वर्मा, प्रबंधक (रा.भा.).

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा अंचल कार्यालय, जयपुर का निरीक्षण दि. 06.03.2025

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप- समिति के संयोजक श्री श्रीरंग आप्पा बारणे के कर कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री विपिन कुमार शुक्ला, अंचल प्रमुख, जयपुर. साथ हैं श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.), सुश्री कविता श्रीवास्तव, उप अंचल प्रमुख, जयपुर, श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) एवं सुश्री सोनिया चौधरी, प्रबंधक (रा.भा.).

Union Dhara, R.N.27989/76

तेजस्विनी नदी, केरल
अर्जित शुक्ला
अज्जनहल्ली शाखा, क्षे.का., मैसूर

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at M/s. Printrade Issues (INDIA) Pvt. Ltd., Plot No. EL-179, TTC Industrial Area, Electronic Zone, Mahape, Dist. Thane - 400 710, Maharashtra and Published from Union Bank of India, Union Bank Bhawan, 239, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Gayathri Ravi Kiran.